प्रिय श्वेता

卐 जय सत्गुरू की 卐

卐 जय सत्गुरू की 卐

卐 जय सत्गुरू की 卐

卐 जय सत्गुरू की 卐

卐 जय सत्गुरू की 卐

卐 जय सत्गुरू की 卐

卐 जय सत्गुरू की 卐

卐 जय सत्गुरू की 卐

मुद्रक : एस.एस. प्रिंटर्स
37, केन्ट रोड़, लखनऊ
मो.: 9936908518

जय गुरू की

दो शब्द

जय गुरूवे नमः

गुरू के प्रिय भक्तो से नम्र निवेदन है कि समय समय पर भक्तो के अनमोल भावों के अमृत भजनों का कई संकलन अब तक छप चुका है। जिसका रसपान सभी भक्त प्यार और श्रद्धा से करते रहे हे और चरम अवस्था में पहुँच कर प्रभु के एकाकार की मदहोशी में डूब जाते है वो आनन्द उसकी प्राप्ति उसका बल को समर्पित भक्त के अलावा कौन व्यक्त कर सकता है।

पुनः ये संकलन गुरू प्रेरणा से एक प्रयास है कृपया संकलन में कहीं त्रुटिया देखे तो मानव भूल समझ कर क्षमा करेंगे

आपकी गुरू दीदी

भाव का भूखा हूँ मैं बस भाव हीं इक सार है
भाव से मुझको भजे जो भव से बेड़ा पार है।

1. अन्न धन और वस्त्राभूषण कुछ न मुझको चाहिये
आप हो जाएँ मेरा बस वहीं मेरा सत्कार है।

2. भाव बिन सूनीं पुकारे मैं कभीं सुनता नहीं
भाव वाले भक्त हीं करते मुझे लाचार है।

3. भाव बिन सब कुछ दे डालो तो भीं मैं लेता नहीं
भाव से इक फूल भीं दे दो तो मुझे स्वीकार है

4. जो भीं मुझमे भाव रखकर मेरी लेता है शरण जीं
उसके और मेरे हृदय का एक रहता तार है।

5. भाव जिस जन में नहीं उसकी मुझे चिंता नहीं
भाव वाले भक्त का भरपूर मुझे पर भार है।

6. बाँध लेते भक्त मुझको भाव की जंजीर से
इसलिए इस भूमि पर होता मेरा अवतार है।

विषय सूची

अ

अपनीं रहत का तू भगवान जो इशारा कर दे 1
अगर श्याम सूरत दिखाई न होती 1
अपेन गुनाहों की क्षमा मांगते है। 2
अरे मन बात सुन मेरे गुरू से सींख तो लेले 3
अपना चंदा सा मुखड़ा दिखाये जो 4
अरीं वृषभान कीं ललीं 5
अब तो श्रीं मुख से गोबिन्द नाम बोलो रे 5
अजब दोस्ताना है मेरा गुरू से 6
अब मोहे राम भरोसा तेरा 7
अब मेरीं राखो लाज हरिं 8

आ

आरतीं गुरू गोदावरीं जीं कीं 8
आओ, आओ मेरे गुरूदेव आ जाओ 9
आये तेरे द्वार नमस्कार नमस्कार 10
आज सब मिल दुआ ये करो साथियों 11
आये गुरू के द्वारे होके हम मत वाले 12
आज बिरज मो होलीं रे रसिया 13
आई रे आई रे होलीं आई रे होलीं 14
आया शरण ठोकरे जग कीं खाके 15
आनन्द रूप भगवान किं भाँतिं तुझको 15
आँखे हमारीं धन्य हुई दीदार मिल गया 16
आपकीं नजरों ने समझा प्यार के काबिल 17

अच्छे कर्मो के रीश कोई 240
अगर दिल गुरू से लगाया न होता 241
अनन्द खजाना मैं तो गुरु जी 242

इ

इस योग्य हम कहाँ है गुरूवर तुम्हें रिझाये 18
इतने उलझे जग में गुरू जी भूल गये है। 19
इतनी पीला सतगुरू 243
इस लायक मैं नहीं था 243
इश्क इबादत हो गया तेरा 244

उ

उलझ मत दिल बहारों से 19
उठ नाम सिमर मत सोये रहो 20

ऊ

ऊपर गगन विशाल नीचे गहरा पाताल 20
ऊँ मंगलम हरि ऊँ मंगलम 21

ए

एहसान कुल जहाब पे तुम्हारा है सतगुरू 22
एक अरज अब मेरी भी बाबके बिहारी 23
एक तू हीं है आधार एक तू हीं है आधार 24
एक इंशा को इंशा 24

ऐ

ऐरी सखी नारी बनाओ 25
ऐ मेरे प्यारे गुरू जी ऐ मेरे अपनु गुरूजी 26
ऐसी कमाई कर लो जो संग जा सके 26
ऐसी निगाह बना दे 27
ऐसी पिलाई साकी कुर्बान 245
ऐसी पिलादे साकी बनजायें तू हमारा 246

ओ

ओम् जय श्री गुरू देवा स्वामी जय श्री गुरू देवा 28
ओ शंख बजे शहनाई रे 29
ओ सतगुरू मेरे मोपे करियो कृपा की नजरे 30

क

क्या भरोसा है इस जिन्दगी का 30
करू शुकराना शुकराना शुकराना 31
कौन कहता है कि दीदार नहीं होता है 32
कर न फकीरी फिर क्या दिलगीरि 33
किस्मत लिखने वाले करतार यही लिखना 34
कृपा करो दर तुम्हारा न भूले 35
कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे 36
कन्हैया झूले पलना, नेक होले झोटा दीजे 37
कौन सी रे भार दियो री टोना 38
कोई समझे भक्त सुजान 39
कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी 40
कृष्ण गाविन्द गोपाल गाते चलो 41
कन्हैया ने एक रोज रोकर पुकारा 42
कभी भस्मों के वस्त्र है कभी मुण्ड़ों की माला है 43
कुछ न बिगड़े गा तेरा 247

ख

खुशियाँ ही खुशियाँ हैं आज रौरके बहारें हैं 43

ग

गुरू आज्ञा में जीवन बिताना ही तो भक्ति है 44
गाये जो गाये जा गाये जा गुरू शुकराना 45
गुरू तेरे भरोसे तेरा परिवार है 46
गोपियों चलो गोकुल नगरिया चैन सुखके 47
गुरूवर मेरे दया करो तुम बिन हमारा कौन है 48
गुरू की प्रीति ही कुछ ऐसी है। 48
गुरू के भजन में हो जा रे दीवाना 49
गुरू मेरी पूजा गुरू गोविन्दा गुरू मेरा पार ब्रहम 50
गुरूवर को जय गुरूवर की जय गुरूवर की जय बोलो 51
गुरू की दुवारी संजी लगती प्यारी प्यारी 52
गुरूवर हमारे है हमें जान से प्यारे है। 53
गुरूवर का दीवाना जो एक बार हुआ 54
गुणगान करेगे हाँ जी हाँजी 55
गुरूजी हमारे दिन से पूछो तुमको कितना 56
गुरू पर्व सुहाना आया मेरे मन में बड़ा हर्षाया 57
गुरू की हर बात निराली है। 57
गुरू ने चरणों में मुझको स्वीकार किया है। 58
गिरधर मेरे मौसम आया 59
गुरू ऐसा बसो मेरे मन में 60
गुरू पर है मेरे महान 61
गुरूदेव तुम्हारे चरणों में हम तुम्हें रिझाने आये है। 62
गुरू देव तुम्हारी लीला जो जब मन मोहित करने 62
गुरु की समाधि में झुकालो ये सर 63
गुरुशरण जो आयेगा नाम खजाना पायेगा 64
गुरु का नाम हमारा जीवन हो 247
गुरु कर कृपा दो ऐसी 249
गुरु प्रेम का प्याला 249
गुरु तेरी लीला कभी समझ न 250

घ

घुघट के पट खोल रे 65
घर घर में हो पूजा जिनकी 65

च

चरणों में तेरे रहकर भगवन 66
चली जा रहीं हैं अनमोल 251

छ

छोड़कर संसार जब तू जायेगा 67

ज

जब से मिल गइल गुरू जी हमार 68
जलसा है गुरू नाम का मस्ताना दोस्तो 69
जग के तुम प्राण आधार हो 70
जैसे सूरज की गर्मी से जलते हुए 71
जिन्दगी में सदा मुस्कुराते रहो 72
जगत के रंग क्या देखे तेरा दीदार काफी है 73

जय बोलो सब मिल आओ गुरू के चरणों 73
जिसके सर पर हाथ हो तेरा वो कैसे दुख पाये 74
जो दिल को तसल्ली दे गुरू बिन कोई और नहीं 75
जहाँ देखूँ जिधर देखू 76
जय श्री गुरूवर 76–77
जग दर पर तुम्हारे अधमो का ठिकाना है ..... 78.
जीवन की रूलाती घड़ियों में 78
जीना है तो जहाँ में गुरूजी का ज्ञान पाके 79
जागो रे सभी अब भाई मेरे 80
जब से गुरूजी तेरा नाम लिया है 81
जे तू न फरदा साड़ी बाँह 82
जय कारे जय कारे लगाते रहो 83
जग में सुन्दर है दो नाम 111
जगत में चिन्ता मिटी 152
जिसने तुम्हारी याद को 253
जो अर्जी लगे गुरुद्वार 254
जिसने जानी गुरु की माया 255
जिनका गुरु जी के चरणों में 256

झ

झूम झूम के नाचो आज 112

त

तेरा नाम गुणों की खान किरपा कीजो 83
तेरे चरणों में आके गुरु जी जिन्दगी 84
तूने खूब रचा भगवान खिलौना माटी का 85
तेरी शरण में जो आ गया 86
तेरा किसने किया श्रृंगार साँवरे 87
तेरे हवाले मेरी गाड़ी तू जाने तेरा 88
तेरी महिमा का सतगुरू जी 89
तेरे प्रेमी दीवानों का दरबार 90
तेरा मीठा–मीठा नाम मुझको दो जहाँ से 90
तेरी किस्मत में जो लिखा है 91
तोहरे ही नमवा के चढल बा खुमारी 92
तेरा जीवन है बेकार हरि नाम बिना 93
तेरे कदमों में प्रभु सर ये झुका जाता है 94
तुम्हीं मेरी जिन्दगी तू ही आधार है। 94
तूने मेरे सतगुरू सब कुछ दिया है। 95
तेरी तसवीर में सतगुरू अजब तासीर 96
तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊँ 97
तेरा मयखाना साकी सलामत रहे 97
तेरे पूजन को भगवान बना मन मन्दिर 98
तूने मूर्ति कहा मैं मूर्ति वान था 257

थ

थोड़ा ध्यान लगा, थोड़ा ध्यान लगा 99

द

दिल में गुरू जी आप हो कोई और न रहे 100
दो बोल मीठे बोल के सुख सबको 100
दया में अपने भक्तो का सदा उद्धार 101
दया करो तो अभी ही कर दो 102

दरश कर न चले आना गुरू की सवारी 103
दिल एक मन्दिर है आनन्द अन्दर 104
दीदार से ऐ सद्‌गुरु हुआ 105
दशा मुझ दीन की भगवन सम्भालोगे 106
दातार तेरे दर से बस ये ही दुआ मांगे 106
दर आये है आये सब खुशिया मनाने को 107
दुनिया में जाने कितनी पूजा का मान है 108
दानी मेरे है गुरू खुला दान का द्वार 109
देखो भिखारी आया गुरूवर तेरी गली में 110
दिल में बैठा राम रमय्या 258

ध

धीरज रख लारे रहमत की 113
धूल मिल जाये गुरु तेरे 260

न

नाम भगवान को जो दिल से लिया करते है 113
नमस्कार भगवान तुम्हें भक्तों का 114
नजरों को पाके आपकी जन्नत मुझे मिली 115
नर तन है कितना प्यारा मिलता नहीं दुबारा 116
निर्बल के प्राण पुकार रहे जगदीश हरे 116
न ये तेरा न ये मेरा मंदिर है भगवान का 117
नाम गुरुदेव का दिल के जख्म को भरता है 118
न कोई क्रिया कर्म कराया न कोई कर्म काण्ड किया 118
नूर जब बरसेगा तेरा कोई खाली न जायेगा 119
नटवर नागर नन्दा भजो रे मन गोबिन्दा 120

नहीं मिलेंगे नहीं मिलेंगे प्रेम बिना प्रभु 121
ना जाने इन्हें हम क्या समझे 121
नित गिरधर के गुण गा गा के 122
निर्मल मन के दर्पण में 185
नये शाल की खुशियाँ 261
नाम लिया जाये शुभ काम 262
ना कज़रे की धार न 263

प

प्रीत गुरू से लगाये बैठे है 123
प्रीत गुरू से कर ले मनवा 124
परमेश्वर को न भुलाना 125
प्रभु ऐसा करो अब यतन 126
पतझड़ न फिज़ा है न तो .... 1[illegible]

फ

फूलों में सज रहे है। 128
फाग खेलन बरसाने आयें हैं 129

ब

बड़ा संबल हमें है तुम्हारा प्रभु 130
बरसा दाता सुख बरसा 131
बे सहारों का तू सहारा है 131
ब्रज के नन्द लाला राधा के सावरिया 132
बलवानों के पास है ताकत 133
बाँके बिहारी कजरारे मोटे मोटे तेरे नैन 134
बाँके बिहारी की देख छटा 135

बासुरिया कहाँ भूल आये कृष्ण कन्हाई 136
ब्रज में आज आनन्द भयो 137
बोलो भक्तो के भावों को कैसे 138
बात समझ में आई अब हमारी 264
बड़ा दुख पाया गुरु चरणों को छोड़ कर 265
बरसे कितना सुन्दर रस 266

भ

भज ले नाम सुख धाम 139
भरोसा कर तू ईश्वर का मुझे धोखा 140
भक्ति की शक्ति को दुनिया न समझ 140
भिक्षा दे दो मैय्या पिंगला 141
भरो खुशियों से भरो खुसियों से 142
भवसागर से तारे गुरू तेरो वचना 143
भक्तो के लिए आप ने क्या-क्या 144
भजो नारायण भजो गोपाल 145
भगवान मेरा सहारा तेरे सिवा नहीं है। 146
भज ले हरि को एक दिन तो है जाना 268

म

मेरे दिल की भक्ति को गुरू जी समझते है 146
मेरी जिन्दगी में क्या था तेरे मिलन के पहले 147
मन लागा गुरू चरनन में 148
मेरा सतगुरू लखदातार अब मैं क्या माँगू 149
मेरा उद्देश्य हो प्रभु आज्ञा को तेरी पालना 149
मेरे सतगुरू जी का प्यार अजब निराला है। 150
मेरे सिर पर रख दो गुरू जी अपने ये 150
मेरा नाथ तू है मेरा नाथ तू है 151
मेरे बाँके बिहारी सावरियां तेरा जलवा 152
मैं तो कहूँ बजा के ढोल सतगुरू मेरा है। 153
मेरे जर्जर है पाँव संभालो प्रभु 154
मुझे गरज न और जमाने की 155
मुझको खजाना नाम का है 155
मंत्र दीक्षा मुझे जब से गुरूवर ने 156
मेरी एक ही तमन्ना ऐ सतगुरू पियारे 157
मुझे तुम मिल गये सतगुरू खुदा से 157
मिल गई सतगुरू कृपा से मिल गई 158
महा मंत्र है ये जपाकर जपाकर 159
मानव तू अगर चाहे दुनिया झुका 161
मेरे सतगुरू के सतसंग में जरा एक बार 162
मीठे रस से भरो राधे रानी 163
मुझे चरणों से लगा ले मरे श्याम मुरली 164
मुरलीधर की बजी मुरलिया 164
मुझे रास आ गया तेरे 165
मेरे गुरूदेव पिया 166
महिमा करूँ मैं गुरू की 167
मेरो सतगुरू कन्हइया-2 168
मिल जाये जो तेरा सहारा 169
मेरी रखियो लाज गुरू जी 170
मेरी बन जायेगी गुरू गुन 170

मेरी दुनिया हीं है तेरे आँचल में 171
मैं राम नाम की चूड़ियाँ पहनूँ 172
मेरी आँस यही है हे भगवन तुम्हें 173
मेरी आँखों में वहीं दिलदार है 173
मुझे भगवान वह दिल दे 174
मेरी जुँबा से निकले गुरु गुय 175
मुझ गुनहगार का ऐ मेरे साँवरे 176
मेरी छोटी सी है नाव 177
मेरे गुरुवर हजारों नमन आप को 269
मेरा रूठे न सतगुरु प्यारा 270
मैने झोली फैला दी है सतगुरु 271
मेरे सतगुरु ने ऐसा करम कर दिया 272

य

यूँ नजर आपकी हम पर पड़ती रहे 179
यदि मेरी शरण पाने का हमें सौभाग्य 180
ये तो सच है कि भगवान है 273

र

रंगो रे रंगी रे तेरे नाम की 181
रब नहीं बसदा दूर अखिंया 182
रब मेरा सतगुरू बन कर आया 182
राम जी के नाम ने तो पत्थर भी 183
रंग में होली कैसे खेलूंगी 184
राम नाम के साबुन से जो 184

ल

लखनऊ नगर है मेरे गुरू की नगरिया 185
लीला लगी है राम भजन वाली जय हो 186
ले लो गुरू का नाम बिगड़े बन जायेगे 187
लोकाँ नुँ सहारे बड़े होनगे 188
लगता है दिल मेरा तेरे ही द्वार में 189
लगी वृन्दावन में एक दिन अदालत 190
लुटाये रहे गुरु जी राम नाम धनवाँ 274
लुटा लिया भण्डार सतगुरु प्यारे ने 275

व

वैध बनके गोकुल से कान्हा चले 191
वाहे गुरू वाहे गुरू कर बंदया 192
वैसे तो नशे अनेक हैं 192
वो छलिया नन्द मोरी जोगनिया 193
VIP गुरूजी आये देखो 194

श

शुकराना गाये दिल घड़ी घड़ी आपका 195
श्याम सुन्दर अब तो हम आंशिक 196
शुकराना करने आये है 196
श्वास श्वास में सिमरूँ तुमको 197
श्वासा दी माला नाल सिमराँ मैं 198
शुक्रिया शुक्रिया संतसंग जो अपना 199
शरण में आये है हम तुम्हारी 200

स

सतगुरू मेरा दीन दयाला सबसे 202
सतगुरू मेरे दे दो वरदान 202

सतगुरू,सतगुरू,सतगुरू,सतगुरू 203
संसार है स्वारथ की रचना 204
सुबह को बचपन हंसते देखा 206
सागर से भी ऊँचा गहरा गुरूदेव 206
सतगुरू के दरबार में देखो लगे 207
सभी देवता देते है भई 208
सेवा करूंगी तेरी साँझ सवेरे 208
सतगुरू की रहमत को जो लोग 210
सुन जा ओ जाने वाले सुन जा 210
सच्ची लगन हो तब हीं गुरूधाम 211
सुन के करूण पुकार 212
सुन मेरी मइया मैं पड़ूँ तोरे पइया 213
संग भक्ति के है हर खुशी 214
सतगुय प्रेम बिना नहीं मिलते 215
सेवा में मेरे सतगुरू तन मन धन 216
सतगुरू यह करम फरमाये 217
सच्चिदानन्द तू ब्रह्मा नन्द है तू 218
सतगुरू हे डाक्टर इनके बा दवाई 219
सतगुय के मन भावन सुरतिया 220
सुन बरसाने वाली गुलाम मेरो 221
सतगुरू मैं तेरी पतंग 222
सतसंग करने आये गुरू के दरबार 225
सब खुशियाँ आती हैं 276
सतगुरू तेरे होगये हम 276
सतगुरू सतसंग देता है 277
सतगुरू ही सार है 278
सुख भरण प्रभु नारायण है 279
सारी दुनिया छोड़ के आयों तेरे 280

ह

हमारे है श्री गुरूदेव हमें किस बात 226
हे मेरे सतगुरू प्रणाम बार-बार 227
हमें गुरू देव तेरा सहारा न मिलता 228
हरि ऊँ हरि ऊँ बोलिये पलको के 229
हम तुम्हें प्यार गुरूवर करेगे 229
है प्रीत जहाँ की रीत सदा 230
हे गुरू तुमको नमन तुमने दी 231
है प्रेम जगत में सार और कोई सार 232
हमारे गुरू पूरण ज्ञानी मिले 233
हजारो नाम है तेरे 234
हर सुबह होती है 235
होली खेल रहे नन्दलाल 236
हम तुम्हारे थे गुरूजी 236
हम हाथ उठाकर कहते है 237
हम परदेशी फकीर कोई दिन 238
हजारो शुकराने है गुरू के 239
हमकों जो यारों गुरुवर न मिलते 281
हरि ओम हरि ओम कहिये 283

1

अपनी रहमत का भगवान जो इशारा कर दे
जैसा तू चाहे जीवन हमारा कर दे

1. मुस्कराये जो तेरी आँख तो बाहर आये
खाक जर्रे को तू चाहे तो सितारा कर दे

2. जिसको तेरे पे भरोसा है उसको डर किसका
तू चाहे तो तूफ़ा को किनारा कर दे

3. लाखों सूरज भी चढ़ आये तो अंधेरा न मिटा
हर तरफ रोशनी हो गर तू जो इशारा कर दे

4. कहने वालों की जुबानों में अदाब जुदा
कह दे एक बार प्रभु आनन्द नजारा कर दे

2

अगर श्याम सूरत दिखाई न होती
हमें भी तेरी याद आई न होती

1. आज हमें याद आया गुजरा जमाना
सुदामा को तूने गले से लगाया
अगर दोस्ती तूने निभाई न होती
हमें भी तेरी याद आई

2. जमुना किनारे गैय्या चराना
गैय्या चराना श्याम बंशी बजाना
अगर तूने बंशी बजाई न होती
हमें भी तेरी याद आई.....

3. उगंली पे अपने सुर्दशन उठाना
मधुबन में आके रास रचाना
अगर तूने रास ये रचाई न होती
हमें भी तेरी याद आई .....

4. हरी-हर हरी-हर पुकारा करेगें
तेरा नाम लेकर गुजारा करेंगे
अगर तूने बिगड़ी बनाई न होती
हमें भी तेरी याद आई.....

3

अपने गुनाहों की क्षमा माँगते है
दयालू गुरू से हम दया माँगते है

1. कोई नहीं मुझसा अधमी और पापी-2
सत्कर्म करने की शक्ति चाहते है

2. किया मैने जीवन में अपराध भारी-2

हदय से अपने हम क्षमा माँगते है

3. श्वास–श्वास में हो सुमिरन तुम्हारा–2
ऐसा हीं साधन भजन चाहते है
तुम्हारे चरण की हम शरण चाहते है

4

तर्ज–भला कैसा सुहाना दिन

अरे मन बात सुन मेरी गुरू से सीख तो लेले
गुरू आये इसी कारण तू निज उद्धार अब कर ले

1. ये जीवन जलती ज्वाला है ताप लगते ही रहते है
ताप लगने नहीं पायेगें गुरू अमृत वचन पीले

2. जगत के इस बवंडर में संभलना है बहुत मुश्किल
संभलने की कला गुरूवर सिखाये सीख अब तो ले

3. गुरू बिन मिट न पायेगा अंधेरा तेरे जीवन का
अंधेरा गर मिटाना हो तो उससे दीप जलवाले

4. दीप हीं है गुरू का ज्ञान अंधेरा है तेरा अज्ञान
समर्पित कर गुरू चरणों में जीवन ज्ञान तू लेले

5. बहार आयेगी जीवन में चमन बन जायेगा जीवन
चमन माटी गुरू है भूमि जीवन की उसे दे दे

6. गुरू बंजर से बंजर भूमि में गुल को खिलाते है
न कर चिंता न कर संशय तू हो निश्चिन्त अब जी ले

5

अपना चंदा सा मुखड़ा दिखाये जा ओ–2
मोर मुकुट वाले घुँघराले लट वाले–2

1. तो बिन मोहन चैन पडे न
नैनों से उलझाये नैना–2 ओ मेरी अँखियन बीच समाये जा..मोर

2. बेदर्दी तोहे दर्द न आवे काहे जले पे नोन लगावे–2
ओ आजा प्रीत की रीत निभाये जा ..... मो मुकुट वाले

3. बाँसुरी अधरन धर मुस्कावे , घायल कर क्यों नैन चुरावे–2
ओ आजा श्याम पिया आये जा–2 मोर मुकुट वाले

4. काहे तो संग प्रीत लगाई , निष्ठुर निकलो तू हरजाई–2
ओ लागा प्रीत का रोग मिटाये जा –2 मोर मुकुट वाले

5. टेड़ी तेरी लुकुटी कमरिया , टेड़ो तू चित चोर सांवारिया–2
ओ टेड़ी नजरों के तीर चलाये जा–2 मो मुकुट वाले .....

6. काँधे पे तोरी कारी कावारिया , अलके है जैसे काली बदरिया–2
ओ कान्हा प्रेम सुधा बरसाये जा .....मोर मुकुट वाले

6

अरी वृषमान की लली साँवरिया से नेह लगाय के चली

1. अइयो रे अहीर के तू मेरी गली–2
चन्दन छिरकोंगी लाला तेरी पगड़ी–2 अरी वृषभान

2. छोटी–छोटी भटुकी दही दूध सो भरी–2
ठाड़े रहियो लाल जी में कबकी खड़ी.....

3. हाथन में गजरा गुलाब की छड़ी–2
रंग महल में श्री राधा जू खड़ी

4. नहनो नहनो कजरा मुख भरयों है पान
वारी सी उमरिया राधे ऐसो गुमान–2

5. वृन्दावन की कुंजन में रास विलास–2
ये ही ध्वनि गावै मारो नन्द कुमार.....

7

अब तो श्री मुख से , गोविन्द नाम बोल रे
अब तो श्री मुख से , प्रभु को नाम बोल रे

1. छः बजे छबीले राम सात बजे सुन्दर श्याम
आठ बजे आठो नाम जपत रहो रे

2. नौ बजे नारायण दस बजे दामोदर नाथ

ग्याराह बजे गिरधारी लाल जपत रहो रे

3. बारह बजे बनवारी लाल एक बजे हरि ॐ
दो बजे श्री द्वारिका नाथ जपत रहो रे

4. तीन बजे त्रिलोकी नाथ चार बजे चारो धाम
पाँच बजे परमेश्वर नाम जपत रहो रे

5. दीन बन्धु दीना नाथ सुन लो हमारी बात
श्वास–श्वास में युग का नाम जपत रहो रे

8

अजब दोस्ताना है मेरा गुरू से
जो वादा किया वो निभाना ही होगा

1. गुरू जी के वचनों को मानेगें हम तो
इसी राह पर हमको जाना ही होगा

2. तेरा प्यार मुझको समेटे हुए है
तुम्हे मेरे दिल में आना ही होगा

3. भरा है मेरे अन्दर समुन्दर
मुझे इसमें गोता लगाना ही होगा

4. तेरी महिमा मुख से कैसे करूँ मै
मुझे अब सक्षम बनाना ही होगा

5. मेरी जिन्दगी की तमन्ना तुम्हीं हो
अपने जैसा बनाना हीं होगा

6. मेरी जिन्दगी की तुम्हीं बन्दगी हो
मुझे अपने दर्शन कराना हीं होगा
अजब दोस्ताना है मेरा गुरू से
जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा

9

अब मोहे राम भरोसा तेरा
अब मोहे मालिक भरोसा तेरा
अब मोहे समगुरू भरोसा तेरा

1. अमर महारस नाम जानकर
मुग्ध हुआ मन मेरा
अब मोहे राम

2. दीपक ज्ञान जला जब भीतर
मिटा अज्ञान अंधेरा
अब मोहे राम

3. निशा निराशा दूर हुई जब
आई शांति सबेरा

अब मोहे राम.....

10

अब मोरी राखो लाज हरी

1. सब जानत हो अंर्तयामी
करनी कहु न करी

2. औगुन मोसे बिसरत नाही
पल-छिन घरी-घरी अब मोरी.....

3. सब पापन की पोट बाँध कर
अपने शीश धरी - अब मोरी .....

4. दारा सुत धन सब मोहि लियो है
सुधि बधि सब बिसरी - अब मोरी

5. सर पतित को बेगि उबारो
अब मेरी नाव तरी अब मोरी .....

11

आरती गुरू गोदावरी जी की
जय-जय गुरू गोदावरी जी की

1. मन के सिंघासन पर राजित
रूप है जिनका बड़ा अलौकिक

जय महान गोदावरी जी की

2. भाल पे कुमकुम टीका शोभित
अंग में पीताम्बर है सुशोभित
जय महान गोदावरी जी की

3. कर में ज्ञान चक्र है साजे
उर वैजन्ती माला साजे
जय–जय गुरू गोदावरी जी की

4. मन को मार किया है निर्मल
ज्ञान से भर डाला है आँचल
जय ज्ञानी गोदावरी जी की

5. भूत विकार के नाशन हारे
प्रेम भक्ति उपजावन वाले
जय–जय गुरू गोदावरी जी की

12

आओ–आओ मेरे गुरूदेव आ जाओ

1. आ जाओ –आ जाओ आतम ज्योति जगा जाओ –2

2. आ जाओ– आ जाओ मेरे नैनो मे समा जाओ–2

3. आ जाओ–आ जाओ अपनी महिमा दिखा जाओ–2

4. आ जाओ–आ जाओ अपनी पूजा करा जाओ–2

5. आ जाओ–आ जाओ तुम दर्श दिखा जाओ–2

6. आ जाओ–आ जाओ तुम भाग लगा जाओ–2

7. आ जाओ–आ जाओ मेरी बिगड़ी बना जाओ–2

8. आ जाओ–आ जाओ मेरा मान बढ़ा जाओ–2

9. आ जाओ–आ जाओ आके कभी नहीं जाओ–2

10. आ जाओ –आ जाओ मेरे जियरा में समा जाओ–2

13

आये तेरे द्वार नमस्कार–नमस्कार
मंगलमयी प्रभु हम आये तेरे द्वार
सब जग के आधार नमस्कार–नमस्कार

1. सूरज और चाँद में तेरा ही उजाला है
तूने पहन रखी सितारों की माला है
सब जग के आधार नमस्कार–नमस्कार

2. पर्वतों की चोटियों को बादल है चूमते
बिजली सूरज चाँद सितारे गा रहे है झूमते
नियम के अनुसार नमस्कार–नमस्कार

3. कोयल की कुहू-कुहू सब के मन को भा रही
शीतल मंद पवन तेरा गीत मधुर गा रही
जपत रहो सौ बार नमस्कार-नमस्कार

4. मानुष तन को कितना सुन्दर बनाया है
मन बुद्धिऔर इन्द्रियों को इसमें सजाया है
अष्ट चक्र नौ द्वार नमस्कार-नमस्कार

14

आज सब मिल दुआ ये करो साथियों
प्यारे गुरूवर का जीवन सलामत रहें
उनका दीदार हरदम ही होता रहे
वो जहाँ भी रहे बस सलामत रहे

1. आसमां से भी लम्बी उमर उनकी हो
दुख उन्हें कुछ न हो कष्ट कोई न हो
उनमें बल की भी कोई कमी अब न हो
बल दिनों दिन बढ़े और बढ़ता रहे

2. प्यारे गुरूवर ने हमको बहुत है दिया
ज्ञान अमृत पिलाकर सुखी कर दिया
यूँ ही अमृत सदा वो पिलाते रहे

वो पिलाते रहे हम भी पीते रहे

3. उनकी जय-जय सभी आज मिलकर करो
गूँज जाये भवन ऐसी जय-जय करो
नित्य ये कामना मिल के करते रहो
वो सलामत रहे वो सलामत रहे

15

आये गुरू के द्वारे होके हम मतवाले
गुरूपूनों का दिन आया बोलो गुरू के जयकारे

1. आगे आगे गुरू ध्वजा है उसकी महिमा भारी-2
कैसी सुन्दर सजी दुवारी सब तेरी बलिहारी
सब सज धज के अये गुण तेरे मिल गाये
गुरू पूनों का दिन आया.....

2. दर्शन करने को सतसंगी दूर-दूर से आये
भक्ति तेरी करने को ही सतसंगी मिल आये
सब जय जयकार लगाये भक्त खुसिया मनाने
गुरूपूनो का दिन आया .....

3. भव सागर में डग-मग डोले जीवन नाव हमारी
अपना समझ के जल्दी तारो अब तो आस तिहारी

सब मिलकर द्वारे आये दर्शन तेरे अब पाये

गुरूपूनो का दिन आया .....

16

होली

आज विरज में होली रे रसिया ,

होली रे रसिया बर जोरी रे रसिया

1. कौन गाँव के कुँवर कन्हाई–2

कौन गाँव की राधा गोरी रे रसिया .....

2. नंद गाँव के कुँवर कन्हाई–2

बरसाने की राधा गोरी रे रसिया .....

3. कौन के हाथ कनक पिचकारी–2

कौन के हाथ कमोरी रे रसिया .....

4. कान्हा के हाथ कनक पिचकारी–2

राधा के हाथ कमोरी रे रसिया

5. उड़त गुलाल लाल भये बदरा–2

केसर रंग में घोरी रे रसिया

6. बाजत ताल मृदंग बाँसुरी–2

और नगारे की जोड़ी रे रसिया

7. कान्हा खेले बरसाने में होली–2

फगुआ लिऔ भर झोरी रे रसिया

8. अपने–अपने घर से निकली–2

कोई साँवर कोई गोरी रे रसिया

17

आई रे आई रे होली आई रे आई रे होली

आई भक्तों की टोली , भक्ति दिल में लिए

1. गुरू के प्यार में रंगने को आये

आये है गुरू के दिवाने –2

आई रे.....

2. होली के रंग में भक्ति का रंग देखो मिला दिया

आई बहार कलिया खिली तो जीवन सवार दिया

गुरू दर होली मन रही है

3. अबके बरस तो हम को भी होली जम के मनाना है

काटों भरे इस मन में गुरू का गुलशन खिलाना है

गुरू दर होली मन रही है

4. आँखे है लाल जैसे गुलाल झाकी विशाल

पाप भरे मन को बचाना अब तो बेकार है

गुरूदर होली मन रही है

18

आया शरण ठोकरे जग की खाके
हटुगा प्रभु तेरी कृपा दृष्टि पाके

1. पहले मगन हो सुखी नींद सोया–2
सब कुछ पाने का सपना संजोया–2
मिला तो वही जो लाया लिखा के–2

2. मान ये काया का है बस चलावा–2
रावण समानी भी बचने न पाया–2
खखुगा कहाँ में खुद को छिपा के–2

3. कर्मो की लीला बड़ी है निराली–2
हरिश्चन्द्र मरघट की करे रखवाली–2
समझ में आया सबकुछ गवा के–2

4. न है चाह कोई न है कोई इच्छा–2
अपनी दया की मुझे दे दो भिक्षा–2
जिसे सबने छोड़ा उसे तू ही तारे–2

19

आनन्द रूप भगवान किस भाँति तुमको पाऊँ

तेरे समीप स्वामी में किस तरह से आऊँ

1. अनुपम परम छबीले बिन रूप रंग रंसीले
फूलों का एक गुच्छा क्या आप पर चढ़ाऊँ

2. संसार में बटे है सातो समुद्र तेरे
पानी का एक चुल्लू क्या आप पर चढ़ाऊँ

3. करते है निज उजाला रविचन्द्र उपस्थित
माटी का एक दीपक क्या आपको दिखाऊँ

4. चरणों की तेरे दासी है लक्ष्मी सदा ही
ताँबे का एक पैसा क्या आप पर चढ़ाऊँ

20

आँखे हमारी धन्य हुयी दीदार मिल गया
चरणों का तेरे सतगुरू आधार मिल गया

1. दौलत मिली है नाम की तेरे दर पे आने से
रंगत हमारी बदल गई बंदगी कमाने से
हमारी खुशनसीबी तेरा द्वार मिल गया

2. खवाहिशे जगत की हो गई मन से मेरे खत्म
जब से लगाया आपके सुमिरन भजन में मन
संकट के आवागमन से छुटकारा मिल गया

3. मन के शिकंजे से निकल रूह हो गई आजाद
तूने सुधारा जन्मों का बिगड़ा हुआ ये काज
राही रास्ते पे चलने का अख्तियार मिल गया

4. जन्मों की आस थी लगी दीदार पाने की
और थी तमन्ना चरणों में सिर को झुकाने की
आज दासी को दरबार में अधिकार मिल गया

21

आपकी नजरों ने समझा प्यार के काबिल मुझे
दिल की ऐ धड़कन ठहरजा मिल गई मंजिल मुझे

1. जी हमें मंजूर है आपका ये फैसला
कह रही है हर नजर बन्दा परवर शुक्रिया
हँस के अपनी जिंदगी में कर लिया शामिल मुझे

2. आपकी मंजिल हूँ में मेरी मंजिल आप है
क्यों में तूफा से डरू मेरा साहिल आप है
कोई तूफानों से कह दे मिल गया साहिल मुझे

3. पड़ गई दिल पर मेरे आपकी परछाइयाँ
हर तरफ बजने लगी सैकड़ो शहनाइयाँ
दोनों जहाँ की आज खुशियाँ हो गई हासिल मुझे

आपकी नजरों ने समझा प्यार के काबिल मुझे
दिल की ऐ धड़कन ठहरजा मिल गई मंजिल मुझे

22

इस योग्य हम कहाँ है गुरूवर तुम्हे रिझाये
फिर भी मना रहे है शायद वो मान जाये

1. जब से जन्म लिया है विषयों ने हमको घेरा
छल और कपट ने डाला इस भोले पन पे डेरा
सदा बुद्धिके अहम ने हरदम रक्ख दबा के

2. निश्चय ही हम पतित है लोभी है स्वार्थी है
तेरा ध्यान जब लगाये माया पुकारती है
सुख माँगने की इच्छा कभी तृप्त हो न पाये

3. जब से जहाँ भी देखा बस एक ही चलन है
इक दूसरे के सुख में खुद को बड़ी जलन है
कर्मो का लेखा जोखा कोई समझ न पाये
अब कर्म न बढ़ाये

4. जब कुछ न कर सके तो तेरी शरण में आये
अपराध मानते है झेलेगे सब सजाये
अब ज्ञान हमको दे दो कुछ और हम न चाहे

23

इतने उलझे जग में गुरू जी भूल गये है नाम तुम्हारा
दरवाजे पर आये है तेरे सुनकर प्रभु जी नाम तुम्हारा

1. रंग रंगीली दुनिया बनाई सबके मन को बहुत है भाई
हम तो इसमें ऐसे डूबे मिलता नही है कोइ किनारा

2. माना हम तो हैं अज्ञानी की है मैने बहु मनमानी
माफकरो अब अवगुण मेरे दे दो हम को नाम का दान

3. सब की सुनी अब सुन लो हमारी आये है हम बन के भिखारी
ऐसी ज्योत जगा दो मन में दूर हो जाये सब अंधियारा

24

उलझ मत दिल बहारो में बहारों का भरोसा क्या
सहारे टूट जाते है सहारो का भरोसा क्या

1. तमन्ना ये जो तेरी है फूहारे है सावन की
फूहारे सूख जाती है फूहारों का भरोसा क्या

2. तू सम्बल नाम का लेकर किनारों से किनारा कर
किनारे टूट जाते है किनारो का भरोसा क्या

3. तू अपनी अक्लमंदी पर विचारों पर न इतरा
जो लहरो की तरह चंचल विचारो का भरोसा क्या

4. परम प्रभु की शरण लेकर विकारो से सजग रहना
कहाँ कब मन बिगड़ जाये विकारो का भरोसा क्या

25

उठ नाम सिमर मत सोये रहो मन अंत समय पछतायेगा
जब चिड़िया ने चुग खेत लिया फिर हाथ कछु नही आयेगा

1. हास विलास में बीती उमरिया बहुत गई रही थोड़ी उमरिया
जल गया दीपक बुझ गई बाती कोई न राह दिखायेगा

2. पाप बोझ से भर ली गटरिया जाना रे तुझको दूर नगरिया
जैसा करेगा वैसा भरेगा कोई न साथ निभायेगा

3. प्रभु नाम धन भर लो खजाना रहना नही देश विराना है
प्रभु के चाकर होकर चलिए प्रभु के सेवक होकर चलिये
अन्त समय भव सागर तर जायेगा

26

ऊपर गगन विशाल नीचे गहरा पाताल
बीच में धरती वाह मेरे मालिक तूने किया कमाल

1. एक फूल से रच दिया तूने सूरज अगन गोला
एक फूल से रचा चन्द्रमा लाख सितारो का टोला
तूने रच दिया पवन झकोला ये पानी ये शोला

ये बादल का उड़न खटोला जिसे देख मेरा मन डोला

2. सोच–सोच हम करे अचम्भा नजर नहीं आता एक भी खम्भा
फिर भी ये आकाश खड़ा है हुए करोड़ो साल
तूने रचा इक अद्भुत प्राणी जिसका नाम इंसान
जिसकी नन्हीं जान में भरा हुआ तूफान

3. इस जग में इंसान के दिल को कौन सका पहचान
इसमें हीं शैतान छिपा है इसमें हीं भगवान
बड़ा गजब का है ये खिलौना इसकी नहीं मिसाल
चारो तरफ एक इन्द्रजाल सा तूने रचा विधाता

4. तू हम सबके बीच बसा है फिर क्यों नजर न आता
पत्ता , पत्ता लता–लता सब ढूंढ रहा सब तेरा पता
कहाँ छुपा है ये तो बता सामने आजा अब न सता
एक बार तो झलक दिखा जा कर जा हमे निहाल

27

ऊँ मंगलम हरि ओम मंगलम
देव मंगलम् सतगुरू देव मंगलम्

1. दीन दयालू प्रभु परम कृपालू
दीनो के नाथ दीना नाथ मंगलम

2. ज्ञान के भण्डार तेरी कृपा अपार
ज्ञानियों के नाथ दीना नाथ मंगलम्

3. दुखियों के दुख हारी संतो के सुखहारी
आनन्द के धाम गुरू देव मंगलम

4. जग के रचैया ओ पार लगैया
भक्तो के पालन हार मंगलम्

5. नाम है अनेक तेरे रूप अनेक
गुरू ब्रहमा विष्णु महेश मंगलम्

6. प्रेम के सागर ज्योति के भण्डार
जीवो के जीवन आधार मंगलम्

28

एहसान कुल जहाँ पे तुम्हारा है सतगुरू
हर शै से इस जहाँ की प्यारा है सतगुरू

1. बनते बिगड़े काम तुम्हारे हीं हाथ से।
रौनक है इस जहान की तुम्हारे हीं साथ से
ये कुल जहाँ तेरा पसारा है सतगुरू हर शै.....

2. तू जैसा चाहे हमको बनाले हे सतगुरू
तू जैसा चाहे हमको नचाले हे सतगुरू

बस तेरी ही दया का सहारा है सतगुरू हर शै.....

3. तेरे चरणों में हर बार नमस्कार सतगुरू
चरणों में तेरे बहती गंगा धार सतगुरू
तू नवइया तू खिवइया किनारा है सतगुरू हर शै.....

4. कर्ता है तू हर काम को तू अंतर्यामी है
और लक्ष्य है हर सन्त का तू ही स्वामी है
हर संत का तू प्राण आधार है सतगुरू हर शै.....

5. हर आस तुझसे है मेरी अरदास है यही
हर ओर हो खुशी न दुखी जीव हो कहीं
मेरा ही हर वक्त गुजारा है सतगुरू हर शै.....

29

एक अरजमेरी भी अब बाँके बिहारी मान लो
आप ठाकुर बन चुके मुझको पुजारी मान लो

1. यूँ सुना मैने की तुम दुनिया के पालन हार हो
आप दाता हीं सही मुझको भिखारी मान लो

2. योग्य जप तप ध्यान कलियुग में न पूरा हो सका
जो हुआ दर्ज कर बाकी उधारी मान लो

3. छोड़कर संसार को तेरी शरण में आ गया

हो चुकी आपके चरणों से यारी मान लो

30

एक तू हीं है आधार सतगुरू तू हीं है आधार

1. तू ही जग तारण हारा तू हीं जग का पालन हारा
तेरी कृपा अपरम्पार तू हीं जग का सृजन हार

2. तू हीं जल में तू हीं थल में तू हीं है इस भूमण्डल में
तू बसता जन-जन में तेरा देखा रूप साकार

3. ज्ञान तेरा जो इक बार सुनता महिमा करते वा नहीं थकता
पाया हमने तेरा प्यार

4. आई हमपे विपदा जब भी टाल दिया प्रभु तूने तब हीं
निर्भय होकर भक्त ये कहता धन्य धन्य साकार

31

तर्ज- दूर कर दे जो दीन .....

एक इन्सा को इन्सा समझकर ऐ दिल
प्यार करने लगे तो भजन हो गया
ऊँचा नीचा बड़े-छोटे के भाव से
मन उबरने लगे तो भजन हो गया

1. राम कण-मण में है जर्रे जर्रे खुदा

पढ़के कहना और ऐतबार में फर्क है।

देखकर अंग सेग तू निरोकार को प्रभु

मन ये डरने लगे तो भजन हो गया

2. घर में नफरत पड़ोसी से बनती नहीं

कहते है सबसे मिलकर रहो प्या से

सीख देने से पहले बशर कर्म कर

खुद उतरने लगे तो भजन हो गया

3. माँगना है तो सबका भला मांगिये

देखना है तो अपनी कमी देखिये

छोड़ दे फिक्र सुधरेगा कैसे जहाँ

हम सुधरने लगे तो भजन हो गया।

32

ऐ री सखी नारी बनाओ नंदलाल को.....2

1. घूम घुमारो लहंगा पहनाओ-2

ऐरी सखी चुनरी उड़ाओ नंदलाल को.....

2. बड़ह-बड़ी अंखियन में नानो-2 सुरमा-2

ऐरी सखी नथनी पहनाओ नंदलाल को.....

3. नानी नान्ही लाली नान्ना-नान्ना कजरा-2

ऐरी सखी पायल पहनाओ नंदनान को.....

4. लाज शरम सब पीयर में खोई-2

ऐरी सखी घूँघट निकालो नंदलाल (घनश्याम) को .....

33

ऐ मेरे प्यारे गुरू जी

ऐ मेरे अपने गुरूजी तुझपे दिल कुर्बान-2

तू ही मेरी आरजू है तू ही मेरी आबरू तू ही मेरी जान

1. गुरू का ज्ञान बन के कभी सीने से लग जाता है तू

और कभी आतम का निश्चय बन के छा जाता है तू

कितना अच्छा सत्संग तेरा कितना अच्छा तेरा ज्ञान

तुझपे दिल कुर्बान, तुझपे दिल कुर्बान

2. तेरे फारम से जो आये उन हवाओं को सलाम

चूम लू उस जुबा को मैं जिस पे आये तेरा नाम

कितनी अच्छी सुबह तेरी कितनी अच्छी तेरी शाम

तुझपे दिल कुर्बान, तुझपे दिल कुर्बान

34

ऐसी कमाई कर लोजो संग जा सके

मुकिश्ल पड़े जो राह में वो काम आ सके

1. संसार में आतो कोई साथी नजर नहीं
बस नाम के सिवा कुछ भी अमर नहीं
बनाओ उसी को साथी जो संग जा सके
मुकिश्ल पड़े जो.....

2. पापों में सदा मन को लगाते चले गये
बदियों का सामान बढ़ाते चले गये
लेकिन कभी न धर्म को साथी बना सके
मुकिश्ल पड़े जो.....

3. दुनिया की चका चौध में जीवन बिता दिया
अनमोल रतन पाकर यूँ ही गवा दिया
मानव वही जो इसका फायदा उठा सके
मुकिश्ल पड़े जो .....

35

ऐसी निगाह बना दे तुम्हें हर जगह मैं पाऊँ
पल भर भी तू न बिसरे प्रभु गीत तेरे गाऊँ

1. तेरे नाम का ठिठोरा जग ने सुन लिया है।
कोई हार ले गया है मैने फूल चुन लिया है
इस बाग से बिछुड़ कर बाहर नहीं न जाऊँ

2. जो मुख से बोल निकले निकले तेरा तराना
मैं समझू या तू समझे समझे न ये जमाना
मुझे जग से क्या लेना प्रभु तुमको मैं रिझाऊ

3. तेरे प्रेम के नगर में मैने जिन्दगी गुजारी
तेरे नाम का है प्याला प्रभु रात दिन मैं पीता
तन मन धन है तेरा कभी ये न भूल जाँऊ

36

जय गुरू की

ओम जय श्री गुरू देवा, स्वामी जय श्री गुरू देवा
चार पदारथ दायक, चरण कमल सेवा।। ओ0

1. ब्रह्मा विष्णु महेश्वर, सब देवन रूपा।
हो पूरण परमेश्वर, जो दिन में भूपा।। ओ0

2. विधिध ताप के हारक, मन शीतल करतीं।
आनन्द मंगल दायक, पापन के हर्ता।। ओ0

3. दुख दरिद्र विनाशक, सुख सम्पत्ति दाता।
दोनो लोक सवारत, अश्रित जन त्राता। ओ0

4. भव सागर के तारक, मुक्ति के दानीं
जीवन जन्म सुधारक, शरणागत जानीं।ओ0

5. मोह विकार विदारक, ज्ञान हिए कारी
सद्गुण सकल वसावन, दुरगुण के हारी।।ओ0
6. मेरे और न कोई, मैं हूँ तेरा दासा।
सब प्रकार है हमको, पद पंकज आशा।। ओ0
7. करम वचन मन सेवक, निज भक्ति दीजै।
परम दयालू परम कृपालू, नाथ दया कीजै।।ओ0
8. मुरू मूरति की आरती, जो कोई जन गावै।
कहते है सतगुरू जी , मन वांछित फल पावे।। ओ0

37

ओशंख बजे शहनाई रे सतगुरू स्वामी मेरे
तेरे दर्शन को हम आये रे ओ..... जय हो जय हो

1. श्रद्धा सुमन का हार है लाये भजन सुनाकर सबको रिझाये
भल चुके है गम सारे अपने साकार किये तुमने सारे सपने
सतगुरू स्वामी मेरे.....
2. करते है वन्दना हम तेरे द्वार सुनते है सतगुरू करूण पुकार
करूणा सिन्धु नाम तिहारा–2 भव सागर से तून है तारा
सतगुरू स्वामी तेरे.....
3. समाधी की मिट्टी जो सर से लगाये सतगुरू उसकी किस्मत

बनाये
लम्बे करिश्मो की इसकी गाथा जोड़ ले बंदे सतगुरू से नाता
सतगुरू स्वामी मेरे.....

38

तर्ज–ओ लाल मेरे पथ रखियो
ओ सतगुरू मेरे मोपे करियो कृपा की नजरे
दयालू गुरू कृपालू गुरू–गुरू तू हीं मेरा भगवन

1. तुमसा नहीं कोई तीन लोकन में
मुझको मिला हीरा मानुष तन में–2
करियो दया मेरे सतगुरू, ओ सतगुरू मोपे करियो दया
2. सुख और दुख में सम है बनाया
मूर्ख को प्रभु ने ज्ञान कराया–2
दीजो तू ज्ञान तू दीजो ओ समगुरू मोरे मोहे मोह दीं जो तू ज्ञान
3. नाव भी तुम पतवार भी तुम हो
माझी भी तुम पतवार भी तुम हो–2
भव से तरइयो ओ सतगुरू मोरे मोहे भव तरइयो।

39

क्या भरोसा है इस जिन्दगी का

साथ देती नहीं ये किसी का

1. सांस रूक जायेगी चलते चलते
शम्मा बुझ जायेगी जलते जलते
दम निकल जायेगा आदमी का

2. ये दुनिया हकीकत पुरानी
चल के रूकना न इसकी रवानी
फर्ज पूरा करो जिन्दगी का

3. ये प्यार मोहब्बत रहेगी
दास्ता अपनी दुनिया कहेगी
नाम रह जायेगा आदमी का

4. तूने जीवन को यूँ ही गवाया
इस कारण से दुनिया में आया
नाम जप ले जरा उस प्रभु का

40

करू शुकराना शुकराना शुकराना
दिन रात करूँ तेरा शुकराना

1. याद हमको सदा उन लम्हों की है
भूल सकते नहीं एक पल के लिए
तेरे अनमोल प्यार को शुकराना
तेरा शुकराना.....

2. अपनी हर बात से अपने व्यवहार से
सीख देते रहे आप बड़े प्यार से
सब कमियों को दूर आप करते रहे
तेरा शुकराना.....

3. ज्ञान की राह पर हम चले इस तरह
ज्ञान योगी बने कर्मयोगी बने
साथ यूँ ही रहे हम तेरे सदा
तेरा शुकराना.....

4. आप ही ब्रह्मा विष्णु महेश भी है
आप हर वेश में परिवेश में है।
आप ही आप ही आप ही आप है
तेरा शुकराना

41

कौन कहता है कि दीदार नहीं होता है
आदमी खुद ही तलबगार नहीं होता है।

1. तुम उसे प्यार करो वो न तुम्हें प्यार करें

बेखबर इतना तो करतार नहीं होता है।

2. तुम पुकारो तो सही हृदय से एक बार उसे
देखना कैसे वो साकार नहीं होता है।

3. जब बुलाते है भक्त अपनी खुदी को मिटाकर
तो फिर भगवान से इन्कार नहीं होता है

4. तू अपनी खुदी को गर नहीं मिटाता है
तो फिर भगवान का दीदार नहीं होता है।

5. जब तलक होती नहीं उसकी निगाहें सीधी
आदमी भव के कभी पार नहीं होता है।

42

कर न फकीरी फिर क्या दिलगीरि
सदा मगन मन रहना जी

1. कोई दिन कोठी न कोई दिन बंगला
कोई दिन जंगल बसना जी
कर न .....

2. कोई दिन हाथी न कोई दिन घोड़ा
कोई दिन पैदल चलना जी
कर न .....

3. कोई दिन खाजा न कोई दिन लाड़ो
कोई दिन फाकम फाका जी
कर न .....

4. कोई दिन ढोलिया कोई दिन तलाई
कोई दिन भुई पर लोटना जी
कर न .....

5. मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर
आन पड़े सो सहना जी
कर न .....

43

किस्मत लिखने वाले करतार यहीं लिखना
मेरे हृदय के अन्दर सतगुरू को प्यार लिखना

1. मेरे मस्तक पर लिखना सतगुरू की ही तस्वीर
नित ध्यान धरू तेरा कोई चाहूँ न जागीर
नैनों में सतगुरू का दीदार ही बस लिखना

2. तेरी जिभ्भा पर लिखना सतगुरू का प्यारा नाम
मैं और न कुछ चाहूँ जपूं नाम मैं आठो याम
कानों में शब्दों की झनकार ही बस लिखना।

3. मेरे हाथों पर लिखना सतगुरू की ही सेवा
तन मन धन सब वारूँ मेरा सतगुरू ही देवा
जहाँ जाऊँ मैं पैरों से गुरू द्वार ही बस लिखना

4. मेरा सतगुरू से दाता कभी नहीं बिछुड़ना हो
पूरा जीवन साथ रहे बस यही तुम लिखना
बनू दास मैं सतगुरू का संसार का मत लिखना।

44

तर्ज मुझे प्यार की जिंदगी देने वाले

कृपा करो दर तुम्हारा न भूले
बिन तेरे नहीं है गुजारा न भूले

1. हमको हमारे राम से मिलाया
आवागमन के दुखों से बचाया
नजरो का दाता इशारा न भूले

2. हर बार करे तेरा शुकराना
लब पर हो तेरे कर्म का तराना
बदला है जीवन हमारा न भूले

3. करे यूँ जगत में पूजा तुम्हारी
निभ जाएं दाता प्रीत हमारी

अपना तो तू ही है सहारा ना भूले

45

कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे,
लताओं में बृज की गुजारा करेंगे.

1. जो रूठेगें हमसे वो बांके बिहारी–2
चरण पड़ उन्हें हम मनाया करेंगे.....

2. बनाकर हृदय में हम प्रेम मन्दिर–2
वहीं उनको झूला झूलाया करेंगे....

3. उन्हें हम बिठायेंगे आँखों में दिल में
उन्हीं से सदा लौ लगाया करेंगे.....

4. उन्हें प्रेम डोरी से हम बाँध लेगें.....2
फिर वो कहाँ भाग जाया करेंगे.....

5. उन्होंने छुड़ाये थे गज के जो संकट–2
वहीं मेरे संकट मिटाया करेंगे.....

46

कृष्ण जिनका नाम है, गोकुल जिनका धाम है,
ऐसे श्री भगवान को, मेरा बारम्बार प्रणाम है।

1. यशोदा जिनकी मइया है, नन्दजू बापय्या है

ऐसे श्री गोपाल को मेरा बारम्बार प्रणाम है

2. लूट लूट दहीं माखन खावे, ग्वालन संग धेनू चरावै–2
ऐसे लीला धाम को मेरा बारम्बार प्रणाम.....

3. द्रुपद सुता की लाज बचायौ,
ग्राह से गज को फंद छुड़ायौ–2
ऐसे कृपानिधान को मेरा बारम्बर प्रणाम.....

47

कन्हैया झूले पलना, नेक होले झोटा दीजो,
मेरी लाला झूले पलना, नेक ठोले झोटा दीजे।।

1. मथुरा में याने जन्म लियो है–4
गोकुल में झोले पलना..... नेक होले झोटा.....

2. काहे कौ याकू बन्यों हे पालनो–4
काहे के लागे फुदना–नेक होले झोटा....

3. रत्नजड़ित याकू बन्यो हे पालनो–4
रेशम के लागे फुदना..... नेक होले झोटा।

4. चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि–4
चिर जीवों यह ललना––– नेक होले झोटा.....

5. नन्द बाबा तुम लीजो बधइयाँ

यशोमति तु ली जो बधइयां
बधइया बाजे घर में... नेक होले

48

कौन सी रे मार दियो री टोना
अरी मेरो मचले श्याम सलोना

1. दूध न पीवे लाला दही न खावे–2
ले नहीं माखन लोना–2
नहावे न धोवे लाला सुध बिसराई–2
आँख न खोले मेरो छोना.....कौन सीने

2. कितनी बार कही लाला सो , सखियन संग खेलो न–2
बुरी नजर है इन गोपिन की–2
टोन दियो है मेरा छोना.....

3. ललिता बोली विशाखा बोली ,
यशोदा देर करो न–2
राई नोन करो लाला पे , –2
रख देओ कछू उठोना... कौन सी ने .

4. नजर उतार दई लाला की, माँ ने विलम्ब कियो न–2
नैना खुल गये श्याम सुन्दर–2

हंसन लगे तब मोहना... कौन सी

49

कोई समझे भक्त सुजान
राम नित कृपा करते है

1. कभी कोमल हाथ प्रभु का
कभी बोझिल हाथ प्रभु का
सब भाँति करे कल्याण
वो पग पग रक्षा करते है

2. कभी ज्ञान प्रभु जी देते
कभी बुद्धि ही हर लेते
कभी रखकर मूंद अज्ञान
वो खुद पथ सीधा करते है।

3. कभी धन सत्ता बरसाते
कभी दीनता दे तरसाते
कभी सुख दे स्वर्ग समान
कभी दुख दुविधा देते है

4. है रूप अनेक कृपा के
कभी जय कभी हार करा के

प्रभु का निर्दोष विधान
देखो कब क्या क्या करते है

50

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी
तो सूनी ही रहती अदालत तुम्हारी

1. जो दीनों के दिल में जगह तुम न पाते
तो किस दिल में होती हिफाजत तुम्हारी

2. गरीबो की दुनिया है हे आबाद तुम्से
गरीबों से है बादशाहत तुम्हारी

3. न मुजरिम ही होते न तुम होते हाकिम
न घर-घर में होती है इबादत तुम्हारी।

4. तुम्हारे उल्फत के हम बिन्दू है ये
तुम्हे सौपता हूँ अमानत तुम्हारी।

5. दया सिन्धु तुमको समझ ही न पाते
जो ज्ञान की ज्योति जलाई न होती।

51

कृष्णा रटे से तृष्णा मिटे रे
राधा रटे से बाधा कटे रे-2

राधे–राधे बोल रे..... कृष्ण रटे से तृष्णा रे.....

1. मन मन्दिर में श्याम बसा लो,
मीरा का घनश्याम बसा लो–2
तन गोकुल और मन वृन्दावन,
मन में अमृत घोल रहे...

2. ये जग चिड़िया रैन बसेरा,
उड़ जायेगा हँस अकेला–2
मन मन्दिर में श्याम मिलेंगे,
अन्तर के पट खोल रे...

3. प्रेम मगन हो नाम जपे जा
राधा कृष्ण राम जपे–2
प्रभु कृपा मानुष तन पायो
ये जीवन अनमोल रे.....

52

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो
मन को विषयों के विषय से हटाते चलो

1. देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगे
रात दिन इनको संयम के कोड़े लगे

अपने रथ को सुमारग चलाते चलो

2. प्राण जाये मगर नाम भूलो नहीं
दुख में तड़पो नहीं सुख में फूलों नहीं
नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो।

3. नाम जपते रहो काम करते हो
पाप की वासनुओं से डरते रहो
प्रेम भक्ति के आँसु बहाते चलो

4. ख्याल आयेगा उनको कभी न कभी
ऐसा विश्वास मन में जगाते चलो
कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।

53

कन्हैया ने एक रोज रोकर पुकारा
कहा उनसे जैसा हूँ अब हूँ तुम्हारा

1. वो बोले की साधन किये तूने क्या है
मै बोला की किसे तूने साधन से तारा

2. वो बोले न दुनियाँ में आकर किया कुछ
मै बोला की अब भेजना मत दुबारा

3. वो बोले परेशान हूँ तेरी बहस से

मैं बोला की कह दो तू जीता मैं हारा

4. वो बोले जरिया है क्या पहुँचने का मुझ तक
मै बोला कि है हम बिन्दू का सहारा

54

कभी भस्मो के वस्त्र है कभी मुण्डो की माला है
कभी ओड़े है बागम्बर कभी तन मृग छाला है

1. चढ़ाया जिसने लोटा जल हुए बस ये उसी नर के
इसी से आपको संसार कहता भोला–भाला है

2. बिराजे गौरिजा बाये लिए गोदी में गणपति को
सवारी बैल की संसार कहता बैल वाला है

3. कभी गंगा जटा सोहै कभी सिर चन्द्रमा सोहे
कभी तन में तुम्हारे नाथ लिपटा नाग काला है

4. तुम्हारे भक्त की अर्जी लगी है एक मुद्दत से
सही तुम बिन न शिव जी और कोई करने वाला है

55

खुशिया ही खुशिया है आज रौनके बहारे है
जन्नत की धरती पर आज गुरू के नजारे है

1. ये घड़ी मुबारक हो ये समां मुबारक हो–2

दिन ये भागो वाला है–2
खुले भाग्य हमारे है– खुशिया ही खुशिया है.....

2. झोलिया भर ले लो दुनिया के वर ले लो –2
आज तो बुलन्दी पर किस्मत के सितारे है.....

3. सतगुरू नारायण है भक्त बलिहारी है–2
सतगुरू की गोदी में सुख दुनिया के सारे है

4. गुरू जी बधाई हो खुशी ये सवाई हो–2
भक्तो बधाई हो खुशी ये सवाई हो
आज ये नजारे है –2 सब सद्के तुम्हारे है

5. सतगुरू दयालू है बड़े ही कृपाल है–2
इनके जलवे तो सारे जग से निराले है

56

गुरू आज्ञा में जीवन को बिताना ही तो भक्ति
किये वादे है जो प्रभु से
निभाना ही तो भक्ति है

1. ये तन मन धन दिया प्रभु ने
नहीं इसमे कुछ अपना है
करे रहमत जो मिल जाये

नहीं चाहे तो सपना है
गुरू से प्रीत की अपनी
निभाना ही तो भक्ति

2. गया बचपन जवानी है
बुड़ापा आ ही जायेगा
जमी मे जो हुआ पैदा
उसे यम खा ही जायेगा
मरण जीवन मुक्ति दुख से
पाना ही तो भक्ति है

3. जहाँ में हर एक इंसा को
दाता ने बनाया है
बड़ा छोटा नहीं कोई
सभी में रब समाया है
अहंम की आग से खुद को
बचाना ही तो भक्ति है

57

गाये जा , गाये जा , गाये जा
गाये जा गुरू शुकराना गाये जा

पायेगा , पायेगा ,पायेगा ,पायेगा
मन सच्चा सुख पायेगा

1. गुरू के बगैर कैसे दिशा हीन चल रहे थे
किसी ने नहीं जगाया अंधकार में पड़े थे
गुरू ने जो कृपा किन्ही पारब्रहम से मिलाया
बलिहारी मै गुरू की जिसने अलख जगाया

2. मेरे सतगुरू का जीवन आर्दश है हमारा
बलिदान देके अपना इस बगिया को सजाया
पंचभूत से उठाकर सत्चित आनन्द बनाया
बलिहारी में गुरू की जिसने अलख जगाया

58

गुरू तेरे भरोसे तेरा परिवार है
तू ही मेरी नाव का माझी तू ही पतवार है

1. मुझको अपनों से बढ़कर सहारा तूने दिया है
जिन्दगी भर जीने का सहारा तूने दिया है
मुझपे अहसान तेरा ओ कितना बेसुमार है

2. हो अगर तुझसा माझी नाव मेरी पार होगी
बीच भंवर में नइया कभी न डगमग होगी

अब तो तेरे हवाले ओ तेरा परिवार है

59

गोपिया चलो गोकुल नगरिया
चैन सुख के सहारे मिलेगें
नाम है जिनका मुरली मनोहर
सबकी आँखों के तारे मिलेगें

1. कान्हा गौवे चराता है वन मे
डाले काष्धे पे कारी कमरिया
बाँस की बाँसुरी को बजाते
वो जमुना किनारे मिलेंगे

2. बड़ा नटखट कन्हया है छलिया
बन गया वो तो नर से है नारी
देखो कुंज गलिन में मनोहर
जाने क्या रूप धारे मिलेंगे

3. द्वारिका से जब चले कन्हइया
बोली राधा कि कब होंगे दर्शन
तुम जहाँ चाहोगी प्राण प्यारी
वही दर्शन हमारे मिलेंगे

60

गुरूवर मेरे दया करो तुम बिन हमारा कौन है
दुर्बलता दीनता हरो तुम बिन हमारा कौन है

1. माता तुम्ही पिता तुम्ही बन्धु तुम्ही सखा तुम्ही
तेरे ही दर पे आए हम तुम बिन हमारा कौन है
गुरूवर मेरे .....

2. जग को रचाने वाला तू दुखड़े मिटाने वाला तू
बबगड़ी बनाने वाला तू तुम बिन हमारा कौन है
गुरूवर मेरे .....

3. तेरी शरण को छोड़कर कुछ भी नही हमे खबर
जाये तो जाये हम किधर तुम बिन हमारा कौन
गुरूवर मेरे .....

4. तेरी लगन तेरा नमन भक्ति तेरी तेरा भजन
तेरी शरण में आये हम तुम बिन हमारा कौन है
गुरूवर मेरे .....

61

गुरू की प्रीत ही कुछ ऐसी है न छोड़ी जाये
प्रभु से सहज मिलाती है न छोड़ी जाये

1. गुरू के ज्ञान से सबका उद्धार होता है
ये सच की प्यास हीं ऐसी है न छोड़ी जाये
प्रभु से .....

2. सभी का सवाल यहीं है कि नाम में क्या है
ये बेखुदी हीं कुछ ऐसी है न छोड़ी जाये
प्रभु से .....

3. ये सच के जाम में ऐसा खुमार होता है
लगन लगी हीं कुछ ऐसी है न छोड़ी जाये

62

गुरू के भजन में हो जो रे दीवाना
सपनों की दुनिया का क्या है ठिकाना

1. मतलब से दुनिया तुम्हें अपनायेगी
अंत समय कोई काम न आयेगी
नहीं कोई अपना नहीं है बेगाना

2. झूठी है दुनिया झूठे सारे मीत रे
झूठी है प्रीत यहाँ झूठी सारी रीत रे
देखो मेरे मनवा चाल में न आना

3. संग न जाये तेरे कौड़ी छः दाम रे

चिंता में खोया तूने जीवन तमाम रे
पड़ा रह जायेगा माल और खजाना

4. अखण्ड समाधी में हो जा निष्काम रे
ब्रहमा नन्द कहे अपने आप में समाना
न तो कहीं आना न तो कहीं जाना

63

गुरू मेरी पूजा गुरू गोविन्दा
गुरू मेरा पार ब्रहम गुरू भगवंता

1. गुरू मेरा देऊ अलख अभेऊ
सर्व पूज्य चरण गुरू सेऊ

2. गुरू मेरा ज्ञान हदय ध्यान
गुरू के सिमरे मिटे अज्ञान

3. गुरू बिना अपना नाहीं और
सतगुरू बिन अब नाहीं ठौर

4. गुरू का शब्द हदय धरे धीरा
परख-परख मिटाये पीरा

5. सतगुरू मेरा असल रतन है
गुरू के शब्द सत्य वचन

6. गुरू पूजा पाई है बड़ भागी
गुरू सेवा दुख न लागी

64

गुरूवर की जय गुरूवर की जय
गुरूवर की जय बोलो

1. गुरूवर मेरा बंशी वाला–2
बक्सी ताल में डेरा डाला–2
वारी जाऊँ .....

2. गुरूवर मेरा बड़ा ही सोड़ा–2
और न कोई इनसां होणा –2
वारी जाऊँ .....

3. गुरू जी मेरे बड़े अनोखे–2
गुरू की नजरे सबको देखे
वारी जाऊँ .....

4. गुरू जी से नजरे हटती नहीं है
दूजी मूरत जचती नहीं है
वारी जाऊँ .....

65

गुरू की दुवारी सजी लगती प्यारी–प्यारी
वशी साजे हाथ में तेरे जाऊ वारी–वारी–2
कौन सा जादू मोपे डाला तू जाने–2
हम तो दीवाने दीवाने तेरे दीवाने

1. मुस्कान मीठी तिरछी अदा है
तेरी हर अदा पे ये दिल फिदा है
तुझको ही तो गुरूवर मेरा दिल माने–2
हमतो दीवाने .....

2. नजरो मेरे गुरूवर बसा है
न जाने कौन सा रोग लगा है
मेरे होंठो पर है गुरू के अफसाने
हम तो दीवाने .....

3. तेरे दर पे कोई न छोटा बड़ा है
गुरू नाम का सबपे रंग चढ़ा है
नच नच करके हो गये सारे मस्ताने
हम तो दीवाने .....

66

गुरुवर हमारे है हमें जान से प्यारे है

फिर से कहो कहते रहो अच्छा लगता है

भक्तों का ये आना जाना हमें अच्छा लगता है

1. दर्शन करोगे कब तक हाँ बोलो कब तक

मेरी आँखों में ज्योति रहेगी तब तक –2

फिर से कहो कहते रहो ....

भक्तों का आना जाना ....

2. भजन करोगे कब तक हाँ कब तक बोलो कब तक

मेरी वाणी में जान रहेगी तब तक–2

फिर से कहो कहते रहो ....

भक्तों का आना जाना ....

3. वाणी सुनोगे कब तक हाँ कब तक बोलो कब तक

मेरे कानो में जान रहेगी जब तक–2

फिर से कहो कहते रहो ....

भक्तों का आना जाना ....

4. संतसंग जाओगे कब तक हाँ कब तक बोलो कब तक

मेरे पैरों में जान रहेगी तब तक

फिर से कहो कहते रहो ....

भक्तों का आना जाना ....

5. ताली बजाओगे कब तक हाँ कब तक बोलो कब तक

सेवा करोगे कब तक हाँ कब तक बोलो कब तक

मेरे हाथों में जान रहेगी तब तक हाँ तब तक

67

गुरु का दीवाना जो एक बार हुआ

पार हुआ–2 भव से पार हुआ है

गुरू का जिसे दीदार हुआ है

पार हुआ है भव से पार हुआ है

1. मीरा भी पार हुई बन के दीवानी

तुलसी कबीरा की ये ही कहानी

सन्तों ने ये कहा ग्रन्थो में लिखा

प्रीतम का जिस –2 से प्यार हुआ है

पार हुआ ....

2. सतगुरू को दिल से जिन्होने रिझाया

उनका हमेशा हुआ मन का चाहा

मुझको विश्वास दासो का जो दास है

दुनिया में उसका उद्धार हुआ है

पार हुआ .....

3. हम तो हुए है दिवाने तुम्हारे

झूमे है मस्ती में भक्त हमसारे

होठों पे हसी दिल में खुशी है

सतगुरू का ये उपकार हुआ है

पार हुआ .....

68

गुणगान करेगें हाँ जी हाँ जी

तेरे भजन करेगे हाँ जी हाँ जी

तूने ही तो महकाई हम सबकी जिन्दगी

सब तुझको मनाने आये है दर तेरे दिवाने आये है

1. सारे जग की करते रखवाली

सतगुरू मेरे जनाबे आली

तेरी भक्ति करके सबकी किस्मत खुल गई

हम वरना भटकते रह जाते गर द्वारे तेरे हम न आते

2. बड़ी दूर से हम आये दर पे मनोकामना है यही वर दे

सेवा सुमिरन सतसंग तेरे जीवन भर करे

बस तुझसे प्रभु ये कहना है तेरे ही भरोसे रहना है

3. मेरे जीवन का तू है नजराना मेरा ठिकाना मेरा आशियाना

हम आये है शरण में यूँ वापस न जायेंगे

तू मेरा जिगर का टुकड़ा है तू संग है तो न कोई दुखड़ा है

69

गुरू जी हमारे दिल से पूछो कितना तुमको याद किया

भगवान मेरे दर पे तेरे आये हम उद्धार करो

1. देखी तेरी भोली सूरत हम तो तूम्हारे हो बैठे

तेरी मीठी-मीठी बातों में हम आज गुरू जी आ ही गये

पा ही गये जीवन से सब कुछ जब-जब तेरा नाम लिया

2. न पूजा का थाल गुरू जी न अक्षत का ज्ञान है

कब से खड़ी हाथ जोड़कर अंर्तमन हरिवंदन है

नित तेरा गुणगान करू सपने को साकार करू

3. जो भी देर दर पे आया उसकी नैया पार हुई

बिन बोले कष्टो को हरते ऐसे अंतर्यामी हो

दर से न ठुकराना गुरू जी तेरी आँखें के तारे है

70

गुरू पर्व सुहाना आया मेरे मन को बड़ा हर्षाया
कि चलो गुरूधाम को चलो रे भक्तो

1. ओ ऋतु भक्त मिलन की आई
कि खुशियों के फूल खिल गये रे भक्तो
गुरू पर्व .....

2. ओ गुरू पे मै जाऊँ सदके
कि गुरू हमें ज्ञान देते रे भक्तो
गुरू पर्व .....

3. ओ गुरू प्यार ही प्यार लुटाते
कि वारी वारी जाऊँ गुरू पे रे भक्तो
गुरू पर्व .....

4. ओ गुरू करूँ शुकराना तेरा
के तेरा प्यार पा ही गये ओ गुरूवर
गुरू पर्व

71

गुरू की हर बात निराली है–2
बात निराली है कि हर सौगात निराली है.....

1. आई खुशियों की घड़ियाँ , सजी दिल में फुलवारियाँ–2
समां कितना है सुहाना , हाँ खुश है सारा जमाना–2
हो सुख की बेला लेकर , रुत आई मतवाली है ..
गुरू की हर बात

2. यकी जो इन पर करता , सुखो से दामन भरता –2
जो लेता इनका सहारा , हाँ चमके उनका सितारा –2
हो उसका हर दिन होली , हर रात दिवाली है ..
गुरू की हर बात

3. मिली सतगुरू की रहमत , खुशी की पाई दौलत–2
हंसी है कितना नजारा , खिल रहा चमन ये सारा –2
हो मुस्कुराते हर फूल , हँस रही हर एक डाली है ..गुरू की हर बात

72

गुरूवर ने चरणों में मुझको स्वीकार किया है
तेरी रहमत करम सर आँखों पर

1. मेरे गुरूवर को अपना बनाके तो देख–2
मन में भक्ति भावों को जगा के तो देखो –2
मेरे गुरूवर ने मुझपर है जादू किया –2
उनकी भक्ति से हम तर जायेंगें .....

2. उनकी भक्ति से जीवन संवर जायेगा
उनकी शक्ति से बचकर किधर जायेगा–2
झोली खाली ले द्वारे पे आये है हम–2
गुरू करना करम सर आँखों पर .....

3. मेरे जीवन की अनमिट कहानी है तू –2
मेरी तकदीर और जिंदगानी है तू –2
लिए फिरते है दिल में छुपाये हुए
तेरी तस्वीर हम सर आँखों पर .....

4. दूसरा कोई आये तो देखूँ नही
कोई बहकाये हँसकर तो बहकू नही –2
तेरे मतवाले नैनो ने जादू किया
तेरी उलफत सनम सर आँखो पर

73

गिरधर मेरे मौसम आया धरती के श्रंगार का
डाल–डाल पर लग गये झूले बरसे रंग बहार के

1. उमड़–उमड़ काली घटा शोर मचाती है
स्वागत में तेरे सांवरा , जल बरसाती है
कोयलिया कूकती , मयूरी झूमती

तुम्हारे बिन मुझको मोहन बहारें फीकी लगती है

2. चाँदी बरणी चाँदनी अंग जलाती है
झरनों की ये रागनी दिल तड़पाती है
चली अब पुरवाई तुम्हारी याद आई
गुलो में अंगारे दहके कसक बढ़ती ही जाती है

3. ग्वाल बाल संग गोपिया श्री राधे आई है
आज कहो तुम्हें कौन सी कुब्जा भरमाई है
तुम्हरी राह में मिलन की चाह मे
बिछाये पलके बैठे है तुम्हारी याद सताती है

4. श्री राधे के संग में झूलो जी मोहन
छेड़ रसीली बाँसुरी शीतल हो तन मन
बजी जब बाँसुरी खिली मन की कली
मगन नन्दू सारी सखियां तुम्हे झूला झुलाती

74

गुरू ऐसो बसे मेरे मन मे जैसे व्यापक हो कण कण मे

1. जैसे फूलों मे खुशबू समाई वो किसी की नजर नहीं आई
ऐसे मै भी बसा हूँ तेरे मन मे जैसे व्यापक.....

2. जैसे फूलों मे रस है समाया वो किसी की नजर नही आया

ऐसे मैं भी बसा हूँ तेरे मन मे जैसे व्यापक हो .....3.

जैसे मेंहदी में रंग है समाया वो किसी की नजर मे नहीं आया

वैसे मै भी बसा हूँ तेरे मन मे जैसे व्यापक हो .....

.4. जैसे दूध मे मक्खन समाया वो किसी को नजर न आया

वैसे मे भी बसा हूँ तेरे मन मे जैसे व्यापक हो .....

5. जैसे सृष्टि मे ब्रहम समाया वो किसी की नजर नहीं आया

वैसे मै भी बसा हूँ तेरे मन मे जैसे व्यापक हो .....

75

गुरूवर है मेरे महान – महान सभी सुनलो

देते वो आतम का ज्ञान , ज्ञान सभी सुन लो

1. गुरूवर बताते है झूठी है काया

करना न उसका गुमान गुमान सभी सुन लो

2. गुरूवर बताते है झूठी है माया

माया का छोड़ो गुमान गुमान सभी सुन लो

3. गुरू देव बताते निज रूप तेरा

करलो उसी का ही ध्यान ध्यान सभी सुन लो

4. गुरूवर बताते प्रभु नाम साचाँ

करना प्रभु का ही ध्यान ध्यान सभी सुन लो

5. भव से जो तरना हो तो तुम ये सुन लो

ले लो गुरू जी से ज्ञान ज्ञान सभी सुन लो

76

गुरूदेव तुम्हारे चरणों मे हम तुम्हें रिझाने आये है

वाणी मे तनिक मिठास नहीं पर विनय सुनाने आये है

1. प्रभु का चरणामृत लेने को पास हमारे पात्र नहीं

आँखों के दोनो प्यालों मे मै भीख माँगने आई हूँ

2. तुमसे लेकर क्या भेंट करें भगवान तुम्हारे चरणों मे

हम भिक्षुक है तुम दाता हो सम्बन्ध बताने आई हूँ

3. सेवा मे कोई वस्तु नहीं फिर भी मेरा साहस देखो

हम रोकर आज आँसुओं का एक हार चढ़ाने आई हूँ

77

गुरूदेव तुम्हारी लीला तो जन मन मोहित करने वाली

वह धन्य हुआ भगवन जिसने थोड़ी सी पद रज पा ली

1. मानस रोगो के नाशक हो तुम पावन ज्ञान प्रकाशक हो

हम भक्तो के अनुशासक हो वाणी पीयूष भरने वाली

2. हम युगो युगो से भटक रहे माया फंदों में अटक रहे

अब तो प्रमोद मे भटक रहे जब से पी प्रेम सुधा प्याली

3. दिन रात कर्मो मे रत रहते सतसंग सुधा मे है बहते
गुरू देव कथाये क्या कहते जनता बनती है मतवाली

4. कितने आशय निर्माण किये सबमे रहते सब छोड़ दिये
सबको छोड़ सब साथ लिए नव श्री पट आपने रच डाली

5. ये भक्त न तुमको छोड़ेगा चरणो मे मन को जोड़ेगा
मन बन्धन फन्दे को तोड़ेगा सबमे प्रभु की प्रतिभा पाली

78

गुरू की समाधि में झुकालो ये सर
मिट जाये सारी चिंता फिकर

1. बड़े ही दयालु है करते सुनाई
यही पे तुम्हारी तो होगी भलाई
गुरू करेंगे करेंगे तुझ पर मेहर

2. अकबार तो देखा यहाँ सर झुका के
रहोगे जमाने में सर को उठा के
दुनिया करेगी-करेगी तुम्हारी कदर

3. आता है जो भी लेकर के जाता
उम्मीद से वो तो दुगना है पाता
यहाँ आने वाले से पूछो असर

4. समाधि की मिट्टी मस्तक लगा लजो

भक्तों तुम अपनी किस्मत जगा लो
गुरू जी रखेगे-2 तेरी सब खबर

79

गुरूशरण जो आयेगा नाम खजाना पायेगा
दर पे जो झुक जायेगा सर ऊँचा हो जायेगा

1. गुरू से रिश्ता खास है और न कोई आया है
जायेगा तर जायेगा सर ऊँचा हो जायेगा
गुरू शरण.....

2. नेक कमाई हाथ लिये नाम का तौफा साथ लिये
दर पर जो झक जायेगा सर ऊँचा हो जायेगा
गुरू शरण.....

3. गुरू का अंकुश बना रहे माया से तू सजग रहे
ज्ञान में तू रम जायेगा जीवन सफल बनायेगा
गुरूशरण.....

4. गुरू ही मेरा ईश है दूजा न कोई मीत है
अंग संग तू पायेगा खुशियों से भर जायेगा
गुरू शरण.....

5. गुरू भक्तों से प्रीत कर उनसे न कभी तू रीश कर
प्रभु को तू ही पायेगा आतम में टिक जायेगा

गुरू शरण .....

80

घूंघट के पट खोल रे तोहे पिया मिलेंगे

1. घट-घट रमता राम रमैया
कटुक वचन मत बोल तोहे पिया .....

2. रंग महल मे दीप बरत है
आसन से मत डोल तोहे पिया

3. कहत कबीर सुनो भई साधो
अनध्द बाजत ढोल तोहे पिया

81

घर-घर में हो पूजा जिनकी भक्तो को चाहत उनकी
ऐसे तो हमारे गुरू जी है गुरू जी तो हमारे है

1. गुरू प्रभु से कोई छुपा न राज हमारा
कदम-कदम पे देते गुरू जी सबको सहारा
जब याद करे आ जाये कष्टो को दूर भगाये
ऐसे तो .....

2. जीवन पथ के काँटे गुरू जी दूर भगाये
अपने भक्तो की खातिर क्या-क्या खेल रचाए

दिलदार कन्हैया प्यारा वो सबसे न्यारा न्यारा
ऐसे तो .....

3. सतसंग मे अपनी बीती हम सबको आज बताये
गुरू वचन के दम पर जो भक्त बढ़ते जाये
बिगड़ी को गुरू जी सुधारे हो जाते वारे-न्यारे
ऐसे तो .....

82

चरणों तेरे रहकर भगवन प्यार ही प्यार मिला
श्रद्धा से पूजा जब मैने ब्रहम का ज्ञान मिला

1. तुम संग ऐसी प्रीत लगी की छूटा जग मुझसे
जादू तुमने ऐसा किया कि छूटा मै जग से
बध्धन सारे छूट गये जब तूने बाँध लिया

2. गुजर गया हर पल का दुखड़ा जब तेरा नाम लिया
हर मुश्किल आसान हुई जब तूमने ज्ञान दिया
मोह माया में फंसा हुआ मै अब आजाद हुआ

3. जीना मरना सीखा भगवन जग मे जी कर के
जीते जी मर जाना कैसा सीखा अब तुमसे
तू ही है अब माझी मेरा नइया पार लगा

4. जहर भी पीना पड़े अगर तो वो भी पी लेगें
राजी जिसमें तू है भगवन वैसे जी लेगें
बिन पीये मदहोश हूआ यह कैसा प्यार मिला

83

छोड़कर संसार जब तू जायेगा
कोइ न साथी तेरा साथ निभायेगा

1. गर प्रभु का भजन किया न
सतसंग किया न दो घड़ी
यमदूत लगातार तुझको ले जायेगें हथकड़िया
कौन छुड़ायेगा कोई न .....

2. इस पेट भरन की खातिर
तू पाप कमाना निश दिन
शमशान लकड़ी रखकर
तेरे आग लगेगी एक दिन
राज हो जायेगा कोई न

3. ये सतसंग की गंगा है
तू इसमे लगा ले गोता
वरना इस दुनिया से तू जायेगा

इक दिन रोता हुआ पछतायेगा कोई न

4. क्यों कहता मेरा मेरा
ये दुनिया रैन बसेरा
यहाँ कोई न रहने पाता
है चंद दिनो का डेरा कोई न

5. श्री संत शरण मे निश दिन तू प्रीत लगा ले बन्दे
कट जायेगे सब लेखे ये जन्म मरण के फन्दे
पार हो जायेगा कोई न .....

84

जब से मिल गई ली गुरू जी हमार
बहार आइल जिन्दगी मे

1. पहिले से जिन्दगी मे कुछ ना सोहात रहे
देखी सुनी दुनिया में कुछ न बुझात रहे
अब तो सगरी भइल उजियार

2. दुनिया मे लोग बहुत बतिया चलावे
धरती आकाश बीच भूले और भुलावे
हमरे गुरू जी लगई है भव से पार

3. मन और माया मे सब भरमावे

गुरू बिन अपने को कोई नहीं भावे

हमरे जिन्दगी के भई ले सुधार

4. धनि–धनि आप और धनि राऊर ज्ञान जी

रऊआ बिना भागे न कभी अभिमान जी

कई से गाई राऊर महिमा अपार

85

जलसा है गुरू नाम का मस्ताना दोस्तो –2

मिलकर बड़े हूजूर को मनाना दोस्तों

वाहे गुरू वाहे गुरू वाहे गुरू वाह

1. अर्जी करी जो गुरू से मंजूर हो गई

मिलने की घड़ी दूर से नजदीक हो गई

देना है अपने प्यार का नजराना दोस्तो–2

मिलकर बड़े .....

2. गुरूवर के सभी भक्तों से दरबार सज गया

श्रद्धा भक्ति से जो भी आया भग्य जग गया–2

विश्वास में ही रहना सभी प्यारे दोस्तों–2

मिलकर बड़े .....

3. केसर मलाई सेब सपाटू कचौड़िया

गोमती का नीर पान की मीठी गिलौरिया–2

परसाद बड़े प्यार से खाना है दोस्तो

मिलकर बड़े .....

4. भूत भविष्य वर्तमान अब तुम पर छोड़ेगें

तेरी ही रजा में हम राजी रहेगें–2

सुनता है वो जहान का अफसाना दोस्तो

मिलकर बड़े .....

5. आये है इस दरबार मे किस्मत चमक गई

खुशियों से सभी भक्तो की झोली ही भर गई–2

बेफिक्र होकर जायेगें अब प्यारे दोस्तों

मिलकर बड़े .....

86

जग के तुम प्राण आधार हो तुम

श्री कृष्ण तुम्हारी जय होवे

मोहे पार लगावनहार हो तुम , श्री कृष्ण तुम्हारी जय होवे

1. प्रभु दीन हूँ मै बलहीन हूँ मै

धनहीन हूँ मै , आधीन हूँ मै –2

मोहे पार लगावनहार हो तुम , श्री कृष्ण तुम्हारी .....

2. गज के हित नंगे पाव भजे
द्रोपद हित वस्त्र तमाम तजे-2
जग लाज बजावत हार हो तुम.....
श्री कृष्ण तुम्हारी

3. करते है अरज यही हम सदा ,
मन व्याधि विकार न हो पैदा -2
इस जग के प्रभु आधार हो तुम , श्री कृष्ण तुम्हारी .....

87

जैस सूरज की गर्मी से जलते हुए तन को
मिल जाये जरूवर की छाया
ऐसा हीं सुख मेरे मन को मिला है
मैं जब से शरण तेरी आया मेरे राम

1. भटका हुआ मेरा मन था कोई मिल न रहा था सहारा
लहरों से लड़ती हुई नाव को मिल न रहा हो किनारा
इस लड़खड़ाती हुई नाव को जब किसी ने किनारा दिखाया
ऐसा हीं सुख मेरे मन .....

2. शीतल बने आग चंदन के जैसी राघव कृपा हो जो तेरी
उजियारी पूनम की हो जाये राते जो थी अमावस अंधेरी

युगयुग से प्यासी मुरूभूमि ने जैसे सावन का संदेशा पाया
ऐसा हीं सुख मेरे मन .....

3. जिस राह की मंजिल तेरा मिलन हो मैं उस पर कदम बढ़ाऊ
फूलों में ख्वाबों में पतझड़ बहारों में मैं न कभी डगममाऊ
पानी के प्यासे को तकदीर ने जैसे जी भर के अमृत पिलाया
ऐसा हीं सुख मेरे मन में.....

88

जिन्दगी में सदा मुस्कराते रहो
फासले कम करो दिल मिलाते रहो

1. बाटना है अगर बाट लो हर खुशी
गम न जाहिर करो तुम किसी से कभी
दिल की गहराई में गम छुपा हीं रहे-फासले

2. अश्क अनमोल है खो ना देना कभी
इसकी हर बंद है मोतियों से भरी
इनको हर आँखे से तुम चुराते रहो

3. दर्द कैसा भी हो आँख नम न करो
रात काली सही कोई गम न करो
एक सितारा बनो जगमगाते रहो

89

जगत के रंग क्या देखे तेरा दीदार काफी है
करूँ मैं प्यार किस किस से तेरा एक प्यार काफी है

1. नहीं चाहिए ये दुनिया के निराले रंग ढ़ंग मुझको–3
चला आऊ मैं सत्संग में तेरा दरबार काफी है

2. जगत के रिश्तेदारों ने बिछाया जाल माया का–3
तेरे भक्तों से हो प्रीति तेरा दरबार काफी है

3. जगत की झूठी रोशनी से है आँखे भर गई मेरी–3
मेरी आँखों में ही हरदम तेरा चमकार काफी है।

4. जगत के साज बाजों से हुए है कान अब बहरे–3
आ जा करके सुन अनहद यही झन्कार काफी है।

90

जय बोलो सब मिल आओ गुरू के चरणों में शीश नवाओ
तेरा बेड़ा पार करेंगे तेरा दुख को ही हरेंगे

1. कोई भी इंसान जो जग में आता है
माया के चक्कर में जो फंस जाता है
सुख की आस पर दुख वो पाता है
कितना भी मिले उसे चैन नहीं आता है

लोभ से खुद को बचाओ, बचाओ, बचाओं जय .....

2. तन का धन का झूठा है गुमान तेरा
जग में रह जायेगा खाली नाम तेरा
ज्ञान की ज्योति जो मन में जगायेगा
मुक्ति का पथ उसे खुद मिल जायेगा
गुरू जी से प्रीत लगाओ, लगाओ, लगाओ जय .....

3. रिश्ता गर जोड़ो तो गुरू से जोड़ जरा
मिट जायेगा भव का ये फेरा तेरा
सतसंगी भक्त जो चरणों का दास है
सुख शांति देओ गुरू अरदास है
ज्ञान के दीप जलाओ, जलाओ, जलाओ जय .....

91

जिसके सर पर हाथ हो तेरा वो कैसे दुख पाये–2
अटल भरोसा उसको तेरा जग बैरी हो जाये–2

1. तेरी रजा मे राजी होकर हर कारज वा करता–2
जो तू देता खुश होकर के अपना आँचल भरता–2
उठ सेवरे नाम ले तेरा रैन पड़े सो जाये...

2. श्वासों की माला पर गाये निर्मल नाम तुम्हारा–2

भव सागर की लहर लहर भी अब तो बनी किनारा–2
शरण पड़े की रक्षा करने तू न हाथ बढ़ाये....

3. होकर शरण तिहारी रहता मन को चिंता त्यागी–2
तेरी कृपा प्रसादी लेकर मन अब हुआ वैरागी–2
मोह माया के बंधन टूटे वंदन तेरा गाये.....

92

जो दिल को तसल्ली दे गुरू बिन कोई और नहीं
जो तेरे हाथ न हो ऐसी कोई डोर नहीं

1. सांसों में तेरी सरगम हर दम संग रहते हो
हर दम संग रहते हो
छुप छुप कर आते हो अपना मुझे कहते हो
ओ जादूगर बतला क्या तू चितचोर नहीं

2. जीवन कोरा कागज कुछ प्यार से तू लिख दे
जो प्यार से तू लिख दे वो लेख नहीं मिटते
जिस मोड़ पे तू न हो ऐसा कोई मोड़ नहीं

3. तू सच्चा मीत मेरा दुनिया से क्या लेना
मंजिल तेरे चरणों में तेरा प्यार मेरा गहना
तू प्रीतम है मेरा हमदम कोई और नहीं

4. शिकवा भी नहीं तुझसे और प्यार भी है तुझसे
मेरी जीत भी है तुझसे मेरी हार भी है तुझसे
मेरे सतगुरू तू बतला क्या तुझपे जोर नहीं

93

जहाँ देखूँ जिधर देखू तेरी रहमत नजर आए
मेरे गुरूवर मेरे रहबर मुझे तेरी याद तड़पाए

1. तेरे ही नाम में ओंकार की शक्ति समाई है
तेरे ही ज्ञान ने दाता मेरी किस्मत बनाई है
चले जो वचनों पर तेरे वो जीवन मुक्ति पा जाए

2. दिखावा ठोग, आडम्बर मेरे प्रभु को न भाते है
मगर जो भाव से भजते उन्हीं के ये हो जाते है
सरल हृदय से भज लो प्रभु तो बेड़ा पार हो जाये।

3. तेरे ही नाम को भजते ये जीवन पार हो जाएं
रहू सुख शान्ति से हरदम मुझे माया न भटकाएं
यही वरदान दो सतगुरू तुम्हीं से प्यार हो जाएं।

94

जय श्री गुरूवर जय श्री गुरूवर
बोलो जय श्री गुरूवर जय श्री गुरूवर

जीना है दो दिन की जिन्दगी

करो गुरू की बंदगी

1. बनि गॉव में खेती कराया

भक्तों ने मिलकर भजन है गाया

गुरूवर के संग आनन्द पाया

2. शक्ति नगर में भवन बनाया

सब भक्तों ने ईट उठाया

भक्तों को दिन चुरा दिखाया

3. बख्शी ताल में वृन्दावन बसाया

सब भक्तों के मन को लुभाया

भक्तों के संग रास रचाया

4. लालबाग में गालिया खाएं

फिर भी सत्संग बगिया सजाई

गोदावरी गुरू भगवान है सांबित कर दिखलाया

5. श्री गुरूवर की महिमा है भारी,

चरणों में जाये हम बलिहारी

आज हमारे संग से मिलकर

95

जब दर पे तुम्हारे अधमों का ठिकाना है

फिर अपनी ही किस्मत से क्यों रंज उठाना है

1. तारोगे तो तर लेंगे छोड़ोगे तो बैठे है

दरबार से अब हरगिज उठकर नहीं जाना है

2. मेरी तो कोई करनी निभने को नहीं भगवन

जैसे भी निभाओगे तुमको ही निभाना है

3. फरियाद के सुनने में है कौन सिवा तेरे

गर तुम न सुनो मेरी फिर किस को सुनाना है

4. दृग बिन्दु के शक्लों में ख्वाहिशें है इस दिल में

जरिया तो है आँखों का आंसू को बहाना है।

96

तर्ज दिन लूटने वाले जादूगर

जीवन की रूलाती घड़ियों से मिलता है तुम्हारा प्यार मुझे

कुछ चाह नहीं रहती बाकी प्रभु आके तेरे दरबार मुझे

1. मेरे दिल के गगन में आके कभी जब गम की धार छाती है

पल भर में कहीं से दया तेरी तब बन के हवा आ जाती है।

2. तुम रक्षा सबकी करते हो फिर क्यों हो भला इन्कार मुझे

तेरे दर से प्रभु मैं क्या मांगू बिन मांगे हीं सब कुछ मिलता है

3. मुरझाया फल इस जीवन का तेरी कृपा से खिलता है
जो इच्छा तेरी है दाता हरदम है वही स्वीकार मुझे

4. जब तक रहूँ इस दुनिया में बस एक रहे यही ध्यान मुझे
प्रभु दिल में तुम्हारा नाम रहे होवे पे तुम्हारा नाम रहे

5. रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में चाहे जन्म मिले सौ बार मुझे
जीवन को रूलाती घड़ियों में मिलता है तुम्हारा प्यार मुझे

97

तर्ज आये हो मेरी मिजन्दगी में

जीना तो है जहाँ में गुरूजी का ज्ञान पाके
ज्ञानों के हर कलश से बस प्यार प्यार ढलके

1. अनमोल जिन्दगी है ये हमको जो मिली है
भक्ति का रंग पाकर ये फूल सी खिली है
गुरू वचनों पे चल के ऽऽऽ सब गुल खिले चमन के
जीना तो.....

2. हो जाग जय गुरू से हो शयन जय गुरू से
हर हाल हर घड़ी में बस गुरू की शरण हो
इस मंत्र जय गुरू से ऽऽऽ सारे विकार भागे

जीना तो.....

3. सत्संग राह निराली सुख शक्ति देने वाली
सत्संगी तेरे दर पर बनकर खडे सवाली
जीवन का सार ज्ञान से ऽऽऽ देखो विचार करकें
जीना तो.....

98

जागो रे सभी अब भाई मेरे
खोलो ज्ञान से मन की किवड़िया
तुमको जाना है प्रभु की नगरिया

1. संसार की सारी झूठी है माया
तू भजन करने इस जग में आया
फिर क्यों पड़ा खोता अपनी घड़ी
अब तो कर ले भजन प्यारे भइया
तुमको जाना है प्रभु.....

2. संसार में तू भटकता ही आया
पर ज्ञान तुमको समझ में न आया
मानुष जनम अनमोल मिला
ज्ञान गुरूवर से ले ले तू भइया

तुमको जाना है प्रभु.....

3. जब तू शरण में गुरू जी की आया
गुरूवर ने तेरा सभी भ्रम मिटाया
जीवन की नैय्या को सौप दे अब
गुरूवर पार करेंगे तेरी नइया
तुमको जाना है प्रभु।

99

तर्ज हर श्वास में हो सुमिरन

जब से मैने गुरू जी तेरा नाम लिया है
जल्दी जल्दी में हर काम हुआ है

1. जिन्दगी में गुरू जी बड़े दुख पाये
और फिर आप की शरण में आये
मिट गई तकलीफ अब आराम हुआ है
जल्दी जल्दी .....

2. कौन करें इतना किसी के लिए
जितना कर दिया है तुमने मेरे लिये
मेरी हर खुशी का इंतजाम किया है
जल्दी–जल्दी.....

3. ये तो बड़ा सस्ता सौदा है गुरू जी
बस नाम लेने से बन जाते है काम जी
गुरू जी भेद सुख का मैने जान लिया है
जल्दी जल्दी .....

100

जे तू न फड़दा साड़ी बाँह,असाँ रूला जाणा सी।
फिर कित्थेन मिलदी था, असाँ रूला जाणा सी।।

(1)

नचड़ी दनदी से जिन्दागानी होणी सी।
मेरे जीवन दी फिर होर कहानी होणी सी।
जे तू न देंदा खुशियाँ असाँ रूल जाणा सी।।

(2)

कई जन्म होये बर्बाद न रस्ता मिलया से
होई किरण, मेरी जिन्दगी दा फुल हुन खिलया ऐ।
जे तू न लाँदा सीधी राह, असाँ रूल जाणा जी

(3)

चाहे लखाँ होण जुबाँ गुण नही गा सकदी
मेरे ठाकुर तेरा कर्ज अदा नहीं कर सकदी

जे तू न देन्दा ठण्डी छाँह असाँ रूल जाणा सीं।

(4)

तू मेरा है मैं तेरा, ये रिश्ता टूटे न

चाहे छूट जाये जग सारा, तेरा दर टूटे न।

तेरे दर दीं न फलतदीं छाँह, असाँ रूल जाणा सीं।

101

जय कारे जयकारे लगाते रहो–2 गुरू नाम का–2

बनेंगे सहारे गुरू जी प्यारे भक्तों की नइया को गुरू हीं सम्भाले

1. बड़े दिनों के बाद ये अवसर आया है–2

गुरू पूजा में सबको गुरू ने गुलाया है

गुरू के दरबार में नाचे गायेंगे

समाधि पर गुरू की ध्वजा लहरायेंगे

2. सारी सतसंगी पूजा में आये है–2

गुरू जी की महिमा निशदिन गाये है

चम चम चमके जैसे चाँद सितारे

सबके होठों पर गुरू के जयकारे

बनेंगे.....

102

तेरा नाम गुणो की खान किरपा कीजो किरपा निधान

1. जो जन जपते तेरा नाम उन पर तेरी कृपा महान।

जानी जान, ओ जानी जान, जानी जान मेरे भगवान

2. जो जन तेरी शरणी आये मुँह माँगा फल सोई पावे

झोलिया भर दो, ओ झोलिया भर दो, झोलिया भर दो मेरे भगवान

3. तू मेरा स्वामी मैं दास तिहारा बिन तेरे मेरा कोई न सहारा

बख्शो बख्शो, ओ बख्शो–बख्शो, बख्शो बख्शो मैं अन्जान

4. सारे जग के पालन हारे बिगड़ी किस्मत तू हीं सँवारे

तुझ पर वार, ओ तुझ पर वारूँ, तुझ पर वारूँ मैं तन और प्राण।

103

तेरे चरणों में आके गुरू जी

जिन्दगी क्या से क्या हो गई है।

जिन्दगी क्या से क्या हो गई है

जिन्दगी क्या से क्या हो गई है।

1. तेरे चरणों में जो भी है आया

जिन्दगी भी उसी की बनी है।

झुक गया तेरे चरणों में सतगुरू

वो दर–दर भटकता नहीं है।

2. तेरे चरणों में जो भी है आया

और एतबार तुम पर किया है।

उसकी नइया गुरू ने सम्भाली

पार जाने की चिंता नहीं है।

3. तेरे चरणों में जो भी है आया

और जीवन ये अपर्ण किया है।

मौत भी आके सिजदा करेगी

मौत का उसको डर भी नहीं है।

4. मैं तो दासी है सतगुरू तेरी अ

पने चरणों में मुझको लगा लो

याद आती है तेरी गुरू जी

दिल सम्भाले सम्भलता नहीं है।

104

तूने खूब रचा भगवान खिलौना माटी का

जिसे कोई न सका पहचान खिलौना माटी का

1. हाड़ मांस की देह बनाई उस पर चमड़ी खूब सजाई

तूने व्यर्थ किया अभिमान खिलौना माटी का.....

2. धन दौलत तूने खूब कमाई अंत समय तेरे काम न आई

तूने लिया न हरि का नाम खिलौना माटी का....

3. बालपन तूने खेल में खोया भरी जावानी काम

तेरा कैसे होवे कन्याण खिलौना माटी का....

4. मानुष देह तेरी माटी में मिलेगी माल खजाने तेरे से न चलेगी

क्यों भूल रहा इंसान खिलौना माटी का .....

5. संत दरश कभी न कीन्हीं संत संगत में समय न दीन्हीं

कैसे होवे तुझे ज्ञान खिलौना माओं का.....

6. अब भी समय हाथ में आया मानुष जनम अनमोल

खिलौना माटी का.....

7. प्रेम का प्याला भर भर पिलाते आत्म प्रकाश का ज्ञान कराते

अब अपना स्वरूप पहिचान खिलौना माटी का.....

105

तेरी शरण में जो आ गया भाव से उसे छुड़ा दिया

चाहे हो कैया भी पातकी पावन उसे बना दिया

1. दर दर भटकता वो हीं है जो तेरी शरण में गया नहीं

भूले से गर गया कहीं सतगुरू भूले से गर गया कहीं

रास्ता उसे बता दिया सतगुरू तेरी शरण में.....

2. भाग्य प्रबल उसी का है त्याग सफल उसी का है

जीवन सफल उसी का है सतगुरू जीवन सफल उसी का है

जिसको तूने अपना लिया सतगुरू तेरी शरण में.....

3. जिसको भरोसा हो गया बेड़ा ही पार हो गया
अलमस्त फिर वो हो गया सतगुरू अलमस्त फिर वो हो गया
प्याला जिसे पिला दिया सतगुरू तेरी शरण में जो.....

4. तुम तो पतित के नाथ हो भक्त जनों के साथ हो
मुझसे अधम विमूढ़ को सतगुरू मुझसे अधम विमूढ़ को
दाता तूने अपना लिया सतगुरू तेरी शरण में.....

106

तेरा किसने किया श्रृंगार सांवरे
लागे दूल्हा सा दिलदार सांवरे

1. मस्तक पर मलयागीरी चंदन
केसर तिलक लगाया–2
मोर मुकुट कानन में कुन्डल
इत्र बहुत बरसाया–2
यो महकता रहे ये दरबार संवारे----
तेरा किसने किया.....

2. बागो से कलियाँ चुन चुनकर सुन्दर हार बनाया–2
रहे सलामत हाथ सदा वो जिसने तुझे सजाया–2

यू ही सजता रहे हर बार संवारे.....
तेरा किसने किया....

3. कजरा ऐसा डार नैयन में और मये मतवाले–2
बन जाये आशिक वो तेरा जिसकी ओर निकारे–2
तेरी बाँकी अदा पे बलिहार सांवरे.... तेरा किसने.....

4. बोलो गुरूजी बोलो तुमको कौन सा भजन सुनाऊँ–2
ऐसा कोई भजन बता दो, तुम नोचो में गाऊँ–2
प्रभु मेरा भी करो दो उद्धार सांवरे... तेरा किसने

107

तेरे हवाले मेरी गाड़ी तू जाने तेरा काम जाने

1. छोड़ दिया सब भार तुम्हीं पर
जीत तुम्हीं पर हार तुम्ही पर
अब तो आस तुम्हारी तू जाने तेरा काम जाने

2. जब से सतगुरू शरण में आई
जीवन में आनन्द बहार आयी
मिट गई चिंता सारी तू जाने तेरा काम जाने

3. नैनों के रस्ते दिल में समाया
हर तरफ तू ही नजर आया

मेरी तुम संग प्रीति मुरारी तू जाने तेरा काम जाने

4. दिल में बस गया दिलबर प्यारा
भक्तों की आँखों का तारा
तुझ पर जाऊँ बलिहारी तू जाने तेरा काम जाने

5. एक भरोसा एक ही आशा
सदा करो हृदय में वासा
रखना लाज हमारी तू जाने तेरा काम जाने

108

तेरी महिमा को सतगुरू जी किस विध करूँ बखान
कि जग में ऊँची तेरी शान–2

1. द्वारा तेरे पे जो भी आये मांगी मुरादे के पा जाये
खाली न जाये दर कोई ऐसा तेरा विधान, जग में ऊँची....

2. जग में तेरा कोई न सानी तुझसा और वरदानी
संत रूप धरकर के तूने जग का किया कल्याण जग में ऊँची

3. क्यों न अपने भाग्य मनाऊँ तुझ पे सदा बलिहारी जाऊँ
सब जंगाऊ से मुझे छुड़ाकर किया उपकार महान, जग में ऊँची

4. दासन दास की यही पुकार अटल रहे तेरा दरबार
तेरे दर से मिलता रहे सदा प्रेम भक्ति का दान, जग में ऊँची

109

तेरे प्रेमी दीवानों को दरबार ही न्यारा होता है
जो तेरा प्यार होता है वो सबका प्यारा होता है

1. जब द्वार तुम्हारे आये प्रभु
सब ही झगड़े छुट जाये प्रभु
तेरे चरणों में आ करके दुखों से किनारा होता है

2. बिन इच्छा उस मेरे मालिक की
ये पलक भी झपक नहीं सकती
जब प्रेम की मस्ती चढ़ती है जब तेरा इशारा होता है

3. तेरे ये प्रेमी दीवाने
भर–भर के प्याले पीते है
इस भव सागर में डूबतो को बस तेरा सहारा होता है

110

तेरा मीठा नाम–2 मुझको दो जहाँ से प्यारा है
एक तू ही तो हमारा है
न मिले संसार–2 तेरा प्यार तो हमारा है–2
तू है तो हर सहारा है

1. तेरे नाम इस दिल की दुनिया मे उजाला हो गया

आन बसे तुम जबसे दिल मे प्रभु चमन खिल है गया
मेरे जीवन को तुमने प्यार से सवारा है
तू है तो हर सहारा है

2. गुरूवर के मिलने से जीवन का हर पल बदल गया–2
गुरूवर के मिलने अदना सा ये कंकड़ हीरे मे ढ़ल गया
मेरे गुरूवर से–2 मेरे जीवन मे उजियारा है
तू है तो हर सहारा है–2

3. आज तक हमने दुनिया के धन्धों में नहीं सुख पाया है–2
आज मिल गई खुसिया जीवन की दीदार जो पाया है–2
मेरे गुरूवर ने –2 तकदीर को सवारा है
तू है तो हर सहारा है–2

111

तेरी किस्मत में जो भी लिखा हे
वो तो वैसे भी तुमको मिलेगा
गर बनानी हो किस्मत जो तुमको
तो गुरू को रिझाना पड़ेगा

1. गुरू द्वारे में जो भी आया
सारी मन की मुरादे है पाता

गर पाना हो जो सतगुरू को
तो मन को मिटाना पड़ेगा–2

2. सारे संसार मे तू अकेला
आया था और जायेगा अकेला
बस साथी तो एक सतगुरू है
साथ तेरे हमेशा रहेगा–2

3. तूने दुनिया का प्यार पाया होगा
पर खाली का खाली रहेगा
प्यार पाया हो जो सतगुरू का
वो तो भर–भर छलकता रहेगा

112

तोहरे हीं नाम वा के चढ़ल बा खुमारी
एही से त आईल बानी तोहरी दुआरी
हमका मति करिह नजरी से दूर गुरू जी
देखाई देहु आपन नूर गुरू जी–2

1. तु हीं सच्चा गुरू महिमा वाली
दर से न जाये भक्त कोई खाली
ज्ञान से भरल भरपूर गुरू जी

देखाई देहु आपन नूर गुरू जी

2. सब भक्तो की करती रखवाली
आये है सब भक्त बनि के सवाली
सुनले बानी करे लू दुख दूर गुरू जी
देखाई देहु आपन नूर गुरू जी

3. तुम तो सतगुरू हो अवतारी
सुन लो गुरू जी विनती हमारी
हमका चढ़ल बा भक्ति का सुरूर गुरू जी

4. ज्ञान का प्रकाश सबके अन्दर भरती
भक्तो के सब दुख को हरती
पालन करिबे बचन को जरूर गुरू जी

5. कोई कलकत्ता कानपुर से आईलबा
कोई भक्त सीतापुर लखीमपुर से आईल बा
कोई महमुदाबाद चन्दौसी से आईल बा

113

तेरा जीवन है बेकार हरि नाम बिना प्रभु नाम बिना
तेरा जीवन हे बेकार गुरू नाम बिना-2

1. अच्छे कर्म जब किये है तूने तभी मिली है मानुष देह

ऐसा अवसर मिले न मिले फिर तोहे है बारम्बार

2. दुनिया के सौ काम है करता कभी तो ले ले प्रभु का नाम
क्या मुख ले के जायेगा तू मन कुछ सोच विचार

3. तेरे तन मे आज है शक्ति बैठ के कर ले प्रभु की भक्ति
दिन-दिन तेरो बीतो जाये जीवन है दिन चार

114

तेरे कदमो मे प्रभु सर ये झुका जाता है
दिल भी अब मेरा प्रभु तेरा हुआ जाता है

1. जब से दरबार मे हम आके हुए है शामिल
सबसे आला तेरा दरबार नजर आता है

2. परेशां होके जो आ जाता है तेरे दर पर
तेरे दर पर मेरे प्यारे वो अमन पाता है

3. ज्ञान की नजरों से तुम देख लो जिसे गुरूवर
फिर तो दरबार से वो हट के नहीं जाता है

4. आपकी नजरें इनायत कर भी दो गुरूवर मुझ पर
अब तो दिल तेरा ही नजराना हुआ जाता है

115

तुम्ही मेरी जिन्दगी तू ही आधार है

तुझ संग गुरू जी जन्मों का साथ है

1. मेरे दिल की धड़कन गुरू जी तुम्ही हो
मेरे जीवन के खेवेइया तुम्ही हो
तेरी जो कृपा रहे बस बेड़ा पार है

2. दुनियाँ जो राहों में काँटे बिछाये
तेरा साथ मुझसे छिन हीं न जाये
तेरी दया की गुरूवर दरकार है

3. जो पल भी तेरे संग मे बिताये
तेरी बाँहो मे स्वर्ग समाये
तेरी याद दिल मे मेरे सरकार है

116

तूने मेरे सतगुरू सब कुछ दिया है
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है

1. मिलती न मुझको अगर दात तेरी
क्या थी जमाने मे औकात मेरी
तुम्ही ने इसके काबिल किया है
तेरा शुक्रिया है

2. तेरी रहमतो पर अब तक जिये है

मेरे काम सारे तुम्ही ने किये है
मिला मुझको जो कुछ भी चाहिये
तेरा शुक्रिया है

3. मेरे पास जो कुछ है बदौलत तुम्हारी
मेरा कुछ नही है ये दौलत तुम्हारी
उसे क्या कमी है जो तेरा हो लिया है
तेरा शुक्रिया है

4. किया कुछ नही शर्मसार हूँ मै
तेरी रहमतो का तलबदार हूँ मैं
दिया कुछ नही बस लिया ही लिया है
तेरा शुक्रिया है

117

तेरी तस्वीर मे सतगुरू
अजब तासीर देखी है
दिलो को खींचने वाली अजब जंजीर देखी है

1. जो श्रद्धा प्रेम से आकर करे एक बार भी दर्शन
बनी तस्वीर हैरत की वो ये तदबीर देखी है

2. जन्मों – जन्मों के संशय रोग दूर करने को

तेरे उपदेश सुनने की अजब अक्सीर देखी है

3. बना जो दास दुनिया का छोड़कर आस को तेरे
रहा न इस उस जग का यही आखीर देखी है

118

तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊँ मै

1. देख लिया सारा जग मैने , तेरे जैसा मीत नही
तेरे जैसा सबल सहारा तेरे जैसा मीत नही
किस शब्दों मे महिमा आपकी गाऊँ मै

2. अपने पथ पर आप चलूँ मै इतना मुझमे ज्ञान नही
हूँ मति मन्द नयन का अन्धा भला बुरा पहचान नही
हाथ पकड़ ले चलो ठोकर खाऊँ मै

119

तेरा मयखाना साकी सलामत रहे
पीने वालो का को कोई भरोसा नही
अपने चरणों मे भगवान लगा लो मुझे
जिन्दगानी का कोई भरोसा नही
कल खुदा जाने हम फिर मिले न मिले
जिन्दगानी का कोई भरोसा नही

1. अब की सावन जो आकर बरस ही गये
तेरी रहमत के द्वारे खुल ही गये
मेरी झोली को भर दो प्रभु प्यार से
जिन्दगानी का कोई .....

2. तेरे चरणों मे आये जो भटकते हुए
टूटे जन्मों के बन्धन सदा के लिए
जो नये रोज सौहर बदलती रहे
ऐसी दुल्हन का कोई भरोसा नही

3. ये जो बैठे है आये शराबी तेरे
लड़खड़ाते हुए डगमगाते हुए
तेरा मयखाना साकी सलामत रहे
पीने वालों का कोई भरोसा नही

120

तेरे पूजन को भगवान बना मन मन्दिर आलीशान

1. किसने जानी तेरी माया किसने भेद तुम्हारो पाया
हारे ऋषि मुनि कर ध्यान बना मन मन्दिर आलीशान

2. तू हर गुल मे तू बुलबुल मे तू ही डाल की हर पातन मे
तेरी लीला कीर्ति महान बना मन मंदिर आलीशान

3. तू ने राजा रंक बनाये तूने भिक्षुक राज दिलाये
कर कुछ जीवन का कल्याण बना मन मंदिर आलीशान

121

थोड़ा ध्यान लगा थोड़ा ध्यान लगा गुरूवर दौड़े दौड़े आयेगे
अखियाँ मन की खोल–2
तुझको दर्श वो दिखायेगे

1. है राम रमैया वो है कृष्ण कन्हइया वो
वो हीं मेरा ईश है
सतसंग राहो मे चलना सिखाते है
वो हीं जगदीश है
महिमा है अपार , महिमा है अपार
सत्य की राह वो दिखायेगे गले से.....

2. कृपा की छाया मे बैठायेंगे तुझको
कहाँ तुम जाओगे
उनकी दया दृष्टि पड़ जायेगी तुझपे
तो भव तर जाओगे
प्रेम से पुकार तेरे भाग्य वो जगायेगे गले से.....

3. ऋषियों ने मुनियों ने गुरूदेव की महिमा का

किया गुण गान है
गुरूवर के चरणों में झुकती सकल सृष्टि
झुके भगवान है
महिमा है अपार सच की राह वो दिखायेगे गले से.....

122

दिल में गुरू जी आप हो कोई और न रहे
बस आप हीं हो आप कोई और न बसे

1. दुनिया के इस चमन मे माया के फूल है
देखूँ मै इनको दूर से मन मे न वो रमे

2. मेरे ये खाक मन मे बैठे है बन्धु जो
घर खाली तब हीं होगा जब आप आ बसे

3. कहते है आप कैसे आऊँ तुम्हारे घर
क्योकि तुम्हारे घर मे कोई दूसरा बसे

4. बस मे नहीं है गुरूवर इनको निकालना
निकलेंगे तब ये जब प्रभु वारंट आप दे

5. जब आपकी कृपा से होगा ये खाली घर
मेरी ये प्रार्थना है प्रभु आप आ बसे

123

दो बोल मीठे बोल के सुख सबको दिया करें

जीवन बड़ा अमोल है उसे हर पल जिया करें

1. बोली बने मधुर अगर मन मे मिठास हो
अमृत दिलो में हो अगर एक रब का वास हो
खुद को खुदा से जोड़ कर नित अमृत पिया करो

2. हर एक वचन को तोलकर रसना पे लाये हम
मन मे जो भाव हो वही लब पर सजाए हम
करनी व कथनी एक हो वो जीवन जिया करे

3. ढलता है कर्म मे वही जो मन मे विचार ले
मन सतगुरू को सौप कर जीवन संवार ले
हर एक विचार शुद्ध हो बस सुमिरन किया करे

4. हो कर गुरू का जो रहे हर दुख का अंत है
महका दे कुल फिजा को जो चंदन वो संत है
संतो की रीत मे रहे सुख सबको दिया करे

124

दयामय अपने भक्तो का सदा उद्धार करते हो
निराधारों की नइया को भंवर से पार करते हो

1. तुम्हारे नाम पर दानी लुटा दे लाख धन अपना
खजाने उनके तुम भरपूर बारम्बार करते हो

2. अगर निर्दोश को अज्ञान ले जाता है फांसी पर
तुरंत फांसी के फंदे को सुमन का हार करते है

3. तुम्हारे प्रेम मे प्रेमी लुटा दे तन मन धन अपना
उसी को नइया सतगुरू जी जुगत से पार करते हो

125

दया करो तो अभी ही कर दो
हे नाथ फिर कब दया करोगे

1. दया के सागर कहाते हो तुम
जनो को दुख से छुड़ाते हो तुम
भला बुरों का भी कर चुके हो
हे नाथ मेरा भी भला करोगे

2. भंवर के बस मे पड़ी है नइया
सहारा दे दो बनो खेवइया
करो किनारे से नाव जल्दी
हुई जो देरी तो क्या करोगे

3. दया तुम्हारी अगर न होगी
तो नाथ मेरी गुजर न होगी
खता हुई है जरूर लाखों

हे नाथ तुम ही क्षमा करोगे

4. हजारों पापी रिहा किये है
ये प्रेम देकर मिला लिये है
मेरे भी पापो का नाश कर दो
हे नाथ तुम्ही क्षमा करोगे

126

दरश करन चले आना गुरू की सवारी देखो आई
आई है आई है देखो आई है गुरू की सवारी देखो आई

1. पुष्प माल सखी ले आना प्रेम पिरो उसमे लाना
माला गुरू को पहनाना गुरू की सवारी .....

2. रोली अक्षत ले आना संग सिन्दूर भी ले आना
पूजा फिर गुरू की करना गुरू की सवारी .....

3. दीप नयन के ले आना डाल प्रेम धृत भी लाना
आरती गुरू की फिर करना गुरू की सवारी .....

4. मुकुट सखी तुम ले आना मोती भी लाल लगा देना
मुकुट गुरू को पहनाना गुरू की सवारी .....

5. भोग सखी अब ले आना डाल प्रम का रस लाना
भोग गुरू को लगा देना गुरू की सवारी.....

6. तन मन धन सब कुछ लाना भेंट गुरू को चड़ा देना
जीवन सफल बना लेना गुरू की सवारी .....

127

दिल एक मंदिर है आनन्द अन्दर है-2
प्रेम बिना नहीं प्रभु है मिलते
प्रेम ही सब कुछ है

1. जिसने प्रभु से लगन लगाई
उसकी नइया पार लगाई
क्या होती है नाम खुमारी
वो ही जाने है

2. हर किसी की चाह यही है
सुख से जीवन कैसे बिताये
उनको राह मिल जाती है
जो अभिलाषी है

3. दिल तो दिलबर की जगह है
बात ये कोई क्यों भूलता है
जो न बताये दिलबर को वो
वो जीवन खोता है

4. शेर उसी को सब कहते है
जो अपने पैरों पर खड़े है
तूफ़ानों से वो नहीं डरते
जो दीवाने है

128

दीदार से ऐ सतगुरू हुआ शीतल मन मेरा
मिटी गम की रैन काली सुख का हुआ सबेरा
1. मेरे भाग्य विधाता हो , आँखों के हो तारे
नाचीज के ऐ सतगुरू तुम प्राण प्यारे हो
तेरी कृपा से दिल मे हुआ ज्ञान का उजेरा
2. आँखो ने जब से पी तेरे दर्शन की हाला
तेरी याद मे ही हरदम दिल रहता है मतवाला
है मन के मंदिर मे बस तेरा ही बसेरा
3. तेरी मोहनी मूरत पे करूँ तन मन मै अर्पण
तेरे ही चरणों मे बीते यह मेरा जीवन
है दिल मे तमन्ना यही पाऊँ मैं प्यार तेरा
4. हर जन्म मे ऐ सतगुरू मुझे तेरा आधार रहे
जुड़ी तेरे चरणों से सदा प्रीत की तार रहे

रहे दास न दास सदा तेरे चरणों का चेरा

129

दशा मुझ दीन की भगवान सम्भालोगे तो क्या होगा
अगर चरणों की सेवा मे लगालोगे तो क्या होगा
1. मै नामी पातकी हूँ और नामी पाप हर तुम हो
जो लज्जा दोनों नामो की बचा लोगे तो क्या होगा
2. जिन्होंने तुमको करूणा कर पतित पावन बनाया है
उन्ही पतितो को गर पावन बना लोगे तो क्या होगा
3. यही सब मुझसे कहते है तू मेरा है तू मेरा है
मै किसका हूँ यह झगड़ा तुम चुका लोगे तो क्या होगा
4. अजामिल गीध गणिका जिस दया गंगा मे तरते है
उसी मे मुझसे पापी को मिला लोगे तो क्या होगा

130

दातार तेरे दर से बस ये ही दुआ मांगे
घर-घर खुशी बरसे हम सबका भला मागे
1. सत्कार करे सबका सब मे तू समाया है
इक पिता के हम बेटे फिर कौन पराया है
फिर किसका बुरा चाहे फिर किसका बुरा मांगे

2. बिन मांगे ही जब तूने सब दे ही दिया मुझको
हर मांग हुई पूरी जब मांग लिया तुझको
अब तेरे सिवा तुझसे हम मागे तो क्या मांगे

3. हर बात अमल मे हो जो आप जुबा से कहें
तेरा नाम जुड़ा मुझसे अहसास हमेशा रहे
गुरूमत के सांचे मे जीवन ये ढला मांगे

4. गर भूले से भूल करे वो नाम मेरे आये
नेकी हो अगर हमसे वो नाम तेरे आये
फिर क्यो कर नेकी का आनन्द सिला मांगे

131

दर आये है आये सब खुशियाँ मनाने को

1. देखो आई है भक्तो की टोली
बोले प्यार की मीठी बोली
करें जय जय जयकार गूँजे सारा संसार
नही कोई हम सा मतवाला , मतवाला

2. देखो आया है पर्व सुहाना
सब मिलजुलकर प्रभु को मनाना
बाजे ढोल मृदंग भरे मन मे उमंग

कैसा जोश है सबका निराला–निराला

3. प्रभु दुख से उपराम कराते
होती आतम ज्ञान की बाते
होवे कितना भरम नही कोई भी गम
यही मंदिर है ये ही शिवाला शिवाला

132

दुनिया मे जाने कितनी पूजा का मान है
सबसे निराली गुरू पूजा की शान है

1. गुरू तेरे धाम की महिमा कही न जाये
पूजा करने को कितने नर नारी आये
गुरू जी तुम्हारी समाधि कितनी महान है
सबसे .....

2. दरशन करने को भक्त आये दुनिया से सारी
जयकारे की ध्वनि से गूँजे जाये सभी बलिहारी
थमता न जोश उनका थकती न जान है
सबसे .....

3. सच्चे मन से तेरे दर पे जो शीश झुकाता
खुशियों से भर जाये जीवन भक्ति तेरी पाता

गुरू जी तू उनकी करता मुश्किल आसान है

सबसे .....

133

दानी मेरे है गुरू खुला दान का द्वार

वांछित फल पाये वही जो आ जाये द्वार

1. महिमा गुरूवर की मेरे मुख से बरनी न जाये

दिन-दिन बढ़ती ही रहे क्या बोलू अधिकाय

2. महिमा गुरूवर की मेरे दिन-दिन बढ़ती जाये

का मुख ले वर्णन करूँ वाणी मे न समाये

3. नयनो मे वाणी नही वाणी मे नही नैन

महिमा पूरी न पड़े जो गावे दिन-रैन

4. वाणी तो भई मूक री किस विधि महिमा गाये

महिमा गावन के लिए महिमा मय हो जाय

5. शक्तिवान गुरूवर मेरे वही भजन के स्रोत

वही भजन लिखवा रहे वही प्रेरणा श्रोत

6. भजन बनाने के लिए किसके दर पर जाऊँ

गुरूभजन भण्डार है उनसे भिक्षा पाऊँ

7. शक्तिवान गुरूवर मेरे दिया प्रेरणा दान

खान भजन की खोल दो जब बैठा घट आन

134

देखो भिखारी आया गुरूवर तेरी गली मे

श्रद्धा के फूल लाया गुरूवर तेरी गली मे

1. मैने सुना है गुरूवर तुम तो दयानिधि हो

विश्वास मुझको लाया गुरूवर तेरी गली मे

2. नैनो के दोनो प्याले दर्शन से भर दो प्यारे

भिक्षा दरश की पाऊँ गुरूवर तेरी गली मे

3. गुरूवर तेरा पुजारी ये तुझसे माँगता है

इक बार समा जाओ इस आँख की पुतली मे

4. गर मुझको जो मिली न भिक्षा तेरे दरश की

फिर आया या न आया गुरूवर तेरी गली में

5. दिलबर हो तो जानूँ सरकार हो तो जानूँ

जिसने जो चाहा पाया गुरूवर तेरी गली मे

6. रहमत के बह रहे है दरिया तेरी गली मे

किस चीज की कमी है गुरूवर तेरी गली मे

135

जपो रे मन राम नाम सुखदायी

1. राम नाम के दो अक्षर मे
सब सुख शांति समाई

2. राम नाम के कारण पागल बन गइ मीरा बाई
पति छोड़ा परिवार भी छोड़ा हरि नाम अपनाई

3. राम नाम के सुमिरण से भव पार उतर जाई
जपोरे मन राम नाम सुखदाई

136

जग मे सुन्दर है दो नाम चाहे कृष्ण कहो या राम

1. एक हृदय में प्रेम बढ़ावे एक पाप के ताप हटावे
दोनो सुख सागर है दोनों है पूरन काम

2. माखन ब्रज में एक चुरावे एक बेर भिलनी के खाए
प्रेम भाव के भरे अनोखे दोनो के है नाम

3. एक कंस पापी संहारे एक दुष्ट रावण को मारे
दोनो है आधीन दुख हर्ता दोनो बल के धाम

4. एक राधिका के संग राजे एक जानकी संग बिराजे
चाहे सीता राम बोलो चाहे राधे श्याम

5. दोनों है घट घट के वासी दोनों है आनन्द प्रकाशी
बिन्दू सदा गोविन्द भजन से मिलता है विश्राम।

137

झूम झूम के नाचो आज गाओ खुशी के गीत
आज जो मन की हार हुई है और गुरू की जीत

1. अब तक था मन ने मुझको रूलाया
मोह माया में था भटकाया
गुरू ने प्रेम से इसे समझाया
निज स्वरूप का पता बताया।
अपने जैसा मुझे बनाया धन्य गुरू की प्रीत रे।

2. भाग्य बड़े मेरे जो गुरू ने अपनाया
गहरी नींद से मुझे जगाया
भव बंधन से मुझे छुड़ाया
सारे जहाँ का राजा बनाया
बिन मांगे सब कुछ दे डाला
धन्य गुरू की प्रीति रे

3. भटक रहा था मैं जग की माया में
अटक गया था इस काया में

भ्रमित हो रहा था छाया में
अपने स्वरूप में अब आया में
सपने से मुझे जगाकर सुनाया आत्मा का गीत

138

धीरज रख लो रहमत की बरखा बरखा भी देगा
जिस प्रभु ने दर्द दिया है वही दवा भी देगा

1. तोड़ कभी न आस की डोरी खुसिया देगा भर-भर झोली
मगर वो गम की परछाई से मुझे डरा भी देगा।

2 जिसके हाथ में सबकी रेखा उसकी ओर जिसने भी देखा
वही समय मध्यम तारा को फिर चमका भी देगा

3. माँग में भर बिंदिया से पहले नाम वही बिंदियां से पहले
एक दिन वो तेरी आशा को एक चेहरा भी देगा।

4. बढ़ जायेगी हिम्मत तेरी घटेगी जब घनघोर अंधेरी
बूँद-बूँद तरसाने वाला अखिर जाम पिला ही देगा।

139

नाम भगवान का जो दिल से लिया करते है
उन्हीं भक्तों पे प्रभु जान दिया करते है।

1. नीच गणिका भी तरी तर गयी शबरी देखो

गीध को तार दिया तार दी कुबरी देखो
नीच से नीच को प्रभु तार दिया करते है।

2. कहाँ भगवान कहाँ दीन सुदामा देखा
हुआ पल भर में धनी दीन सुदामा देखा
अपने भक्तों को प्रभु प्यार किया करते है।

3. पाप धरती पे अधिक जब कभी बढ़ते देखा
दुख भक्तों पे अधिक जब कभी बढ़ते देखा
घर के अवतार प्रभु तार दिया करते है।

140

नमस्कार भगवान तुम्हें भक्तों का बारम्बार हो
श्रद्धा रूपी भेंट तुम्हारी मंगलमय स्वीकार हो

1. तुम कण कण में बसे हुए हो तुममें जगत समाया है।
तिनका हो चाहे पर्वत हो सभी तुम्हारी माया है।
तुम दुनिया के हर प्राणी के जीवन के आधार हो।

2. सबके सच्चे पिता तुम्ही हो तुम ही जगत की माता हो
भाई बन्धु रक्षक सहाये सहायक रक्षा दाता हो
चींटी से लेकर हाथी तक सबके सिरजन हार हो।

3. ऋषि मुनि योगी जन सब ही तुम्हीं से वर पाते है।

क्या राजा क्या रंक तुम्हारे दर पर शीश झुकाते है।
परम दयालू परम कृपालु करूणा के आधार हो।

4. जीवन के तूफ़ानों में प्रभु तुम हीं एक सहारा हो
डग-मग डग-मग नइया डोले तुम हीं नाथ किनारा हो
तुम केवट हो इस नइया के और तुम्हीं पतवार हो।

141

नजरों का पाके आपकी जन्नत मुझे मिली
दुनिया की आफतों से राहत मुझे मिली।

1. मालिक है आप गुरूवर सारे जहान के
सारे जहाँ की खुशियां है आपसे मिली

2. यूँ तो जहाँ में लाखों है सतगुरू बली
पर आप जैसा गुरूवर देखा नहीं कहीं

3. जप तप करूँ न कुछ तो बिगडेगा तेरा क्या
क्योंकि हमारी डोरी है आपने गही

4. डोरी हमारे उर में डाली जो आपने
ले जाइये जहाँ भी हम जायेंगे वहीं

5. सागर में जैसे सरिता मिलती उमंग से
हम बन के आज सरिता गुरू में समा गई।

142

नर तन है कितना प्यार मिलता नहीं दुबारा
गुरू शुक्रिया तुम्हारा, गुरू शुक्रिया तुम्हारा

1. कब तक रहेगा सोया उठ जाग जा ओ प्राणी
फिर ये अमृत बेला मिलता नहीं दुबारा

2. भव बन्धनों ने जकड़ा गलफत में दिन गुजारे
मानुष जनम है दर्लभ मिलता नहीं दुबारा

3. सत गुरू के साये में हीं निष्काम धन कमा ले
अवसर है कितना प्यारा मिलता नहीं दुबारा

4. सतगुरू जी के साये में सार्थक जनम तू कर ले
हरि सुमिरन को नाहीं तन ये मिले दुबारा।

5. सुख सिन्धु में आके सच की प्यास बुझा ले
फिर ये अमृत धारा मिलता नहीं दुबारा।

143

निर्बल के प्राण पुकार रहे जगदीश हरे जगदीश हरे
श्वासों के स्वर झनकार रहे जगदीश हरे जगदीश हरे

1. आकाश हिमालय सागर में पृथ्वी पाताल
चराचर में यह मधुर बोल गुजार रहे

जगदीश हरे जगदीश हरे

2. जब दया दृष्टि हो जाती है सूखी खेती हरियाती है।
इस आस पे जन उच्चार रहे जगदीश हरे

3. सुखदुखों की चिंता है हीं नहीं बस है विश्वास
न जाये कहीं खूटे न लगाये तार रहे जगदीश हरे–2

4. तुम हो करूणा के धाम सदा सेवक है सब भक्त
बस इतना सदा विचार रहे जगदीश हरे

144

न ये तेरा न ये मेरा मन्दिर है भगवान का
पानी उसका भूमि उसकी सब कुछ उसी महान का

1. हम सब खेल खिलौने उसके खेल रहा करतार रे
उसकी ज्योति सबमें चमके सबमें उसी का प्यार रे
मन मन्दिर में दर्शन कर ले उस प्राणों के प्राण का

2. तीरथ जाये मन्दिर जाये–2 अनगिनत देव मनाय रे
दीन रूप में प्रभु खड़े है देख के नैन चुराय रे
मन की आँखे खुल जाय तो क्या करना और ज्ञान का

3. कौन है ऊँचा कौन है नीचा सब है एक समान रे

प्रेम की ज्योत जगा हृदय में सब में प्रभु पहिचान रे
सरल हृदय को शरण में राखे प्रभु भोले नादान रे

145

नाम गुरू देव का दिल के जख्म को भरता है
दर्द में देखो दवाई का काम करता है

1. हो गया दिल जो दुखों से तुम्हारा गर जख्मी
नाम गुरूदेव का मरहम का काम करता है

2. दुख से व्याकुल हो अगर नींद न आती हो तुम्हें
नाम हीं नींद की गोली का काम करता है।

3. मेरे दुखते हुए दिल को गुरू ने चैन दिया
मेरे जख्मों को भरा और मुझे आराम दिया
बात में सच है गुरू नाम जख्म भरता है।

4. दुख में तुम कैसे जियो ये जो जानना चाहो
दुख में भी जीने का गुरूवर से राज मिलता है।

146

न कोई क्रिया कर्म कराया न कोई कर्म काण्ड किया
मेरे सतगुरू प्यारे ने सीधे आतम का ज्ञान दिया

1. हम अपने प्रभु से पूछ रहे है प्रभु जी तुम कहाँ बसते हो

प्रभु ने हंस करके फरमाया तेरे दिल में बसते है

2. आतम में हीं है परमातम ये सतगुरू ने बतलाया
तेरे अंदर बाहर बसा हूँ मैं तुझमें तू मुझमे समाया

3. आतम आतम करके तू मुझमें हीं बस रमता जो
मेरे भक्ति प्रेम के रस में निश दिन निश दिन पगता जा

4. मैं न तुझसे भिन्न हूँ प्यारे हर सांस मेरा अंश है प्यारे
में हूँ तेरा तू है मेरा मैं और तू एक है प्यारे

5 .जितना तू मेरा भजन करेगा उतना में तेरे पास रहूँगा
क्योंकि भजन हीं मुझको भाये, भाव से जो तू मुझको पूजे।

147

नूर जब बरसेगा तेरा कोई खालीं न जायेगा–2
मेरे गुरूवर के दर से कोई भी प्यासा न जायेगा

1. तेरी रहमत के साये में हम जवान हुए है–2
तेरी नजरों की छाव में हम आबाद हुए है–2
तेरी महर की तुकत हीं कुछ है ऐसी
कि हकीकत आज हैं वो मेरी जो हमने
कभी ख्वाबों में थी देखी
नूर जब बरसेगा.....

2. तेरे हीं दर पे आके हर बसर मस्ती में खोता है–2
तेरे हीं दर पे आके हर दिल कुर्बान होता है–2
तेरे प्यार की कशिश हीं कुछ ऐसी है
कि तेरे दर पे आके दीवानगी भी तूफान बनती है।
नूर जब बरसेगा...

3. तेरी मस्ती के जैसी कोई भी मस्ती नहीं होगी–2
तेरी हस्ती के जैसी कोई भी हस्ती नहीं होगी–2
किस जुबा से करूँ शुक्रिया तेरी रहमतों का –2
कि दरिया दिली देखी जो तेरे दर पे ऐसी जमाने में
खुदाई नहीं होगी.....

148

नटवर नागर नन्दा, मजौ रे मन गोविन्दा

1. मथुरा में हरि जन्म लियो है
भये गोकुल नवचन्दा–भेजो रे मन.....

2. यमुना तट पर रास रचायौ–2
संगे गोपिन के वृन्दा ... भजो रे मन...

3. काली दह में कूद पड़े जब –2
फण फण नृत्य करनन्दा... भजो रे मन

4. मोर मुकुट मकराकृत कुन्डल–2

सांवरी सूरत मुख चन्दा..... भजो रे मन

5. तज गोपिन द्वारिका धाये–2

डारि प्रेम को फन्दा.. भजो रे मन.....

6. द्रोपद सुता को चीर बढ़ायो–2

थके कुरू मतिमन्दा..... भजो रे मन.....

152

नहीं मिलेंगे नहीं मिलेंगे प्रेम बिना प्रभु नहीं मिलेंगे

माला कितनी जप ले चाहे प्रेम बिना हरि नहीं मिलेंगे

1. झूठे जग में दिल है लगाया जीवन अपना यूँ ही गँवाया

उजला जीवन दाग बनाया शुद्ध मन जिसका भगवान उसका

2. बन बन भटके चैन न पाया अंग भभूत और तिलक लगाया

सोया मनवा न ही जगाया सारी उमर कुछ समझ न पाया

3. चाह जहाँ राह वहीं है प्रेम जहाँ है पूजी वहीं है

प्यार जहाँ हो प्रभु वहीं हे शान्ति जहाँ हो हरि वहीं है।

153

ना जाने इन्हें हम क्या समझे

जो इनपे भरोसा कर बैठे

उम्मीद में इनके वादों पर

दिल नजरे तमन्ना कर बैठे

1. कल रात को इनकी महफिल में

नजरे आम की दावत थी

जब हमसें जरा टकराई नजर

बल खाके ये परदा कर बैठे

2. सब खो कर हम कुछ पा न सके

ये हमसे अलग हम इनसे अलग

दुनिया जिसे देखे और हँसे

हम ऐसा तमाशा कर बैठे

3. इस शोख नजर की मस्ती का

अन्दाज किसी से क्या होगा

पड़ जाये अगर मैखाने पे

मैखाना भी तौबा कर बैठे।

154

नित गिरधर के गुण गा गा के मीरा तो दीवानी हो ही गई

कह कह कर सब हार गये पर महलों मे वो रह न सकी

1. जो प्रीत थी मन मोहन से

वो प्रीत छिपाये छिप न सकी
नित साधू जनों में जा जा करके
वो तो प्रेम दीवानी हो ही गई।

2. राणा ने किया फिर उस पर जुल्म
वह जहर प्याला पिला गया
वह तो ज्ञान की ज्योति जला ही गई
हाथों में मंजीरा ले करके

3. तन सौप दिया प्रभु चरणों में
इस दुनिया से अब काम कहाँ
कुल की मर्यादा तोड़ चली
घनश्याम प्रभु का धाम जहाँ
बृन्दावन में वो आन बसी

155

प्रीति गुरू लगाये बैठे है
हम तो सब कुछ भुलाये बैठे है।

1. आपने राह जो दिखाई है।
उसपे पलके बिछाये बैठे है

2. आप शम्मा है जग की महफिल की

हम तो तन-तन सजाये बैठे है

3. मन्दिर जाने से हमको मतलब क्या
दिल ही मन्दिर बनाये बैठे है

4. मूर्ति की हमको जरूरत क्या
हम तो दिल में बसाये बैठे है

5. कोई दौलत न हमको चाहिये
हम खजाना छुपाये बैठे है

6. हमको अपने में वो मिला लेंगे
ये ही आशा लगाये बैठे हैं

7. हमको धूनि नहीं रमानी है
हम तो धुन में समाये बैठे है।

156

प्रीत गुरू से कर ले मनवा गुरू तेरे हम दम है
गुरूवर की कृपा की छाया साथ तेरे ही हमदम है।

1. साथी संगी सम्बंधी सब मीत तेरे मतलब के है
सुख में तुझको घेरे रहते दुख में साथ नहीं देते है।
गुरूवर ही है सच्चे साथी सुख दुख में संग रहते है।

2. ज्ञान गुरू में कितना है ये थाह न पा सकता कोई

अनुभव गम्य है प्यार गुरू का वर्णन कर न सका कोई
छोड़ के जग की प्रीति को तू आज गुरू का संग कर ले

3. गुरूवर मेरे आतम ज्ञानी ज्ञान से झोली भर देंगे
सुख दुख से उपराम करा कर भव से पार लगा देंगे
भव से तरना हो यदि तुझको आज गुरू का संग कर ले

157

परमेश्वर को न हीं भुलाना
वो तो हमारा मालिक है।
घट-घट में है वो हीं रमता
वो हीं तो प्रतिपालक है।

1. न तू लाया, न ले जाना
फिर क्यों इतनी मारा-मारी
चीज यहाँ की यहीं रहेगी
वो हीं उसका मालिक है।

2. देखने वाला देख रहा है।
कुछ भी उससे छिपा नहीं है।
जैसे चाहे वो नाच नचाये
डोरी उसके हाथ है।

3. उनकी दया से सब कुछ होता,
अनहोनी को होनी करता।
प्रेम की पहले प्यास जगाये
अमृत पीना बाकी है।

158

प्रभु ऐसा करो अब यतन लगन मेरी छूटे नहीं
तेरे प्यार की ऐसी लगन प्रभु जी अब छूटे नहीं

1. नित उठ गुरूवर दर्शन करने तेरे द्वारे आऊँ
जब आऊँ तेरे दर पर तेरे तरी हीं हो जाऊँ
हो जाऊँ मैं ऐसी मगन लगन मेरी छूटे नहीं

2. अब तक गुरूवर मैने तुझसे आँख मिचौली खेली
तुमने मुझको प्यार किया पर मै न समझी पगली
फिर हो न ये गलती कभी लगन मेरी छूटे नहीं

3. बार-बार ये छोड़ा पकड़ी लगती नहीं भली है
गुरू मिला करतार तो फिर काहे की कमी है
गुरू दीन्हा यही वरदान लगन मेरी छूटे नहीं

159

पतझड़ न फिजा है न तो गर्दो गुबार है

1. मस्तो की जिन्दगी में हमेशा बहार है
जिन्दा दिली जहाँ है हम उस अंजुमन के है।
हम आशिके वतन है मगर खशु वतन के है।
पसंद भी है तो मुंचा दहन के है।
हम बुलबुले सैदा है मगर उस चमन के है।
मस्तो की जिन्दगी में हमेशा बहार है।

2. कोई भी अर्जो जिस्म के खामोश नहीं है।
वह ये जहाँ के उनको मगर जोश नहीं है।
सब देखते सुनते भी है बेहोश नहीं है।
पर अपनी ही हस्ती की उल्टे होश नहीं है।
है चूर नशे में ही नशे का खुमार है।
मस्तो की जिन्दगी में हमेशा बहार है।

3. फौलाद तसव्वर की शरारत मरोड़ दी
तर्को की जो जंजीर बधी थी वह तोड़ दी
हर ख्वाहिशे हवा की है एक चाल मोड़ दी
मल्लाह के हाथों में ही किश्ती छोड़ दी
अब डूबी है सागर में या सागर के पार हो
मस्तों की जिन्दगी में हमेशा बहार है

4. महबूब की जब याद मे आ जाते है आँसू
आधा दिये हस्ती को हिला जाते है आँसू
सैलाबे आबे इश्क बढ़ा जाते है आँसू
आसूँ के बिन्दु बन के बंता जाते है आँसू
दरिया है दिल की मौज है मीठी पुकार है आँसू
मस्तों की जिन्दगी में हमेशा बहार है।

160

फूलों में सज रहे है श्री वृन्दावन बिहारी–2
और साथ सज रही है श्री वृषभान की दुलारी.....

1. टेड़ा सा मुकुट सर पे रखा है किस अदा से –2
करूणा बरस रही है करूणा भरी निगाह से–2
बिन मोल बिक गयी हूँ जब से छवि निहारी.....

2. बइया गले में डाले जब दोनों मुस्कुराते –2
सबको ही प्यारे लगते सबके की मन को भाते–2
इन दोनों पे मैं सदके–2 इन दोनों पे में वारी.....

3. श्रृंगार तेरा प्यारे शोभा कहूँ क्या उसकी–2
इतपे गुलाबी पटका ओ पटका–2
उतपे गुलाबी साड़ी.....

4. नीलम से सोहे मोहन, स्वर्णिम सी सोहे राधा–2
एक नन्द का है छोरा ओ छोरा–2
उतभान की दुलारी.....

6. चुन चुन के कलियां जिसने बंगला तेरा बनाया–2
दिव्य आभूषणों से जिसने तुझे सजाया–2
उन हाथो पे मैं सदके, उन हाथों पे मैं वारी.....
होली

161

फाग खेलन बरसाने आयो है नटवर नन्द किशोर
नटवर नन्द किशोर लाला–2

1. घेर लई सब गली रंगीली, छज्जये रही सब घटा छबीली–2
ठप ढोल–2 मृदुंग बजाये है–2 वंशी की झकझोर.. फाग खेलन

2. झुरमिल के सब सखियां आई उमड़ घटा अंबर पे छाई–2
अबीर गुलाल उड़ाये है–2 मारग भरी झोर.. फाग खेलन...

3. भईया दीज की घोर अंधियारी, दीखत नाथे कोई न और नारी–2
राधे ने सैन चलाये है पकड़ो माखन खेर–2
इन गलियन न काम कहा तेरो–2 इन गलियन....
फाग खेलन.....

4. सखियन ने पकड़े गिरधारी नर ते श्याम बनाये दीये नारी–2
कठ लहंगा पहराये है, दे काजल की डोर..... फाग खेलन

5. जो लाला घर जानो चाहो, तो होली की फगुआ–2
श्याम ने सखा बुलाये हैं, बाँटत भर–भर झोर.....

162

बड़ा सम्बल हमें है तुम्हारा प्रभु
जीते हम उसी के सहारे प्रभु

1. अरे प्यारे प्रभु जो तुम न देते सहार
डूब जाते भंवर में जी हम तो प्रभु
बड़ा संबल हमें.....

2. अरे प्यारे प्रभु दुख जो न सुनते हमारा
होता गारद ये जीवन हमारा प्रभु
बड़ा संबल हमें.....

3. अरे प्यारे प्रभु होता न जो ध्यान हमारा
ध्यान फिर कौन रखता हमारा प्रभु
बड़ा संबल हमें

4. अरे प्यारे प्रभु मुखड़ा दिखाते ही रहना

मुख तुम्हरौ हीं संबल हमारा प्रभु

बड़ा संबल हमें.....

157

बरसा दाता सुख बरसा आँगन आँगन सुख बरसा

चुन चुन काँटे नफरत के प्यार अमन के फूल खिलाये जा

1. कोई तन से है दुखी कोई मन से है दुखी

हे प्रभु दया करो कुल जहाँ हो सुखी

सबके सुखो की तुम हो दवा

2. बैर द्वेष को मिटा तू सकल संसार से

फिर जहान में रहूँ इस जहान में रहे

मिल के सारे प्यार से मानव से मानव हो न जुदा

3. झोलिया सुखों से चाहे दाता भर भी दे

पर गुरू हमें सबर और शुक्र भी दे

हर पल मागे यही दुआ

163

बे सहारो का तू सहारा है

गम के मारो का तू गुजारा है

1. हमने दर-दर पे सर झुका देखा-2

तेरे जैसा न कोई द्वारा है

2. सब ये कहते है पार कर देंगे-2

न तो कश्ती है न किनारा है

3. दोनों हाथो से तूने थामा है-2

तेरे भक्तो ने जब पुकारा है

4. सोच कर हम है इतना खिल उठते-2

हम तुम्हारे है तू हमारा है

5. तेरे भक्तो को जिसमें सुख सारे -2

वो मुकद्दर का तू सितारा है

164

ब्रज के नन्द लाला राधा के सावरियां

सभी दुख दूर हुए जब तेरा नाम लिया

1. मीरा पुकारे जब गिरधर गोपाल

बन गया अमृत भी विष का भरा प्याला

कौन मिटाये उसको जिसको बचाये नन्दलाल

सभी दुख दूर हुए जब तेरा नाम लिया

2. नैनो मे श्याम बसे मन मे बनवारी

सुध बिसराय गई मुरली की धुन प्यारी

मन के मधुबन मे रास रचाये रसिया

सभी दुख दूर हुए जब तेरा नाम लिया

3. जब तेरे गोकुल मे आया दुख भारी

एक इशारे पर सारी विपदा टाली

मुड़गया गोवर्धन जहाँ तूने मोड़ दिया

सभी दुख दूर हुए जब तेरा नाम लिया

165

बलवानो के पास है ताकत मेरी ताकत आप है

धन वानो के पास है दौलत मेरी दौलत आप है

1. कोई द्वारे-द्वारे जाता है कोई महफिल -2 गाता है

कोई पनघट-2से अपने हृदय की प्यास बुझाता है

मेरी तमन्ना मेरी हसरत मेरी तो चाहत आप है

2. कोई मंदिर मस्जिद मे जाये कोई जाता काबा काशी है

कोई तप करता तपोवन मे और कोई मथुरा वासी है

लोगो के है तीरथ लाखों मेरा तीरथ आप है

3. जन्मों से तलाशा है जिसको वो मेरी तो मंजिल है आप

तुझे पाके कैसे भुला दूंगा इस जीवन का हासिल है आप

मेरी दुनिया मेरी खुशिया मेरी तो है जन्नत आप

4. गुरूपूनो मे जो आता है सच्ची खुशिया वो हीं पाता है

तेरे चरणों मे सिर रख करके वो सोया भाग जगाता है

मेरे मालिक मेरे दाता मेरी तो है किस्मत आप

166

बाँके बिहारी कजरारे मोटे-मोटे तेरे नैन

नजर न लग जाए ओए नजर न लग जाये अहाय

1. काजल की कोरे ओहोये-2

मेरा जिगर मरोरे आए-2

रंग रस के घोले -2 बलिहारी रे

कजरारे मोटे-मोटे तेरे नैन..

2. तेरे मुकुट की लटकन ओहोये-2

अधरन की मुस्कन हाए हाय-2

तेरी बाँकी मटकन -2 बलिहारी रे

कजरारे मोटे-मोटे तेरे नैन..

3. तेरी प्रीत है ढ़ेड़ी ओहोये-2

तेरी प्रीत है ढ़ेडी अहाय-2

तेरी जीत है ढ़ेडी - मैं तो हारी रे ,

कजरारे मोटे मोटे.....

4. आँखों का काजल ओहोये ,.

तेरी नजर से घायल आहाय–2

तेरे प्यार मे पागल, कर डाली रे

कजरारे मोटे मोटे तेरे

167

बाँके बिहारी की देख छटा , अरी मेरो मन हे गयो लटा पटा–2

हाँ लटा–पटा–2 हाँ मेरो मन हे गयो लटा पटा

1. कब से खोजो बनवारी को ,

हाँ बनवारी को गिरधारी को –2

कोई बता दे उसका पता , अरी मेरो मन हे गयो लटा पटा

2. मोर मुकुट श्यामल तन धारी ,

कर मुरली अधरन सजी प्यारी –2

कमर मे बाँधे पीलो पटा .....

अरी मेरो मन है गयो .....

3. पनिया भरन यमुना तट आई ,

बीच मे दिल गये कृष्ण कनाई–2

फोड़ दियो पानी को घड़ा –2

अरी मेरो मन गयो .....

4. डेड़ी नजरे लट घुँघराले ,

मार रही मेरे दिल पे कंटारी –2

श्याम वर्ण जैसे काली घटा.....

अरी मेरो मन है गयो

5. मिलते है उसे बाँके बिहारी ,

बाँके बिहारी स्नेह बिहारी–2

अरी राधे–राधे जिसने रटा–.....

अरी मेरो मन है....

168

बाँसुरिया कहाँ भूल आये , कृष्ण कन्हाई.....

बाँसुरिया कहाँ भूल आये , कुवँर कन्हाई.....

1. मोर मुकुट पीताम्बर सोहे ,

गले वैजेन्ती माला–2

नटखट छवि अति विराजे , जसुमति लेत बलइया....

बाँसुरिया.....

2. तेरी बंशी ऐसी बाजी ,

दौड़ी आई गइया–2

वृन्दावन मे रास रचायौ , बैठ कदम की छइया.....

बाँसुरिया.....

3. तेरी बंशी ऐसी बाजी ,

दौडी आई सखियाँ–2

दोऊ काग परस्पर खेले ,

नाचे ता ता थइया .....

4. काली धाय पे नाचन आयो ,

छोटो सो कन्हाइया –2

ठुमक–ठुमक के नाच दिखावे,

बलदाऊ को भइया.....

5. ललिता बोली विशाखा बोली ,

फोरी याने मटुंकिया–2

लपक झपक के माखन खायो ,

जसुमति तेरो छइया.....

169

बृज मे आज आनन्द भये–2

1. जब ठाकुर ने जन्म लियो है–2

जगत पहरूआ सोये गये–2

2. ले बसुदेव चले गोकुल को –2

झपट यशोदा से बदल लये–2

3. गहरी यमुना शरण चाहत है–2

तो हरि ने चरण पसार दये–2

4. कंस को मारन वंश बढावन–2

मथुरा मे हरि वास किये–2

170

बोलो भक्तो के भावों को कैसे भगवन भुलायेगें

यदि नाथ पतित पावन होगा तो पतितो को अपनायेंगे

1. ऐहसान करेंगे हाँ मुझ पर

यदि मुझको दास बनायेंगे

वो दीना नाथ कहाते है

दीनो की लाज बचायेंगे

2. वह दिन भी होगा करूणा कर

हम पर करूणा बरसायेंगे

हम रो रोकर अर्ज सुनायेंगे

वह हंस कर पास बुलायेंगे

3. पतवार नाम की लेंगे हम
भक्ति की वायु चलायेंगे
इस युक्ति से काया नौका
भव सागर पार लगायेंगे
4. हम जल बिन्दु बहायेंगे
स्वामी के चरण धुलायेंगे
इन चरणो की रज धो
धो करके एक दिन
गंगा बन जायेंगे.....

171

भज ले नाम सुख धाम तेरे पूरण हो सब काम
1. काशी जाये मथुरा जाये तीरथ करे तमाम
जाये हिमालय करो तपस्या नही पाये विश्राम
2. जटा बढायो भस्म रमायो जंगल किया मकान
सतगुरू की संगत नही कीन्ही मिले न आतम राम
3. आसन बाधो भोजन त्यागो साधो प्राणायाम
घट मे ब्रहम स्वरूप नही चीन्हा कौन जतन निष्काम
4. संत समागम करो निरंतर जग से हो उपराम

ब्रहमा नन्द परम पद पावे जो होवे निष्काम

172

भरोसा कर तू ईश्वर का तुझे धोखा नही होगा
ये जीवन बीत जायेगा तुझे रोना नही होगा
1. ये जीवन धूप छाया है हंसी मे ही विपत काँटो
बितानी ही ये माया है
2. जो दुख आये तो सह लेना जो कहना हो कभी जग से
तो प्रभु से ही तुम कह लेना
3. जो आया है सो जायेगा कभी मत सोच कर बन्दे
करे जा याद सतगुरू को जो करना है सो भरना है
4. कहाँ ये था कहाँ तू था कभी तो सोच ले बन्दे
झुका कर शीश को कह दे प्रभु बंदे प्रभु बंदे

173

भक्ति की शक्ति को न दुनिया समझ पाती
भक्ति मे वो शक्ति है प्रभु को भी बुला लाती
1. सबरी अहिल्या ने इतना इंतजार किया
अवतार लिया प्रभु ने उनका उद्धार किया
आते है वहाँ भगवन जहाँ भक्ति प्रकट होती

2. ध्रुव मीरा और प्रहलाद ने कितने कष्ट सहे
लेकिन न तजी भक्ति चाहे जितने कष्ट सहे
भक्ति की ऐसी मिसाल हमको यही बतलाती

3. तुलसी और सूर कवि पद द्वन्द मान करे
अनंत-अनंत अपार प्रभु का यश गान करे
भक्ति की अमर रचना सारी दुनिया है गाती

4. जिसने भी बुलाया उसे वो दौड़ के आया है
अपने भक्तो का यश प्रभु जी ने बढ़ाया है
भक्त उसे प्यारे और भक्ति उसे भाती है

174

भिक्षा दे दो मैया पिंगला
जोगी खड़ा है द्वार , मैया पिंगला
जोग उतारो राजा भरतरी
रानी रही पुकार राजा भरतरी

1. कैसे देखूं जोग तुम्हारा खाऊ
जहर कटार राजा भरतरी
करम लिखा न मिटे किसी से
कारण हारा करतार मैया

2. अलख जगाऊँ महलो में राजा राजा
अलख निरंजन जपूं री मैया जो भवसागर पार मैया

3. दया न आई ओ निरमोही क्यों छोड़ चले घर बार राजा
जोगी तो जंगल का वासी कैसा धर संसार मैया

4. दया न आई ओ निरमोही क्यों छोड़ा घर बार राजा
अलख निरंजन जपो री मैया हो भंव सागर पार

175

भरों खुशियों से -2 सबके दामन
कि कभी कोई दुखी न रहे-2
यूँ ही बरसे-2 रहमतो का सावन
कि हर कोई सुखी ही रहे

1. प्यार से भरे हो दिल चेहरो पे नूर हो
मीठे बोल वाले भक्त आपके हजूर हो
ऊँचा उजला -2 सबका हो जीवन कि कभी कोई

2. तन से जो निर्बल सभी बलवान हो
धन से कमी है जिन्हें वो भी धनवान हो
मिले सबको खुशी मन भावन की कभी कोई

3. प्रीत प्यार महके घर घर मे दिवालियाँ

सन्तो के मेले हो नित खुशहालियाँ
गूंजे तू ही तू –2 हर घर की आंगन कि कभी

4. आठो पहर करे तेरी आराधना
सारे भक्त ये ही करे हाथ जोड़ प्रार्थना
माँगे भक्ति –2 निर्मल पावन कि कभी कोई ....

176

भव सागर से तारे गुरू तेरो वचना
तेरो वचना गुरू तेरो वचना

1. मन इन्द्रियन को पार न पावे
जीव ईश का भरम न जाने
गुरू समुझावै वहीं आत्मा

2. वेद शास्त्र मेरे समझ न आवै
कर्म धर्म सब व्यर्थ ही जावै
जब तक न देवै गुरू नैन चश्मा

3. जग मे प्रेम सत्यप्रेम तू चाहे
गुरू वचन मे चित्त लगावें
पार लगावै तेरो गुरू ज्ञनवा

4. हठ वैराग्य तू धारण कर ले

विरह टीस हदय मे सजा ले
करिहै गुरू जी तेरी नई रचना

177

भक्तो के लिये आपने क्या क्या नही किया
लेकिन किसी के सामने चर्चा नही किया

1. मायूस होके आई थी बच्चे की आस थी
बारह बरस से सूनी उस माँ की गोद थी
चंदा से देके दो–दो लाल उसको हंसा दिया

2. हालात ने रूलाया था कंगाल कर दिया
दर्शन को आई आपके पर कुछ नहीं कहा
उसको दिला के नौकरी खुशहाल कर दिया

3. बीमार दर पर आये जो उनको जिला दिया
जिनको न दवा ठीक करे जीवन उन्हे दिया
ऐसा करिश्मा आपने पहले नहीं किया

4. क्या क्या नहीं किया भक्तो के वास्ते
भटके हुओ के आपने दिखाये है रास्ते
देकर ज्ञान आपने जीवन बना दिया

5. करते हो भूल जाते हो कितने दयालू हो

सब पर कृपा है आपकी कितने कृपालू हो
भक्तो के लिए आपने सब कुछ लुटा दिया
6. जब से तुम्हे बिठा दिया दिल की दुकान में
जीवन मे जो भी चाहा था वह सब है पा लिया
इन भक्तो ने तो घाटे का सौदा नहीं किया
लेकिन किसी .....

178

भजो नारायण भजो गोपाल
1. हंस-हंस राधा प्यारी पूछन लागीं
श्याम तोरे नयनन मे कजरवा कैसे लाग
हम तो राधा प्यारी पढ़न गये थे
कलम दवतिया की सियहिया मोरे लाग
2. हंस हंस राधा प्यारी पूछन लागीं
श्याम तेरी एडिन मे महावर कैसे लाग
हम तो राधा प्यारी बगिया गये थे
बगिया की मेंहदी एड़िन मोरे लाग
3. हंस हंस राधाप्यारी पूछन लागीं
श्याम तेरी धोती मे हरदिया कैसे लाग

कपड़े तो राधा प्यारी धुलन गये थे
धोबिया धरे धोतिया में हरदिया लाग
4. इतना सुनकर राधाप्यारी ने
बंद कर लीनो है चन्दन किवार
खुल गै है चोरी अब श्याम तुम्हार

179

भगवान मेरा सहारा तेरे सिवा नहीं है
बस एक तू ही तू है कोई दूसरा नही है
1. किसको कहूँ मे अपना स्वारथ के मीत सारे
झूठे जहाँ मे मेरा कोई आसरा नहीं है
2. पूजा भी न कर पाऊँ चंदन कहाँ से लाऊँ
भूट क्या चढ़ाऊँ अपना तो कुछ नही है
3. इतना तो समझती हूँ तू है मेरा मै तेरी
इसके सिवा मेरी कोई साधना नहीं है
4. तू ही बता दे भगवन मेरा कहाँ ठिकाना
भगवन मुझको अब तक खुद का पता नहीं है

180

मेरे दिल की भक्ति को गुरू जी समझते है

कौन याद करता है गुरू जी समझते है

1. जिसने गुरू वचनो को दिल से लगाया है
उसकी हर धड़कन मे गुरू जी धड़कते है

2. जिसने गुरू भक्ति मे सब कुछ लुटाया है
उसकी हर चाहत को गुरू पूरा करते है

3. जिसने कर लिया दिल मे पहली बार घर गाालिब
उसकी हर आहट को गुरू जी समझते है

4. जिसने अपने जीवन मे गुरू को सजाया है
उसके सारे कष्टों को गुरू जी हरते है

5. यूँ तो इस सत्संग मे कितने लोग आते है
दिल कौन जीतेगा गुरू जी समझते है

6. ज्ञान प्यारे सतगुरू से हम सभी लेते है
कौन उसे निभायेगा गुरू जी समझते है

181

मेरी जिन्दगी मे क्या था तेरे मिलन से पहले
मै बुझा हुआ दिया था तेरे मिलन से पहले

1. मै फलक था एक जर्रा मेरी क्या थी अपनी हस्ती
यों थपेड़े खा रहा था तूफा मे जैसे कश्ती

मेरा कौन आसरा था तेरे मिलन से पहले

2. ख्वाहिशें करी जहाँ में खाली थी मेरी झोली
मेरी बड़ गई है कीमत तूने भर दिये है मोती
मुझे कौन पूँछता था तेरी बन्दगी से पहले

3. यूँ तो है जहाँ मे लाखो तेरे जैसे कौन होगा
तेरे जैसा बन्दा परवर भला और कौन होगा
दर-दर भटक रहा था तेरे मिलन से पहले

182

मन लागा गुरू चरनन मे भरम अंदेशे दूर हुए

1. चरण कमल अब मन धारो तन मन धन गुरू पर वारो
सतगुरू मेरे प्राण बसे भरम अंदेशे दूर हुए

2. हम पे दया सतगुरू की है चरणों की भक्ति दी है
दासन दास अब सुख सोवे भरम अंदेशे दूर हुए

3. गुरू किरपा से मन जागा सहज-सहज चरनन लागा
छोड़ के सब झझट झगड़े भरम अंदेशे दूर हुए

4. शरण पड़ी तब सूझ पड़ी जनम वृथा गुरू भक्ति के
गुरू भक्ति बिन न कोई तेरे भरम अंदेशे दूर हुए

183

मेरा सतगुरू लखदातार अब मै क्या माँगू
क्या माँगू मै क्या माँगू
ये दीनो का दातार अब मै क्या माँगू

1. पहले पहले बहुत मनाया इसने भी तों खूब नचाया
फिर सौदा पट गया यार अब मै क्या माँगू

2. रिश्ता गुरू से तेंरा निभेगा हरदम तेरे साथ चलेगा
ये देव बड़ा दिलदार अब मैं क्या माँगू

3. गुरू का बनकर देख ले बन्दे कट जायेगें सारे फन्दें
मेरा जीवन दिया संवार अब मैं क्या माँगू

4. ममता की मूरत दिखाता है कभी सखा बनकर मिलता है
मुझे मिला जहाँ का प्यार अब मैं क्या माँगू

184

मेरा उद्देश्य हो प्रभु आज्ञा को तेरी पालना
हर पल कमाई धर्म की अर्पण तेरे कर डालना

1. मानव के नाते से पिता जाऊँ कभी जो भूल मै
मेरी विनय है आप से बनकर सखा सम्भालना

2. जितने भी श्रेष्ठ कर्म है श्रद्धा प्रेम से करूँ

आये अभद्र भाव जो उनको सदा ही टालना

3. रक्षा मेरी जो तुम करो रक्षा तेरी मे मै रहूँ
अपने गुणों के सोचे मे जीवन को मेरे ढालना

4. मृत्यु का मुझको भय न हो माँगू यही वरदान मै
बुद्धिकी भिक्षा को झोली मे मेरी डालना

185

मेरे सतगुरू जी का प्यार अजब निराला है
जो आ जाये दरबार वो किस्मत वाला है

1. ऐसा करिश्मा उनका देखा दुख मे भी मैने हंसना सीखा
जीवन का सौपा भार गुरू रखवाला है ओ मेरे.....

2. पल-पल मेरी रक्षा करता केवल सच का साथ है देता
कराया मुझे दीदार प्यारा-प्यारा है ओ मेरे .....

3. गुरू ही केवल तारनहारा गुरू ही केवल मेरा सहारा
शुकराना गुरू हजार की तू हमारा है ओ मेरे .....

186

मेरे सिर पर रखदो गुरू जी अपने ये दानों हाथ
देना ही तो दीजिये जनम-जनम का साथ

1. देने वाले गुरू भगवान तो धन और दौलत क्या माँगे

गुरू प्रभु से माँग तो फिर नाम और इज्जत क्या माँगे
मेरे जीवन मे अब कर दे किरपा की बरसात

2. गुरू चरणों की धूली धन दौलत से मंहगी है
एक नजर किरपा की गुरू जी मान इज्जत से मंहगी है
मेरे दिल की तमन्ना यही है करूँ सेवा तेरी दिन रात

3. सुना है शरणागत को अपने गले लगाते हो
ऐसा मैने क्या माँगा जो देने से घबराते हो
चाहे जैसे रखो गुरू जी बस होती रहे मुलाकात

4. झुलस रहे है गम की धूप मे प्यार की छइया कर दे तू
बिन माझी के नाव चले न अब पतवार पकड़ ले तू
मेरा रस्ता रौशन कर दे छायी अंधियारी रात

187

मेरा नाथ तु है मेरा नाथ तू
नही मैं अकेला मेरे साथ तू है

1. चला जा रहा हूँ मै राह पर तुम्हारी
राहो मे आये जो तुफान भारी
थामे हुए जो मेरा हाथ तू है

2. मेरा ईष्ट तू है मै तेरा पुजारी

तेरा खेल मै हूँ तू मेरा खिलाड़ी
मेरी जिन्दगी की हर श्वास तू है

3. तेरा दास हूँ मै तेरे गीत गाऊँ
तुझे भुलाके भी न कभी भूल पाऊँ
तू ही दीन बन्धु मेरे साथ तू है

188

मेरे बाँके बिहारी सावरियाँ
तेरा जलवा कहाँ पर नही है

1. आँख वालो ने तुझको है देखा
कान वालों ने तुझको सुना है
तेरा दर्शन उन्ही को हुआ है
जिनकी आँखों पे परदा नही है

2. लोग पीते है पी-पी के गिरते
हम तो पीते है गिरते नही है
हम तो पीते है सतसंग का
प्याला ये अंगूरी मदिरा नही है

3. ये नशा जल्दी चढ़ता नही है
चढ़ जाये उतरता नही है

लोग पीते है दुनिया के डर से

हमको दुनिया की परवाह नहीं है

4. सुबह शाम मैने तुझको पुकारा

तेरे नाम का ले के सहारा

तेरे भक्तो ने जब भी पुकारा

तेरे आने मे देरी नहीं है

189

मै तो कहूँ बजा के ढोल सतगुरू मेरा है

1. कोई कहे हल्का कोई कहे भारी –2

मैने लिया तराजु तोल गुरूवर मेरा है

2. कोई कहे काला कोई कहे गोरा–2

वो तो मेरा चन्द्रचकोर गुरूवर मेरा है

3. कोई कहे मंहगा कोई कहे सस्ता–2

मैने लिया अमोलक मोल गुरूवर मेरा है

4. कोई कहे घर मे कोई कहे वन में –2

वो तो बैठा है सत्संग मे गुरवर मेरा है

5. भक्तो का है प्यारा गुरूवर–2

वो तो आवत प्रेम के मोल गुरूवर मेरा है

190

मेरे जर्जर है पाँव सम्भालो प्रभु

अपनी पलको की छाँव में बिठा लो प्रभु

1. माया ममता की गलियो मे अटका हुआ

मै हूँ तृष्णा के पिंजरे मे अटका हुआ

डाला विषयो ने जाल निकालो प्रभु

मेरे जर्जर .....

2. कोई पथ न किसी ने सुझाया मुझे

फिर भी देखो कहाँ खींच लाया मुझे

तुमसे मिलने का चाव मिला है मुझे

मेरे जर्जर .....

3. मन को मुरली की धुनका सहारा मिले

तन को यमुना का शीतल किनारा मिले

हमको गोकुल के गाँव मे बसा लो प्रभु

मेरे जर्जर .....

4. गहरी नदिया की लहरें दीवरनी हुई

टूटे चापू पतवार पुरानी हुई

अब डूबे की नाव सम्भालो प्रभु

191

मुझे गरज न और जमाने की एक तेरा सहारा काफी है
मझधार मे डूबने वालों को एक गुरू का सहारा काफी है

1. बन बन के सहारे टूटते है ये रस्म पुरानी है जग की
वो टूटे कभी और छूटे न वो तेरा सहारा काफी है

2. नजरों को धोखा देते है दुनिया के झूठे नजारे
जो कायम हमेशा रहता है वो तेरा नजारा काफी है

3. जहाँ रिश्वत और सिफारिस से काम नहीं बन सकता है
मेरी बिगड़ी बन जाने मे इक तेरा इशारा काफी है

4. दुनिया से मुझको मतलब क्या दुनिया और दुनिया दारी से
सतगुरू की दया के बरसे बादल से केवल इक धार ही काफी

192

मुझको खजाना नाम का है आज मिल गया
मै झूमती हूँ मौज से सरताज मिल गया

1. सतगुरू की शरण आये जो भाग्यवान हो
उनकी ही एक नजर से अधियारा दूर हो
वो देता भेद ज्ञान का दिलदार मिल गया

2. मालिक की ये सब मौज है प्यारा गुरू दे दिया
मुझ ऐसे करम हीन को प्रभु ने अपना लिया
जीवन की नइया का मुझे अब माझी मिल गया

3. मै कैसे गुरू के प्रेम की महिमा को गा सकूँ
शक्ति नहीं जुबा मे उनके गुण को गा सकूँ
कुल मालिक मुझे ये ज्ञान का भण्डार मिल गया

193

मंत्र दीक्षा मुझे जब से गुरूवर ने दी
यूँ लगा मेरा जीवन सफल हो गया
आस्था मेरी गुरूवर मे बढ़ने लगी
और विश्वास मेरा अटल हो गया

1. मै गया जब से गुरूवर के सतसंग मे
मेरा तन मन रंगा उनके ही रंग से
रब से मिलने का रस्ता कठिन था बहुत
मिल गये मुझको सतगुरू सरल हो गया

2. साधु संतो की संगत मे जाने लगा
ज्ञान गंगा मे गोते लगाने लगा
सुन के गुरूवर की वाणी जो आँसु बहा

देखते देखते गंगा जल हो गया

194

मेरी एक ही तमन्ना ऐ सतगुरू पियारे
रहना न दूर हमसे लेना खबर हमारी

1. तू पास जिनके रहता रहता वहाँ सबेरा
तू दूर जिनसे होता होता वहाँ अंधेरा
तेरे बगैर गुरूवर दिन भी है रात काली
रहना न दूर .....

2. उल्फत का रंग तेरा कुछ ऐसा मुझपे छाया
बन कर तेरा दीवाना तुझको रिझाने आया
अब आस-पास तेरे बीते ये जिन्दगानी
रहना न दूर .....

3. बनकर के गुरू माझी भव पार तो उतारो
मै दास हूँ तुम्हारा एक बार तो पुकारों
समझू न रीत तेरी ऐसा हूँ मै अनाड़ी
रहना न दूर .....

195

मुझे तुम मिल गये सतगुरू खुदा से और क्या माँगू

खुदा जब मिल गया खुद ही दुआ फिर और क्या माँगू

1. जिगर मे आपकी सूरत नजर मे आपका जलवा
जिधर देखूँ तू ही तू है नजारो से मै क्या माँगू

2. मेरे जीवन के पतझड़ मे बहारे भेज दी तुमने
गिला पतझड़ से अब क्या हो बहारो से मै क्या माँगू

3. है सजदे मे झुके हम सब नजारा आपका पाया
मिली जन्नत यही मुझको खुदा जन्नत से क्या माँगू

4. बसा था जो सितारो मे जमी पर वो उतर आया
मिला करतार धरती पर धरा से और क्या मौंगू

5. चरण मे रख दिया ये सर तुम्हारे हो गये है हम
हुए जब आप ही मेरे जहाँ से और क्या माँगू

196

मिल गई सतगुरू कृपा से मिल गई
द्विव्य दृष्टि आत्मा की मिल गई

1. पीरो का है पीर मुर्शिद है मिला
तब से मेरे मन की आँखे खुल गई

2. सतगुरू मुझे साफ दर्पण है मिला
जिसमे नूरानी झलक है दिख गई

3. सतगुरू से द्वन्द का पर्दा हटा
आत्मा मे एकता है हो गई

4. सतगुरू सच्चा सौदागर है मिला
प्रेम के बाजार में मै बिक गई

5. ज्ञान प्रेम और भक्ति का मिश्रण मिला
जन्मों की हो मै मेरी है छुट गई

6. तेरे वचनों मे झुके मस्तक मेरा
शुक्रिया है सतगुरू है शुक्रिया
शुकराने विच शक्तिया है मिल गई

197

महामंत्र है ये जपाकर–जपाकर
हरि ऊँ तत् सत् हरि , ऊँ तत् सत्

1. लगी पूँछने यो हिमालय कुमारी
कि है कौन सा मंत्र कल्याणकारी
तो बोले यूँ उनसे महादेव शंकर
हरि ऊँ तत् सत् , हरि ऊँ तत् सत्

2. असुर ने जो अग्नि का खम्भा रचा था
तो निर्दोष प्रहलाद क्यों कर बचा था

जुबा पर यहि था हदय मे यहि था
हरि ऊँ तत् सत् हरि ऊँ तत् सत्

3. लगी आग लंका मे हलचल मचा था
तो घर फिर विभिषण का क्यूँ कर बचा था
लिखा था यही नाम कुटिया पर उसकी
हरि ऊँ तत् सत् हरि ऊँ तत् सत्

4. हलाहल का मीरा ने प्याला पिया था
कहो विष से अमृत कैसे किया था
दीवानी थी मीरा यही नाम पर वो
हरि ऊँ तत् सत् हरि ऊँ तत् सत्

5. सुना था कि हमने गणिका तरी थी
कहो कौन सी उसने भक्ति करी थी
पढ़ाया था तोते को ये नाम उसने
हरि ऊँ तत् सत् हरि ऊ तत् सत्।

6 कहो नाथ सबरी के घर कैसे आये जो
जो आये तो जूठे बेर कैसे खाये
जुबा पर यही था हृदय में यही था
हरि ऊँ तत् सत् हरि ऊँ तत् सत्

7. सभा में खड़ी द्रोपदी रो रही थी
वो लज्जा के आँसू से मुख धो रही थी।
बढ़ा चीर उसका यही रंग रंगा था
हरि ॐ तत् सत् हरि ॐ तत् सत्

8. हरि ॐ की एक माला बनाकर जपो
जपों रात दिन अपने दिल से लगाकर
करो कीर्तन और यही नाम गाओ
हरि ॐ तत् सत् हरि ॐ तत् सत्

9. अगर घेर ले दुष्ट चण्डाल कोई
नहीं पास तकदीर से ढाल कोई
निश्चय हो बोले उठे यूँ सम्भलकर
हरि ॐ तत् सत् हरि ॐ तत् सत्

10. हरि ॐ में इतनी शक्ति भरी थी
गरूण छोड़ धाये न देरी करी थी
हृदय में यही था जुबा पर यही था
हरि ॐ तत् सत् हरि ॐ तत् सत्

198

मानव तू अगर चाहे दुनिया को झुका देना

बस ईश्वर के दर पर सर अपना झुका देना।

1. राजी हो प्रभु जिसमें वह काम सही होगा
भगवान जो चाहेगा दुनिया में वही होगा
उसे अपना बना करके उलझन को मिटा देना

2. रक्षक है अनाथो का दुनिया का सहारा है
भव पार किया उसने जिसने भी पुकारा है।
उसे अपना बना करके उलझन को मिटा देना

3. धरती और सागर के रत्नो को जो पाना हो
आकाश में उड़ना हो या पाताल में जाना हो
डोरी परमेश्वर को पहले ही पकड़ा देना

4. चाहेगी सदा तुझको खुशियां और आशाएं
चमेगी चरण तेरे सब ओर सफलताएं
जीवन को पथिक उसकी राहो पे लगा देना

199

मेरे सतगुरू के सतसंग में जरा एक बार आना तुम
न दिल को चैन आ जाये तो वापस लौट जाना तुम

1. सभी अशगुन शगुन होगे मिटेगी विघ्न बाधायें
तेरा हर दुख न मिट जाये तो वापस लौट जाना तुम

2. सभी कारज सफल होगें फलेगीं तेरी आशाएं
तेरा दामन न भर जाये तो वापस लौटा जाना तुम

3. कहीं देखीं न देखोगे गुरू मस्तों की ये महफिल
तेरी किस्मत न खुल जाये तो वापस लौट जाना तुम

4. जरा चख कर तो देखा ज्ञान रस भरपूर में प्याला
न इनके हीं जो बन जाओ तो वापस लौट जाना तुम

5. अगर सौभाग्य से गुरू की नजर जो तुम पे पड़ जाये
तेरा सर खुद न झुक जाये तो वापस लौट जाना तुम

200

मीठे रस से भरो रे राधा रानीं लागे महारानीं लागे,
माने खारो खारो यमुना जीं को पानीं लागे.....

1. जमुना जी तो कारीं कारीं राधाजीं गोरीं-गोरीं
वृन्दावन में धूम मचावे बरसाने की छोरीं-2
ब्रज धाम राधा जू की, रजधानीं लागे..... माने खारो खारो.

2. कान्हा नित मुरलीं में टेरे, सुमरे बारम्बार-2
कोटिन रूप धरे मनमोहन तोऊँ न पावे पार-2
रूप रंग की छबीलीं पटरानीं लागे.....

3. न भावे मन माखन मिश्री अब न कोई मलाई-2

प्यारी जिबाड़िया ने भावे राधे नाम मलाई-2
वृषभान की लालीं तो गुड़ धानीं लागे.... माने खारो खारो.....

201

मुझे चरणों से लगा ले मेरे श्याम मुरलीं वाले
मेरीं श्वास श्वास में तेरा, हो नाम मुरलीं वाले

1. भक्तो की तूने कान्हा, विपदा है टारीं
मेरीं भीं बाँह थामो बाँके बिहारीं-2
बिगड़े बनाये तूने-2 हर काम मुरलीं वाले.. मुझे चरणों में

2. भक्तों के जीवन में हो तुम हीं आनन्द वर्षा
पाकें तुम्हें मिटे है जीवन की हर एक तृष्णा-2
बैचेन मन के तुम हीं, आराम मुरलीं वाले ... मुझे चरणों..

3. तमु हो दया के सागर, मैं हूँ प्रभु तुम्हारीं
दे दो जगह मुझे भीं, चरणों में बस जरा सीं-2
सुबह तुम हीं हो मेरीं, तुम्हीं शाम मुरलीं वाले... मुझे चरणों से

202

मुरलीधर की बजीं मुरलिया
यमुना जीं के पार कि सखियां छोड़ चलीं घर द्वार-2
मो मुकुट मकरोकृत कुन्डल

गले वैजयन्ती माल, कि सखियां छोड़ चलीं घरद्वारा–2

1. ब्रज की सखियां भोली भाली
मुरली सुनकर भई मतवाली–2
ललना को पलना में छोड़ा छोड़े खुले किवाड़–2 कि सखियां छोड़

2. उल्टे सीधे वस्त्र उतारे
हाथ का गहना पाँव में डाले–2
भूल चलीं कुंजन गलियां कर कर के श्रृंगार–2

3. ब्रज की सावरिया बड़ी दुखारी
जैसे जल बिन मीन विचारी–2
पंख लगाकर उड़ जाये वहाँ, जहाँ बस गये कृष्ण मुरार---
कि सखियां छोड़.....

203

मुझे रास आ गया तेरे दर पे सर झुकाना
तुझे मिल गई पुजारिन
मुझे मिल गया ठिकाना

1. इतना तो गम नहीं है चाहे रूठ दुनिया जाये
गम है तो इतना केवल कहो तुम रूठ न जाओ

2. तेरी बंदगी के पहले मुझे कौन जानता था

सर जो अब झुक गया है आता नहीं उठाना

3. तेरी सांवरी सी सूरत मेरे मन को भा गई
ओ सांवरे सलोने अब और न सताना

4. दुनिया की आफतों से आई हूँ तेरे द्वारे
आ जाओ प्यारे भगवन करके कोई बहाना

5. मेरी आरजू यही है दम निकले दर पे तेरे
अभी सांस चल रही है कहीं तुम चले न जाओ

204

मेरे गुरू देव पिया मेरे गुरू देव पिया
मैने दिल तुझको दिया–2

1. मेरे गुरूवर जो है प्यार करते मुझे
प्यार करके वो जीना सिखाते मुझे
ऐसे गुरूवर को पाके धन्य में आज हुई

2. मेरे दिल में हँ तू मेरी साँसों में तू
मेरी धड़कन में तुम ही बसे हो प्रभु
तुम्हें भूलूँ न कभी यही विनती है मेरी

3. मेरे गुरूवर की महिमा का अंत नहीं
सब गुरू की शरण में आ जाओ

पाएं चरणों की धूली–2

205

महिमा करूँ मैं गुरू की जिसने मुझे बनाया

1. ये प्यार भरा चेहरा जिसमें सुख है समाया
सभी दीन दुखियों को उर से लगाया
है प्यार का गहरा समुदंर गुरू हृदय में है समाया

2. जो गुरू तुम न मिलते तो प्यार किससे करते
जो वचन नहीं मानते तो प्यार कैसे पाते
वचनों पे चलके मैने गुरू अपना सभी सवारा

3 मुझे अपना बल देकर सुख दुख में उपराम कराया
मेरी नाव थी भंवर में गुरू तुमने पार लगाया
गुरू शरणागत को तुमने गले लगाया।

206

तर्ज– लुट रहा लुट रहा

मिल गया मिल गया मिल गया रे
गुरूवर का प्यार हमको मिल गया रे

1. गुरूवर मेरे बड़े ही प्यारे सच्ची राह दिखाते है
हर मुश्किल को पल में ही वो आसान बनाते है
जो भी इनकी शरण आयो रे झोली खुसियों की पा गया

मिल गया .....

2. गुरूवर मेरे सच्चे साथी ईश्वर से सीधा नाता है
उनकी वाणी को सुनकर मन हर्षित हो जाता है
जिसने भी इनका नाम लिया रे कष्ट सभी हर लिया रे
मिल गया .....

3. कोई नैय्या नहीं तपवार नहीं हजार हाथ वाला है
अपने सभी भक्तों की तकदीर बनाने वाला है
गुरू को दर पर आ करके जो खोया था पा लिया रे
मिल गया.....

207

मेरो सतगुरू कन्हईया–2 जैसो लगे मोहे प्यारो
जाके नाने–2 मुखड़े पे–2 भक्तों ने सब कुछ वारो

1. मीरा के लिए विष भी पी गया नन्द का राज दुलारा–2
नरसी के लिए बना भतइया कैसा रूप संवारो
कन्हैया जाने भक्तों पे सब कुछ वारो.....

2. मुरली की धुन ऐसी बजाये
राधा की सुध हर लाये–2
खूब नचाये गोपिन को जब अपनी धुन पे आये
कन्हैया जाके नाने अधरो पे–2 बंशी की धारा

208

मैं तो दीवानी हरि दर्शन की मै तो दीवानी प्रभु दर्शन की

1. मीरा जैसे प्रेम करूँगी निश दिन प्रभु का ध्यान धरूगी
सेवा करूँगी गुरू चरण की , मैं तो दीवानी.....

2. कोई मेरो अपना नहीं है प्रभु ही मेरो प्रिय प्रीतम है
माला जपूँगी निशदिन प्रभु की मैं तो दीवानी ....

3. व्याकुल मेरा मनवा उस बिन बीतो नहीं पल-पल, छिन-छिन
सदा रहूँगी मैं तो उनकी, मैं तो दीवानी.....

4. चाहत मेरी कभी न छूटे ये धन, मेरा कभी न खूटे
गोपी बनूँगी मैं तो गुरूवर की में तो दीवानी.....

209

मिल जाये जो तेरा सहारा और नहीं कुछ चाहिए
चरण कमल में जगह मिले तो और नहीं कुछ चाहिए

1. तेरे इशारे दुनिया है चलती रोजी रोटी सबको मिलती
तेरी दया की नजर मिले तो और कुछ नहीं चाहिए

2. कोई भी चीज की कमी नही है फिर भी दिल तो भरता नहीं
मन की शान्ति जो मिल जाये और नहीं कुछ चाहिए

3. अंत समय जब आये मेरा अपना रूप अनूप दिखाना

आप का दर्शन जो मिल जाये और नहीं कुछ चाहिए

210

तर्ज- मुझे मिल गया मन की मीत

मेरी रखियो लाज गुरू जी बाँह तेरी पकड़ी है
पकड़ी है -2 मेरे गुरू जी है भगवान बाँह तेरी पकड़ी है

1. तू ही काया तू ही माया अन्दर बाहर तू की समाया
मेरे रोम रोम में तू बाँह तेरी पकड़ी है।
पकड़ी है-2 मेरे गुरू जी गरीब निवाज बाँह तेरी पकड़ी है

2. ज्ञान ध्यान मैं कुछ न जानूँ इस जीवन का मोल न जानूँ
मेरे जीवन दाता तू बाँह तेरी.....
पकड़ी है पकड़ी है मेरे गुरू जी है सरताज बाँह तेरी.....

3 मैली चादर ओढ़ के बैठी पाप की गठरी लेकर बैठी
मेरा तारन हारा तू बाँह तेरी पकड़ी
पकड़ी है-2 मेरे गुरू जी दीन दयाल बाँह तेरी.....

211

मेरी बन जायेगी गुरू गुन गाय के,
मेरी बन जायेगी हरि गुन गाय के
मेरी बन जायेगी गोविन्द गुन गाय के .....

1. ध्रुव की बन गई, प्रहलाद की बन गई–2
द्रौपदी की बन बई, चीर बढ़ाये से .... मेरी बन जायेगी

2. बालि की बन गई, सुग्रीव की बन गई–2
हनुमत की बन बई, सीया सुध लाये से.....

3. नन्द की बन गई, जशोदा की बन गई–2
गोपियन की बन गई, माखन खबाये से.....

4. गजहू की बन गई, गीदहू की बन गई–2
केवट की बन गई, नाव पे चढाये से

5. भीष्म की बन गई, ऊधौ की बन गई–2
अर्जुन की बन गई, रथ हकँवायें से

6. सूर की बन गई, कबीर की बन गई–2
तुलसी की बन गई, तिलक लगाये से

212

मेरी दुनिया ही है तेरे मेरे आँचल में
शीतल छाया है तू दुख के जंगल में

1. मेरी दो राहे बनी तेरी दो अखियाँ
मुझे गीता से बड़ी तेरी दो बतिया
युग में मिलता जो वो मिला पल–छिन में

मेरी दुनिया ही है.....

2. कितने तीरथ भी किये पर कुछ पाया न
कितनी पुस्तक भी पढ़ी पर कुछ जाना न
युग में मिलता जो वो मिला पल–छिन में
मेरी दुनिया ही है.....

3. काहे न धो के पिये ये चरण तेरे हाँ
देवता प्याला लिये दर पर खड़े हाँ
अमृत सबका है इसी गंगा जल में
मेरी दुनिया ही है...

213

मैं राम नाम की चूड़ियाँ पहनूँ
प्रेम का सुरमा डार

1. नाव चढूँ हरि प्रेम की उतर पडूंगा उस पर
ऐसे वर को क्या करूँ जो जन्मे और मर जाय
चूड़िया अमर होय जाय

2. सुरति चली जहाँ मैं चली रे सुन मुरली की तान
गिरधारी के साथ में मीरा करे पुकार
मैं राम नाम की चूड़ियाँ पहनूँ।

214

मेरी आस यही है हे भगवन तुम्हें अपनी कहानी सुनाया करूँ
तेरी इसमें खुशी तुम रूठा करो मैं अकेले में तुमको मनाया करूँ

1. कोई कैसी कहे या दीवाना कहे चाहे पागल सारा जमाना कहे
मेरे रोने पे तुमको जो आये हंसी तो मै रो–रो के तुमको मनाया करूँ

2. क्या चीज है जो सेवा में तेरी चढ़ जाय बली तुझ पर तेरी
मैं फूल बनाकर दिल अपना चरणों पे तेरे नित चढ़ाया करूँ

3. मैं कैसे भुला दू तेरे नाम को रोज पलको से झाड़ तेरी राह को
मैं फूल बनाकर दिल अपना चरणों पे तेरे नित ही चढ़ाया करूँ।

215

मेरी आँखों में वही दिलदार है
जिसपे सैदा ये सब संसार है

1. जो अयोध्या में आदर्श धारी बना
और बृज में जो लीला बिहारी बना
ऐसे नटवर पे सब कुछ निसार है हाँ

2. कभी मुरली बजाई मधुर तान से
हर जगह पर वो खुद आशकार है हाँ
मेरी आँखों में वो ही दिलदार है

3. कभी बलि के यहाँ विप्र दुर्बल बना
द्रौपदी के लिए वस्त्र बादल बना
कभी खम्भे में लेता वो अवतार है हाँ

3. कभी कंचन की लंका लुटाता फिरे
कभी गोकुल में माखन चुराता फिरे
मेरी आँखों में वो ही दिलदार है

216

मुझे भगवान वह दिल दे कि जिसमें प्यार तेरा हो
जुबा वह दे जो करती हर घड़ी इजहार तेरा हो

1 .मुझे वह बक्स दे आँखे जिन्हें हो जुस्त जूँ तेरी
कि हर एक जर्रे–जर्रे में फकत दीदार तेरा हो

2. मुझे देना प्रभु संगत सदा तू अपने बंदो की
कि जिनके दिल में रहता ऐतबार तेरा हो

3. जमाने में मेरा साथी बनना तुम ही हे भगवन
दया हो जिसके सीने में और सेवादार तेरा हो

4. सर आँखों पर उठाता नित फिरूँ चरण रज
उनके चरणों की भक्ति निष्काम जो करता प्रचार तेरा हो

5. ये प्रेमी काट ही लेगा खुसी से जिन्दगी अपनी
मेरे सर पर दया का हाथ यदि सरका तेरा हो

217

मेरी जुबा से निकले गुरू गुरू
मेरा मंत्र हो केवल गुरू गुरू
यदि देखू मैं तो गुरू–गुरू
मेरे दिल का सहारा गुरू गुरू

1. चहूँ ओर गुरू की छाया है
चहूँ ओर गुरू ही समाया है
जित देखूँ प्यारा गुरू–गुरू
मेरे दिल का सहारा गुरू–गुरू

2. मेरी जात हो केवल गुरू गुरू
मेरा धर्म हो केवल गुरू गुरू
मेरे मात पिता हो गुरू गुरू
मेरे सर्व सर्व गुरू–गुरू

3. गुरू महिमा कबीर ने गाया था
तब संत बड़ा कहलाया था

श्री राम को ज्ञान हुआ गुरू से
फिर क्यों रटूँ मैं गुरू गुरू

218

तर्ज–हाल क्या है दिलो का

मुझ गुनहगार का ऐ मेरे साँवरे
तेरे चरणों में आना,गजब हो गया
तूने आकर लगाया जो सीने से मुझे
कह उठा ये जमाना गजब हो गया

1. पहले कलियाँ चटखने लगी बाग में
बाद में फूल भी मुस्कराने लगे
नींची नजरों से आकर कदँब के तले
तेरा वंशी बजाना गजब हो गया

2. नाही बन्धन से मुझको कोई काम था
मैं अकेली थी या इक तेरा नाम था
फंस गया दिल पंक्षी मेरा जाल में
तेरा नजरे मिलाना गजब हो गया

3. जब से सूरत है आँखों में तेरी बसी
और भी चौ गुनी मेरी कीमत बढ़ी

तेरी पलको के सिप्पी के दो पांट में

तू है मोती का दाना गजब हो गया

4. कोई उजड़ा हुआ इक मकाँसा वो था

जिसकी दीवार कोई न दर हीं मिला

डालकर एक दासी पर जनरे करम

तेरा मुझको बसाना गजब हो गया।

219

मेरी छोटी सी है नाव तेरे जादू भरे पांव

मोहे डर लागे राम कैसे बिठाऊँ तुम्हें नाव में..

1. जब पत्थर से नारी बन जायेगी

मेरी काठ की नाव कहाँ जायेगी

मेरा यही रोजगार पालू

सारा परिवार मोहे डर लागे राम।

2. बड़े प्रेम से पग धोलू

पाप जनम जनम के धो लू

अगर होवे मंजूर आओ

आओ जी हुजूर मोहे डर लागे राम

3. जैसे तुम हो खिवइया

वैसे हम है खिवइया

भाई भाई से लेना शरम है।

चौपाई उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता

सीय राम गुह लखन समेता

केवट उतरि दण्डवत कीन्हा

प्रभु सकुचै यहि यहि कछु दीन्हा

पीय हिय की सीय जानन हारी

मन मुंदरी मन मुदित उतारी

कहेऊ कृपाल लेहू उतराई

केवट चरन गहे अकुलाई

नाथ आजु मैं काह न पावा

मिटे दोष दुख दरिद्र दावा

बहुत काल मैं कीन्ह मंजूरी

आजु दीन्ह विधि वनि भलपूरी

अब कछु नाथ न चाहिए मोरे

दीन्ह दयाल अनुग्रह तोरे

फिरती बार मोहि जो देवा

सो प्रसाद मैं सिरधर लेवा।।

दोहा " बहुत हीं प्रभु लखन सीय नहीं कछु केवट लेय।
विदा कीन्ह करूणा यतन भक्ति विमल भर देव।"

220

यूँ नजर आपकी हम पर पड़ती है
हम स्वतः हीं गुरू जी सवर जायेगे
पार होना था भव से जो अब तक कठिन
पार अब तो सहज हीं मे हो जायेंगे

1. जब से हम पे पड़ी है नजर आपकी
हमको न जाने क्या हो गया है प्रभु
आस हमको बंधी है तभी से यही
पार हो जायेंगे पार हो जायेंगे

2. जब से हमने हे देखा प्रभु आपको
सौप दी नाव जीवन की है आपको
डूबने का भी भय अब नही रह गया
क्यों कि विश्वास है पार हो जायेगें

3. आप देखे हमे देखे हम आपको
सिल सिला ये हमेशा हीं जारी रहे
आपकी नजरे रहमों करम से प्रभु

हम संभल जायेंगे हम संभल जायेंगे

4. आज तलक जो बने है वो है आपसे
आगे भी जो बनेगे वो भी आपसें
आप हमको सदा यूँ बनाते रहे
हम भी बनते हीं बनते हीं बन जायेगे

5. आप आये जगत मे इसी काम को
आपकी उम्र हो आसमा से भी बड़ी
सारे जग पे नजर हो प्रभु आपकी
वो भी बन जायेगे पार हो जायेगे

221

यदि तेरी शरण पाने का हमे सौभाग्य न मिलता
पड़ा मन का विकार बंधन किसी तौर भी न खुलता

1. जगत जंजाल मे बधकर वृथा जीवन गवा देता
यदि तू रहनुमा बनकर न मंजिल पार तक चलता

2. न देते गर नशीहत रूह को मन से बच निकलने की
हजारो जन्मो तक आतिश मे नरको की सतत् जलते

3. तेरी सुनकर हिदायत मै अमल उस पर न गर करता
वक्त के बीत जाने पर हीं दोनो हाथ फिर मलत

4. अगर तेरी सेवा बन्दगी मे मन गलतान न होता

यकीनन माया की दलदल मे जीवन दास का जलता

222

रंगी रे रंगी रे तेरे नाम की

छकी रे छकी रे तेरे नाम की

1. और क्या पाऊँ और क्या चाहूँ

नजर मिली जो प्यार की

रंगी रे.........

2. दुनिया की रीति के कैसे निभाऊ

रीती निभाऊ प्यार की

रंगी रे........

3. पड़ी अकेली बीच भंवर में

राह तकूँ दिलदार को

रंगी रे ....

4. मर्जी हो तेरी जैसे नचा ले

प्रीत हुई करतार की

रंगी रे........................

223

रब नहीं बसदा दूर अखियाँ खोल जरा

नहीं नीरे नहीं दूर अखिंया खोल जरा

ज्यो का त्यों भरपूर अंखिया खोल जरा

1. फूल बास मुख दर्पण माही व्याप रहा सब घट घट माही

में मेरी कर दूर अखियाँ खोल जरा हर बेले भरपूर

अखियाँ खोल जरा.......

2. मैनू मार झुकावे जेडा साफ करे इस दिल दा डेरा

कहो गुरू गुरू अखियाँ खोल जरा

3. बिन सत्संग मिले नहीं मारग सतगुरू कहदे को है सारद

सत्संग करो जरूर अखियां खोल जरा

4. बिन सत्सनं न सोझी पावे सतगुरू बिन राह हाथ न आवे

ये गल बहुत मशहूर अखियां खोल जरा

5. सच्चा सतगुरू जे मिल जाये निज घर दे विचघर दिखलावे

परगट होवे नूर अखियां खोल जरा

224

रब मेरा सतगुरू बनकर आया मुझको देख लेने दे

मुझको देखे लेने दे मुझको देख लेने दे

मुझको देख लेने, दे मत्था टेक लेने दे

1. प्रीत है इसकी बड़ी अनोखी नाम की दौलत कभी न लुटती
आया जग को झुमाने मुझको देख लेने दे

2. गुरू की सूरत रब की सूरत करते सबकी मुरादे पूरण
रब का रंग स्वरूप मुझको देख लेने दे

3. घट घट में वो ज्योत जलाते मोह माया के भरम मिटाते
ज्ञान अमृत का बरसाये मुझको देख लेने दे
गुरू की बोली है बड़ी प्यारी सारे भक्त है उसके पुजारी
सारे तीरथ चरणों में मुझको देख लेने दे

225

राम जी के नाम ने तो पत्थर भी तारे
जो न जपे राम–2 वो है किस्मत के मारे

1. मारो राम जी के नाम को शिवजी ने ध्याया
तुलसी ने राम जी पर सरवस्व लुटाया
कबीरा भजन कर भये मतवारे
रामजी .....

2. राम राम रामजपो राम ही धियाओ
राम नाम प्रेम ज्योति घर घर जलाओ
महावीर राम नाम हृदय में धारे

रामजी .....

3. राम नाम अमृत है राम नाम चन्दन
राम नाम वेद जपे संत करे बंदन
उन्हीं की शरण में पाप उबारे

226

रंग में होली कैसे खेलूंगी या सावरिया के संग–2

1. कोरे कोरे कलश मंगाये
उनमे घोला रंग–2
भर पिचकारी सनमुख मारी–2 हुलिया हो गयी दंग.....

2. लहंगा मेरो घूम घुमारो
चोली हो गई तंग–2
कान्हा जी की मुरली बाजी, राधा जी के संग.....

3. कान्हा ऐसी होली खेले
सखिया हो गई तंग–2
बरसाने में धूम मचावै, कनाई मचाये हुड़दंग.....

227

राम नाम के साबुन से जो मन का मैल छुड़ायेगा

निर्मल मन के दर्पण में वो राम का दर्शन पायेगा

1. रोम रोम में राम बसे है पलभर मुझसे दूर नहीं
देख सके न मन मन्दिर में जिन आंखों में नूर नहीं
देखेगा मन मन्दिर में जो प्रेम की ज्योत जगाये

2. ये शरीर अनमोल रे प्राणी प्रभु कृपा से पाया है
इस झूठे प्रपंच में पड़कर हरि को क्यों बिसराय
समय हाथ से निकल गया तो सिर धुन धुन पछतायेगा

3. झूठ कपट निन्दा को त्यागो हर प्राणी से प्यार करो
घर में आये अतिथि कोई तो यथा शक्ति संचार करो
ना जाने किस भेष में आकर नारायण मिल जायेगा

4. प्रीत तुम्हारी कच्ची है यदि प्रभु पर है विश्वास नहीं
मंजिल का पाना है क्या यदि दीपक में प्रकाश नहीं
निश्चय है तो भव सागर से बेड़ा पार हो जाएगा

5. माया का अभिमान है झूठा यह तो आनी जानी है
राजा रंक अनेक हुए कितनों की सुनी कहानी है
राम नाम प्रिय महामंत्र ही साथ तुम्हारे जायेगा।

228

लखनऊ नगर है मेरे गुरू की नगरिया

वो पीर नहीं वो फकीर नहीं पूरा भगवन है–1

1. एक नजर से चुकता जन्मों का खाता
सब कुछ पाता जो भी शरण में आता
उसकी नजर करम से तर जाता है

2. बिन होठ हिलाये कोई अद्भुत नाम जपाता
जो भी शब्द सुने भीतर अनहद सुन पाता
अपना बल समरथ देके सहज समाधी देता है

3. अगले बरस गुरू की समाधी पर आये
समाधी के पास धरमशाला बन जाये
सब ठहरेंगे सब झूमेंगे इस उत्सव में

229

लीला लगी है राम भजन वाली जय हो

1. माता कहती सुन मेरी मीरा तू क्यों चली आई
महल दुमहला छोड़ के संतन की कुटिया भ

2. मीरा कहती सुन मेरी माता ये कुटिया मोहे भावे
इसमें रहते मरे श्याम सुन्दर

3. माता महती सुन मेरी मीरा तू क्यों चली आई
सूट साड़ियाँ छोड़ के अंग विभूति लगाई

4. मीरा कहती सुन मेरी माता संग भभूति चंगी
प्रेम विभूति पा लिया मेरा श्याम सुन्दर संगी

5. मीरा गहती सुन मेरी माता तुलसी माला प्यारी
तुलसी माला वाच के मिल जाते गिरवर धारी

6. माता कहती सुन मेरी मीरा ये क्यों चली आई
अपना पति छोड़ के मोहन से प्रीत लगाई

7. मीरा कहती सुन मेरी माता ये पति है झूठा
सच्चा पति मेरा श्याम सुन्दर जो सच्चा

230

तर्ज – ले के पहला

ले लो ले लो गुरू का नाम बिगड़े बन जायेंगे काम
भक्तों जीवन की बगिया तो खिल जायेगी

1. गुरू जी ने तुमको मार्ग दिखाया
पत्थर था बंदे तुमको हीरा बनाया
उनका कर वंदन सम्मान
भूलो मत जो पाया ज्ञान भक्तों जीवन.....

2. काम के झमेले तेरे लगे ही रहेंगे
माया के मेले हरदम लगे ही रहेंगे

थोड़ा उससे समय निकाल
उसको गुरू सेवा में डाल भक्तों जीवन.....

3. सारे सत्संगी गुरूजी तेरा गुण गाते
आपके चरणों में सदा शीश झुकाते
तुम भी गाओ मेरे साथ
मिल जायेंगे गुरू नाथ, भक्तो जीवन.....

231

लोकाँ नुँ सहारे बड़े होनगे मेरा ते सहारा इक तू
मेरे दातया मेरा ते सहारा इक तू

(1)

बन्दगी कराँगे तेरे दरबार दी,
रखी चरणां दे कोल एहो अरदास जी
(होरा नुँ सहारे बड़े होनगे) मेरा ते सहारा इंक तू मेरे
साहिबा मेरा ते सहारा इक तू

(2)

दित्ता जो ज्ञान मैंनुं भुल के भुलावाँ न।
तेरा दर छोड़े के मैं हारे दर जाँवा न।
(होरा नुँ सहारे बड़े होनगे) मेरा ते सहारा इंक तू मेरे

साहिबा मेरा ते सहारा इक तू

(3)

त्रन्न कोलो सोणा। मेरे गुराँ दा ऐ रूप ऐ।

दर्शन पाना तेरे। रब दा स्वरूप ऐ।

(लोकाँ नुँ नजारे बड़े हानेगे) मेरा ते नजारा इक तू मेरे

साहिबा मेरा ते नजारा इक तू

(4)

स्वर्गा तो सोहणा। मेरे गुराँ दा निवास।

सेवा कर दे पये दास न दास ने

(लोकाँ नुँ नजारे बड़े होनग) मेरा ते नजारा इक तू मेरे

साहिबा मेरा ते नजारा इक तू

232

लगता है दिल मेरा तेर ही द्वार में।

फिर क्यों भला मैं जाऊ तेरे द्वार से

1. जब दिल हमारा गम से सराबोर हो गया

दे कर के प्यार कीमती तुमने सुकू दिया

2. तेरी नजर को देख के ये हो गया यकी।

इन्सान के ही भेष में भगवान मिल गया।

3. जब मिल गया खुदा ही तो फिर जाये हम कहाँ

पूजा करें क्यों गैर की सिजदा करे कहाँ कहाँ

233

लगी वृन्दावन में एक दिन अदालत खड़े माँ बदौलत–2

1. हाकिम है राधे मुजरिम मुरारी

हुआ जब अदालत में वारंट जारी

मुकद्मा तुम्हारा हुकूमत हमारी

बुलाओ यशोदा को कर लो जमानत

2. इजलास पर जब पुकारे गुजरिया

किसी ने दिखा दी फूटी गगरिया

कहा राधिका ने बजा के बसुरिया

दिन रात लूटे दिलों की नगरिया

सजा बोल दूँ तो बिगड़ जाये हालत

3. सरे आम बस इतनी सजा है तुम्हारी

बजाते रहोखड़े मुरली मुरारी

पेशे नजर रहना बाँके बिहारी

रिहाई न देगी कभी राधे तुम्हारी

बुला लो यशोदा को कर ले जमानत्

234

वैध बन के गोकुल से कान्हा चले
गाँव बरसाने आना गजब हो गया
जंगली बूटियों से वो झोली भरी
उसमें मुरली बजाना गजब हो गया

1. श्याम गलियों में पहुँचे और आवाज दी
कोई बीमार है आ गये वैध जी
देते दीनों को हम है मुफ्त गोलिया
ऐसे बेन सुनाना गजब हो गया।

2. सुनि के ललिता विशाखा ने लीन्हा बुलाया
डाल चौकी और आसन दीन्हा लगाय
वैध जी नब्ज देखकर के दीजो दवा
ऐसे अवसर पर आना गजब हो गया

3. नबज देख कहा रोग कुछ भी नहीं
नैन काजल लगा कर गई थीं कहीं
लड़ गये नैन से नैन वो जब कहीं
श्याम का मुस्कुराना गजब हो गया।

235

वाहे गुरू वाहे गुरू कर बंदया
रब ते कहर ते डर बंदया

1. धन दौतल का मान न करिये
आखिर जाना मर बंदया
वाहे गुरू .....

2. गुरू दा नाम अमोलक है
गुरू दा नाम तू जप बंदया
वाहे गुरू .....

3. गुरू अमरत दी खान है
ज्ञान अमरत दा चख बंदया
वाहे गुरू .....

4. गुरू जग दा पालन हारा है
ओह दे नाल तू चल बंदया
वाहे गुरू .....

236

वैसे तो नशे अनेक है पर ये नशा कुछ और है
साखी जो पिलाएं इक बार जिसे रहता है सदा खुमार उसे

1. जीवन में वही खुश रहता है

वचनों को अमल में जो लाता है

गुरू भक्त वही कहलाता है

जो कुछ काम कर दिखलाता है

इक पल का अब तो भरोसा नहीं

समय को न यूँ ही गवाना है।

2. इस शहर में आने वाला को अपनी लागत की जरूरत है

दुनिया की जिसका चाह नहीं है राह में उसको रूकावट नहीं

जीते जी यहाँ तो मरना है अपनी खुदी को मिटाना है।

237

वो छलिया नन्द गोरी जोगनिया बनाये गयो री

श्याम जोगनिया बनाये गयो री.....

1. आप तो पहने पीला पीताम्बर–2

हमारे अंग धूनी रमाये गयो री.... वो छलिया

2. आपके सिर पर मुकुट विराजे–2

हमारे सिर जटा धराये गयो री..... वो छलिया

3. आप तो जाये द्वारिका धाये–2

हमें तो वृन्दावन बसाये गयो री..... वो छलिया

4. चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि–2

हमें तो हरि दासी बनाये गयो री.. वो छलिया नन्द गोरी...

238

VIP गुरू जी आये देखो बड़े फैशन हो

VIP गुरू जी आये देखो बड़ा चमकदार हो

VIP गुरूजी आये देखा बड़ लहरदार हो

1 गुरू का सिंहासन देखा, गुरू का सिंहासन देखो

बड़ चमकदार हो S S S S

2. गुरू के कमर पे साहे पटका पीताम्बर देखा

VIP गुरू जी आये देखो ...

3. गुरू जी की पूजा होवे देखे संसार हो

VIP गुरू जी आये देखो

4. गुरू जी के भोग लागे हलावा कचौड़ी देखा

VIP गुरू जी आये देखो

5. गुरू जी के भोग लागे माखन और मिश्री हो

VIP गुरू जी आये देखो

6. जब जब ज्ञान देवे सब भक्त खुस होवे

VIP गुरू जी आये देखो

7. जैसे बरसेला उनके आँखों से नूर हो

VIP गुरू जी आये देखो

239

शुकराना गाये दिल घड़ी घड़ी आपको
आपने दिया है मुझे प्यार दो जहान का

1. अंखियों में मेरी तेरे प्यार के ही साये है
अश्को के मोती तेरी याद में लुटाये है
गुण क्यों न गाऊँ मैं ऐसे मेहरबान को

2. दुनिया की प्रीत को दिल से भुलाकर
खुस है मैं दिल सतगुरू से लगाकर
लिख दियो दिल पर नाम मैने आपका

3. करता था मन तंग साझ सवेरे
अब मैं नहीं ये बस में है मेरे
कर दिया खातमा इस बेइमान को

4. दुनिया की दौलत की न मुझको जरूरत
दिल में बसी रहे प्यारी प्यारी सूरत
लब पर नाम रहे मेरे दिलदार को

5. सतगुरू मेरा प्यार मेरा ही ईमान है
इसके सहारे चलते मेरे ये प्राण है

रिश्ता हमारा जैसे शम्मा परवार का

240

श्याम सुन्दर अब तो हम आशिक तुम्हारे बन बये
हम तुम्हारे बन गय और तुम हमारे बन गये।

1. जब से दिल दुनियाँ का था दुश्मन हजारे के बने
जब ये दिल तुमको दिया हर दिल के प्यार बन गये

2. जोग जप तप नेम से तो बना बिगड़ा करे
हम अजांमिल, गीध, गणिका के सहारे बन गये

3. आँख भर देखा जो तुमको सब समझ हमने लिया
दिल बना बैकुण्ड हम बैंकुण्ड द्वारे बन गये

4. विरह नभ पर जब तुम्हारा ध्यान चन्द्रोदय हुआ
प्रेम के जब बिन्दू टपके वो सितारे बन गये।

241

शुकराना करने आये है अहसानों का तेरा
खुसियों से तूने दामन सतगुरू भर दिया मेरा
सर को झुकायेंगे भजन सुनायेंगे-2
हाथ तेरा बना रहे हम भक्तों पे सदा

1. तेरी कृपा से ये जीवन है रौशन-2
तेरे दर्शन से मन में खिलते है गुलशन-2

दिल में बसायेंगे भजन सुनायेंगे
हाथ.....

2. जब से जुड़ा है तुमसे ये रिश्ता
रहमो करम का तू है फरिश्ता
ज्ञान को पायेंगे वचन निभायेंगे
हाथ.....

3. तुमसे है चलतीं ये सासें और जीवन
तुम्हीं तो करते हो दूर सारी अड़चन
जयकारा लगायेंगे सबको सुनायेंगे
हाथ.....

242

(1)

श्वास -श्वास में सिमरूँ तुमको,
बार-बार गुण गाऊँ।
तुम बिन मेरो कोई न भगवन्
जिसकी शरण मैं जाऊँ।

(2)

उठत-बैठत तुम्हें आराधूँ

आठ पहर गुण गाऊँ।
ओम्-ओम् की मधुर ध्वनि में,
भीतर में खो जाऊँ।

(3)

जो पहरायो सो ही पहरूँ
जित राखो तित राहूँ।
कर्ता-धर्ता तुम्हें ही जानूँ।
तेरा दिया ही पाऊँ।

(4)

तुम साहिब, तुम ठाकुर मेरो
तुम्हरे हुकुमँ बजाऊँ।
हूँ भगवन मैं तेरो
तेरो चरण शरण सुख पाऊँ।

(236)

श्वासाँ दी माला नाल सिमराँ मै, तेरा नाम।
बन जाँवा बन्दा में तेरा, हे किरपानिधान।।

(1)

संगता दी सेवा करहा खाँ मैं, त्ररणां ते मस्तक धरदा रहाँ मैं।

मेरा ऐ तन–मन, सब ओनाँतो कुर्बान।।

(2)

ऐसीं ही किरपा करो (प्रभु मेरे) छाड़िए जंजाला नुँ
बन जाइये तेरे, जिस दिन तू बिसरे निकल जायें मेरे प्राण।।

(3)

गुरू मैंनु पिला दे तू अमृत दा प्याला।
रंग दे मेरे दिल नुँ मैं हो जाऊँ मतवाला
मैंनु ऐ सतगुरू जी तेरे दर्शन दी ताँग

(4)

कोटा ब्रहम्माण्ड मालिक तू स्वामी। सबनाँ नूँ देंदा तू अन्तर्यामी
तू देन्दा नहीं थकदा, जुगो जुगो देन्दा दान।

(5)

सुखाँ विंत्र रहके नैनुँ भुल न जाँवा।
त्ररणा नाल जोड़ो हरि जी, मैनुं अपना जान।

243

शुक्रिया शुक्रिया सतसंग जो अपना दिया
किस्मत चमकी है जो तेरा साथ मिला
साथ हमको दिया बड़ा उपकार किया

प्याला ये प्रेम का हमको पिला दिया

1. भक्तों को तुम अपने पास बुलाते हो
पास बुला के हृदय सुन्दर बनाते हो
ज्ञान सुनाकर साथी राह दिखाते हो
राह दिखाकर बिगड़े काम बनाते हो।
शुक्रिया शुक्रिया प्यार अपना दिया
अपना बना लिया प्यार बरसा दिया।

2. अपना कहके जब से तुमको पूजा है
लगता है कि सारा जग ये झूठा है
झूठे जग की माया हमें डूबाती है
तुमने हमको हाथ पकड़ के खींचा है।
शुक्रिया शुक्रिया दर जो अपना दिया
हमको निज चरणों में रहने का स्थान दिया।

244

शरण में आये है हम तुम्हारी दया करो हे दयालु भगवन
संभालो बिगड़ी दशा हमारी दया करो हे दयालु भगवन।

1. न हम में बल है न हम में शक्ति
न हममें साधन न हममें भक्ति

तुम्हारे दर के है हम भिखारी दया करो हे.....

2. जो तुम हो स्वामी तो हम है सेवक
जो तुम पिता हो तो हम है बालक
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी दया करो हे.....

3. सुना है हम है अंश तुम्हारे
तुम्हीं हो साँचे प्रभु हमारे
तुम्हारे होकर है हम दुखारी दया करो हे.....

4. प्रदान कर दो महान शक्ति
भरो हमारे में ज्ञान भक्ति
तभी कहाओगे ताप हारी दया करो हे.....
दया करो हे.....

5. न होगी जब तक कृपा की दृष्टि
न होगी जब तक दया की दृष्टि
न तुम भी तब तक हो न्यायकारी दया करो हे.....

6. हमें तो टेक बस नाम की है
पुकार एक सतगुरू नाम की है
तुम्हारी तुम जानो निर्विकारी दया करो है.....

245

सतगुरू मेरा दीन दयाला सबसे प्यारा है
किसमत सवारे कष्ट निवारे दिया सहारा है

1. भक्तों पे प्यार लुटा के पग पग ये देता सहारा
दिल का सौदा करके रखता है विश्वास हमारा
जग के नजारे जितने है सारे सबसे न्यारा है।

2. ज्ञान का तान सुना के जादू हर एक दिल पे डाला
मन का अंधेरा मिटा के करता है फिर से उजाला
क्या सोचते हो उसको भजा तो वारा न्यारा है।

3. दीन बन्धु गुरूवर की क्या क्या करूँ मैं बड़ाई
महिमा सतगुरू देव की सबके समझ में न आई
भक्त मनाये उनको रिझाये सब कुछ पाया है।

246

सतगुरू मेरे दे दो वरदान
खाते-पीते सोते तुम्हारा रहे ध्यान

1. तेरे हीं चरणों मे मन मेरा लागे
नश्वर जगत मे ये मन मेरा भागे
चरणों की धूल ले के करूँ मै श्रंगार

2. सुबह और शाम तेरा ध्यान लगाऊँ

घट भीतर तेरा दर्शन पाऊँ
माता पिता तू ही तू ही भगवान

3. तेरे सहारे ये जीवन की नइया
तू ही खवेइया मेरा पार लगइया
निशदिन करू मै तेरा गुणगान

4. जग तज शरण आई प्रभु तेरी
विनय सुनो अब गुरूवर मेरी
कर दो कृपा हे कृपा निधान

247

सतगुरू,सतगुरू,सतगुरू,सतगुरू
सतगुरू क्या बताये कि क्या क्या हो तुम

1. वेद तू शास्त्र तू सारी गाथा है तू
गुप्त होके प्रकट नित्य रहता है तू

2. आप ही जानता अपनी लीला है तू
सिन्धू में तुमको देखा तो बिन्दु है तू

3. अक्षरो में जो देखा तो ऊँ है तू
तुझको मंत्रों में देखा ओहम् है तू

4. बाग के सारे फूलों में खुशबू है तू

मनका माला में देखा तो सुमेरू है तू

5. पी कहाँ होके बोला पपीहा में तू
कूँ-कूँ होके पुकारा कोयलिया में तू

6. सारी सम्पत्तियों का स्वयं राज तू
अपने भक्तों की रखता स्वयं लाज तू

7. लेख में है तू लेखनी में भी तू
ताल स्वर में भी तू और ध्वनि में भी तू

8. अपने भक्तों को देता है जब नयन तू
चित्त में जगाता जब है चैतन्य तू

9. बोल पड़ते है लब वे है फिर क्या है तू
तूँ वहाँ पर है रहता जहाँ मैं न तू

248

संसार है स्वारथ की रचना
यहाँ अपना किसी को बनाना क्या
यहाँ कोई भी सच्चा मीत नही
फिर किसी से दिन अटकाना क्या

1. गिरते को सम्भाले कोई
न सब ही तो गिराने वाले है

अपने मतलब के सभी यहाँ
फिर उनसे आस लगाना क्या

2. सब झूठी प्रीत है जतलाते
कोई दिल से किसी को चाहे न
दिल से न जब कोई प्यार करे
फिर दिल में किसी को बसाना क्या।

3. बिन सतगुरू कोई मीत
नहीं देखा भाला सारे जग में
सतगुरू के सिवा फिर दुनिया से
ऐ प्यारे दिल को लगाना क्या

4. न जंग में फंसा तू अब दिल को
इसको सगुरू के हवाले कर
पायेगा सच्चा सुख साचा
अब दिल और भटकाना क्या

5. सतगुरू करते सबका हीं भला
गिरतो को सम्भाले दया करके
उनका दर छोड़के अब दासा
किसी और के दर पे जाना क्या।

249

सुबह को बचपन हंसते देखा फिर दापहर जवान
सांझ बुढ़ापा ढलते देखा रात को खतम कहानी।

1. बचपन बेपरवाह कि जिसमें खेल कूद के मेले
आयी जवानी अंधी होकर कि आग से खेले
वृद्ध अवस्था थर-थर कॉपे आई याद पुरानी।

2. झूठे जग के बंधन झूठा जीवन सपना
तू किसका बनता फिरता है कौन है तेरा अपना
यहाँ किसी ने सदा नहीं रहना दुनिया आनी जानी

3. जीवन में आशाओं के तूने कितने महल सजाये
धरा यहीं रह जाये जब अंत बुनावा आवे।
टूटा पिंजड़ा छूटा पंक्षी हो गई खतम कहानी

4. उल्झा जीवन जीता रहा न कभी हार न मानी
राम न सुमिरा काम न बिसरा करता गया मनमानी
समय बदल गया तू न बदला हो गई भारी हानि।

250

सागर से भी ऊँचा गहरा गुरूदेव का प्यार है
देख लगा कर गोता इसमें तेरा बेड़ा पार है।

1. भवसागर में एक दिन तेरी जीवन नइया डूबेगी
खेते-खेते एक दिन तो पतवार भी तेरी डूबेगी
जायेगा उस पार तू कैसे चारों ओर अंधकार है।

2 सौप दे नैया गुरूदेव को वो ही पार लगा देंगे
पैर पकड़ ले जाकर के तू सोया भाग्य जगा देंगे।
पापी से भी पापी को भी करते न इनकार है।

3. संत समागम हरि कृपा भी गुरू कृपा से पाओगे
खुद आयेंगे गोविन्दा घर गुरू का आशिश पाओगे
बन्दे बिन गुरू कृपा के तेरी जिन्दगी बेकार है।

251

सतगुरू के दरबार में देखा जगे लाटरी भक्तों की
किसकी किस्मत आज खुलेगी कौन बनेगा करोड़पति

1. जो भी शामिल होना चाहे अपना हाथ उठा दो तुम
फीस नहीं पड़ती है यहाँ पर अपना नाम लिखा दो तुम
झोली मारेगा पल में तेरी बात ये बिल्कुल सच्ची है।

2. पाँच रास्ते गुरू ने बताये एक कागज पर लिख लो तुम
इनका दावा नहीं है झूठा नोट फटाफट गिन लो तुम
लाखों लोग गवाही देगें जिस जिस की झोली भर दो।

3. सतगुरू की तस्वीर लगाकर इनको रोज सजाओ तुम
ज्योति जगाकर भोग लगाकर इनको भजन सुनाओ तुम
सतगुरू की माला नित जपना, इसमें करियो नहीं गलती
सबकी किस्मत आज खुलेगी सभी बनेगे करोड़पति।

252

सभी देवता देते है भई सोच विचार के
मेरे गुरूवर देते है भई छप्पर फाड़ के

1. किसी ने उनसे कुटिया मांगी दे दिया एक मकान
किसी ने मांगी सूखी रोटी खुलगई तुरन्त दुकान
लाख मुसीबत फेकी है जड़ से उखाड़ के

2. बात किसी की छुपी नहीं मेरे दातार से
पूरण करते भक्तो को अपने भण्डार से
बक्शी ताल में बैठे है वो झण्डा गाड़ के

3. एक पते की बात बताऊँ इनको तू मान ले
ब्रह्म ज्ञान को पाके अपना जीवन सफल बना ले
देर न कर तू जल्दी आ इनके दरबार में।

253

सेवा करूंगी तेरी साँझ सवेरे

आते रहेंगे गुरूवर द्वारा पे तेरे

तेरे दर्शन को बेचैन सतगुरू मेरे दो नैन

सतगुरू मेरे दो नैन तेरे दर्शन को बेचैन

1. जब से मिला है ये दरबार तेरा

जीवन सफल हुआ तब से ये मेरा

करता रहूंगा गुरूवर इंतजार तेरा

आके तू देख ले गुरू हाल मेरा

होशो हवास अब तो खोने लगे है

हम तो दीवाने तेरे होने लगे है।

तेरे.....

2. ज्ञान सुना था हमने गुरूवर जो तुमसे

फिर कब सुनेगे प्रभु बात दो ये मुझसे

बैठा हूँ दर पे कब से ओ गुरूवर आओगे

कब मेरे घर ओ गुरूवर

तेरा हीं नाम लेके सोते है गुरूवर

तेरा हीं नाम लेके उठते है गुरूवर

तेरे.....

254

सतगुरू की रहमत को जो लागे तौलते है।

अपने हाथों जिंदगी में जहर घोलते है।

1 .समगुरू जो करता है वो बाते इलाही है।

इसमें नुकता चीनी करने की मनाही है।

जो नहीं मानते है अक्सर वो झेलते है।

2. न रिश्तेदार बने न ओहदेदार बने

सतगुरू के दर आकर हम सेवादार बने

जो लापर वाही में बड़े बोल बोलते है।

3. अच्छा है बुरा है क्या जब कोई नहीं जाने

सतगुरू के कहने पर क्यों लोग नहीं माने

आंखों को समय रहते जो नहीं खोलते है।

255

तर्ज रूक जाओ

सुन जा ओ जाने वाले सुन जा

जाता कहाँ तू जरा सुन जा

गुरूवर ज्ञान को सुनके

आतम ज्योत जगा जा

1. नर तन ये मिला तुझको इसे खो मत नादानो
पल-पल बीती जाये घड़िया ये अज्ञानी
सुन जा .....

2. ये मतलबी कुटुम्ब सारा जिसे समझे तू अपना
ये धन दौलत माया हो जायेगा सपना
सुन जा...

3. अब व्यर्थ समय न खाये गुरू नाम सुमर करना
सुन सतसंगी मंडल कहत गुणगान सदा करना
सुन जा.....

256

सच्ची लगन हो तब ही गुरूधाम आओ
व्यर्थ दिखावे में समय न गवांओ

1. झूठे दिखावे से कुछ न मिलेगा
मुरझाया जीवन तेरा कभी न खिलेगा
श्रद्धा लगन से गुरू को अपना बनाओ

2 मन में जो भाव लाये उन्हें न छिपाओ
खोल हृदय को अपने गुरू को दिखाओ
ज्ञान से गुरू के ही बन्धन छुड़ाओ

3. गुरू की कृपा दृष्टि तुम पर पड़ेगी
तब तेरे जीवन की बगिया खिलेगी
शुकराना करके गुरू को रिझाओ

4. मानुष जनम का कर्ज चुकाओ
आतमका ज्ञान गुरू किरपा से पाओ
झूठे जगत को छोड़ गुरू शरण आओ

5. भीड़ बनाके गुरू के पास न आओ
गुरू जब हुकुम दे तभी पास जाओ
गुरू आज्ञा पर अपना जीवन चलाओ।

257

सुनकर के करूण पुकार सतगुरू आ जाना
करो सबका है उद्धार सतगुरू आ जाना

1. भटक रहा हूँ मारा-मारा कोई नहीं है मेरा सहारा
कर दो भव से पार, सतगुरू आ जाना

2. बींच भंवर में पड़ी है नइया कोई नहीं है पार लगइया
नैय्या है मझदार, सतगुरू आ जाना

3. बिन दर्शन व्याकुल है अखियां चैन न पाऊं सूनी है गलियां
दर्शन दे दो एक बार सतगुरू आ जाना

4. गुरू ज्ञान ध्यान अलबेला आई सुहानी अनुपम बेला
जगके पालनहार सतगुरू आ जाना

5. दासन दास शरण में तेरी राखो लाज प्रभु अब मेरी
अब तेरी प्रेमी रही पुकार सतगुरू आ जाना।

258

सुन मेरी मइया में पड़ूँ तोरे पइया
ओ मेरी छोटो सो काम करायेद–2
राधा गोरी से ब्याह रचायें दे–2

1. राधा सी गोरी मेरे मन में बसी है
ग्वाल उडावे मैया मेरी हँसी है–2
मोको तू छोटी सी दुलहनिया लाये दे
अपने हाथों से दूल्हा बनाये दे–2.... सुन मेरी मइया.....

2. सेवा वो मइया तेरी रोज करेगी
जोड़ी ओ मइया तेरी खूब सजेगी–2
नंद बाबा कू नेक समझाये दे
दाऊ भइया को संग पठाये दे.... सुन मेरी मइया.....

3. गाँव बरसानो जाको सब जग जाने
गाय न चराऊँ तेरी जो न मेरी माने–2

अब तो कोऊ को पठाये दे
मइया विनती मेरी ये मान ले ..... सुन मेरी

259

तर्ज – चाँद जाने कहाँ खो गया

संग भक्ति के है हर खुशी–2
बिना भक्ति के सूनी है जिन्दगी–2
प्रार्थना है ये ही हर घड़ी–2
पा के सुख हम ने भले तेरी बन्दगी....

1. सबके आगंन में खुशियां तू बरसा मगर
याद तेरी न भूले हमें उम्र भर–2
जैसी मीरा ने भक्ति करी–2
रह के महलों में भूली न मोहन कभी–2 संग भक्ति के दे

2. नाचे रंग में तेरे गाये रंग में तेरे
हम मनाये खुशी दाता संग में तेरे–2
सत्य का जिसमें परचार हो–2
घर में गलियों में हो ऐसी संगत लगी–2 संग भक्ति

3. सारी दुनिया के सुख चाहे झोली में हो
भीगे हम नाम की सच्ची होली में हो–2

माया दुनिया की छल न सके–2

तार मन की हो हरदम गुरू से जुड़ी–2 संग भक्ति

4. जिस भक्त ने ओट सतगुरू की ली

उनके घर की खुशी कम न होगी–2

सुख से होगा ये दामन भरा–2

ऐसी बरसेगी रहमत ये दातार .... संग भक्ति

260

सतगुरू प्रेम बिना नहीं मिलते

चाहे कर ले कोटि उपाय

चाहे कर ले जतन हजार

1. मिले न यमुना सरस्वती में

मिले ले गंग नहाये–2

प्रेम सरोवर में जब डूबे–2

प्रभु को झलक कर पाये

सतगुरू प्रेम बिना.....

2. मिले न पर्वत में निर्जन में

मिले न बन भरमाये–2

प्रेम बाग घूमे तो प्रभु को –2

ले घट में पधराये

सतगुरू प्रेम बिना....

3. मिले न पंडित को ज्ञानी को

मिले न ध्यान लगाये–2

आतम रस में जब डूबे तो –2

प्रभु से मिलन हो पाये

सतगुरू प्रेम बिना.....

261

सेवा में मेरे सतगुरू तन मन धन लग जाये

जिस ओर भी मैं देखू तेरा रूप नजर आये

1. जब रात को सोऊ मैं तेरे सपने देखूँ मैं

भरम भेद रहे न कोई सब अपने देखूँ मैं

जब नींद से मैं जागू तेरा नूर नजर आये।

2. ये मधुबन तेरा है इस बाग का माली तू

कोई फूल न मुरझाये करना रखवाली तू

हर फूल के चेहरे पर तेरा नूर नजर आये

3. ये भक्त है सब तेरे हर लो इनके गम

ये दास भी तेरा है लेकिन तिनके से कम

तेरे चरणों की रज से ही जीवन ये संवर जाये

262

सतगुरू यह करम फरमाये जीव को पथ दर्शाये

आये है आये है आये है तारनहार

1. इस झूठी दुनिया के झूठे सहारे

प्रीत ने करना तू इनसे प्यारे

दुनिया है एक तमाशा

इसकी छोड़ दे आशा

2. जीवन के वृक्ष की कुछ दिन है छाया

मालिक के नाम बिन सब कुछ पराया

मोह नींद से संत जगाये

तुम्हें आतम ज्ञान कराये

3. धर के संत रूप मालिक है आते

सदा दीन दुखियों की बिगड़ी बनाते

जो कोई शरण में आये

वही मुक्त रूप हो जाये

4. भक्ति के दाते सच्ची दात लुटाये

भाग्यशाली गुरू मुख दामन फैलाये

संतो ने हार सजाई

जीवों को आवाज लगाई

263

सच्चिदानन्द है तू ब्रह्मा नन्द है तू

है आनन्द तू जीव ये माना बन गया देह में तू दीवाना

1. तेरी माया ही तुमको रिझाए

खेल रच रच के तुमको लुभाए

खेल नित खेलता दुख है झेलता

न अघाना बन गया क्यों.....

2. अपने अज्ञान से तू भरमाया

शेर होके मैं मैं में तू आया

मेरा घरबार है मेरा परिवार है।

कूड़ा खजाना बन गया क्यों....

3. होके अभिलाषी जनमा भरा है

रस्सी को साँप जान भरमाया

यही जड़ मूल है तुझको नित शूल है।

सपने को सच है माना, बन गया क्यों...

4. देह मानुष की अभिलाषी पाई
कर ले मुक्ति की अब कुछ कमाई
शुद्ध दर्पण बना रूप लख अपना
जो पुराना बन गया क्यों.....

264

सतगुरू है डाक्टर इनके नाम बा दवाई
पिल पिल भक्त, कोनों रोग न सताई

1. रोज रोज जे भक्त सतसंग में आई
नईया भव से उनकी पार होई जाई
पिल पिल भक्त कौनों रोग न.....

2. जैसा भाव रहे जिस जन का
वैसा भाव बने उस मन का
गुरू नाम जाप से ऊँ पार होई जाई

3. सतगुरू ब्रह्मा सतगुरू विष्णु
गुरू देवो में महेश्वर कहाई
पिल-पिल भक्त कौनो रोग न.....

4. गुरू महिमा अगम अपार मेरे भाई
क्षण भर में चमत्का हो जाई

पिल-पिल भक्त कौनों रोग न .....

5. गुरू शरण में आके देखो भाई
मोह माया सब दूर होई जाई
पिल-पिल भक्त कौनों रोग न.....

265

सतगुरू के मन भावन सुरतिया
सबके दीवाना बनइले बा

1. गुरू की सुरतिया पर मन मोरा अटकल
मद मोह माया भूला गई की -2
माया नगरिया से नाता तोड़िके
गुरू की दुआरिया आ गई ली
गुरूजी लिहे अपनी सरनिया-2
भक्तई आसरा लगवले बा
सतगुरू ने मन भावन....

2. केहु पधारल बा भभुआ देवरिया में
यू0 पी0 बिहार जुटी आईलबा-2
गुरू की चरनिया की सेवा में
जीवन ई सुफल बनइले बा

गुरू की धामवा पर उहें बा आईल–2

जेकरा के सतगुरू बालइवे बा–2

सतगुरू के मन भावन.....

3. धन्य धन्य गुरू पूर्णिमा के दिनबा

भक्तन के भीड़ जुटी आईल बा–2

केहू बजावेला ठोल मंजीरा

केहू भजनिया सुनावेला–2

लागत बा गुरू जी अब कुछ बोलिहे

आके भक्त सब दुखड़ा सुनवलेवा

सतगुरू के मन भावन.....

266

सुन बरसाने वाली गुलाम तेरो बनवारी

1. तेरी पायलिया पे बाजे मुरलिया छम–छम नाचे बिहारी

गुलाम तेरो बनवारी.....

2. बड़े बड़े देवद्वारा पे ठाढे बाट तकत गिरधारी

गुलाम तेरो बनवारी..

3. वृन्दावन के राजा होकर द्वार पे नाचे मुरारी

गुलाम मेरो बनवारी.....

4. कदम की डार पे झूला पड़यो है झोल देवे बिहारी

गुलाम तेरो बनवारी.....

5. बड़े बड़े नैनों में झीना–झीना कजरा

घायल कुंज बिहारी गुलाम तेरो बनवारी

6. बरसाने की खोल साँकरी दान बिहारी

गुलाम तेरो बनवारी

7. सब सखिया अब विनती करत है

अब तो हमारी है बारी गुलाम तेरो बनवारी

267

सतगुरू मैं तेरी पतंग.....2

हवा विच छड्डी जावांगी.....4

डोर हथ्थो हड्डी ना मैं कट्टी जावांगी–2

सतगुरू डोर.....2

साईयां डोर.....2

सतगुरू मैं तेरी पतंग.....2

दाता मैं तेरी पतंग.....2

बड़ी मुश्किल दे नाम मिल्या मेनू

तेरा द्वारा वे मेनु तेरा द्वारा वे

दाता तेरा द्वारा वे

1. मन्नू एको तेरा आसरा नाल

तेरा सहारा वे तेरा सहारा वे

हुन तेरे हीं भरोसे, दाता तेरे हीं भरोसे

हवा विच उड़दीं जावांगीं, हवा विच उडदीं जावांगीं

सतगुरू डोर हथ्थों छड्डीं ना मैं, कट्टीं जावांगीं

सांईया डोर.....

सतगुरू मैं तेरीं पंतग 2

दाता 2

2. ऐन्ना चरणा कमला नालो, मेन्नू दूर हटाई ना

दाता दूर हटाई ना

इस झूठे जग दे अंदर, मेरा पेंचा लाई ना

सतगुरू पेंचा लाई ना

जे कट कई तां सतगुरू–2

फेर मै लुटीं जावांगीं

सतगुरू डोर हथ्थो छड्डीं ना मैं लुट्टीं जावांगीं–2

साईया.....2

सतगुरू मैं मेरीं पतंग.....2

सतगुरू मैं तेरीं पंतग

3. मन्नू मान एको तेरीं रहमत दा

मेरे मान नू सतगुरू तोड़ीं ना

मैं आ डिगा दर ते तेरे

मेन्नू खालीं दर तो मोड़ीं ना

साहिब तुम मत बिसरो

लाख लोग मिल जायें

हमसे तुमको बहुत है

तुम सम कोई नहीं

सतगुरू मैं तेरीं पंतग.....2

4. आज मल्हरा बुहा आके, मैं

तेरे द्वारे दा सतगुरू तेरे द्वारे दा

हथ रख दे इकवारीं तू मेरे सरते प्यार दा दाता

मेरे जन्म मरण दे गेरे–2

तो मैं बचदीं जावांगीं

सतगुरू डोर हथ्थो छड्डीं ना मैं लुटीं जावांगीं

268

तर्ज सावन का महीना

सतसंग करने आये गुरू के दरबार

तीन लोग के स्वामी देंगे सारी विपदा टार

1. गुरू का भजन है बड़ा सुखदाई

दिल की बातें सुनता किशन कन्हाई

गुरू जी सुनेगे हम सबकी पुकार

2. गुरू भगवान की है मूरत प्यारी

मन को भाती मेरे सबसे न्यारी न्यारी

रघुनन्दन की महिमा सबसे अपार

3. सतसंगी सब गुरू गुरू गावे

दर्शन करकें सब खुशियां मनायें

खुशियां मनाते सब बोलो जय जय कार

269

है मानुष जन्म का मकसद प्रभु भक्ति कमा लेना

जगा कर चित्त को बन्दगी मे सफल जीवन बना लेना

1. कर्म करना तुझे वाजिब हो जो हो परलोक में संगी

जगत के झूठे धन्दों मे न दिल अपना फँसा लेना

2. तू आकर मन के धोखे मे न खोना व्यर्थ जीवन को

सुनहरा वक्त जो पाया फैज उसका उठा लेना

3. गुरू की मौज और आज्ञा हमेशा शीश पर धरना

नशीहत मान कर उनकी बिगड़ी अपनी बना लेना

4. फकत सतगुरू ही ये दाता जगत मे सच्चे साथी

तू करके रात दिन सेवा प्रेभु अपना रिझा लेना

270

हे मेरे गुरू देव करूणा सिन्धु करूणा कीजिये

हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिये

4. खा रहा गोते हूँ मैं भव सिन्धु के मझधार में

आसरा है दूसरा न कोई अब संसार में

मुझे में है जप तप न साधन और नहीं कुछ ज्ञान है।

निर्लजता है एक बाकी और बस अभिमान है।

2. पाप बोझे से लदी नइया भवर में जा रही

नाथ दौड़ो अब बचाओ जल्ल डूबी जा रही

आप भी यदि छोड़ दोगे फिर कहाँ जाऊँगी मैं

जन्म दुख से नाव कैसे पार कर पाऊँगी मैं

3. सब जगह मंजुल भटक कर ली शरण अब आपकी

पार करना या न करना दोनों मर्जी आपकी

271

हमारे है श्री गुरूदेव हमें किस बात की चिंता
चरण में रख दिया जब माथ हमें किस बात की चिंता

1. न खाने की न पीने की न मरने की न जीने की
मेरे स्वामी को रहती है मेरी हर बात की चिंता

2. किया करते हो तुम दिन रात क्यों बिन बात की चिंता
रहे हर श्वास में भगवन रहे इस बात की चिंता

3. हुई किस बात पर किरपा बनाया दास प्रभु अपना
उन्हीं के हाथ में जब हाथ हमें किस बात की चिंता

272

हे मेरे सतगुरू प्रणमा बार बार प्रणाम
होठो पर हो आपका नाम बार-बार

1. चरणों में हो मन सदा चरण हो मंजिल सदा
हे दयालु भक्ति को दे दान बार-बार

2. मेरे दाता आप ने क्या नहीं दिया हमें
धन्य धन्य है आपको प्रणाम बार-बार

3. सोये जग को फिर जगाने आते है गुरूवर सदा

भक्ति में मन को लगाना नाथ बार-बार

4. बार बार हो जनम हमारा हर जनम में आप हो
यूँ ही हमको देना आप ज्ञान बार-बार

5. चाँदनी का दीप लेकर थाल फूलों से सजाया
आरती हम आपकी करे रोज बार-बार

273

हमें गुरूदेव तेरा सहारा न मिलता
ये जीवन हमारा दुबारा न खिलता

1. श्वासों की सरगम मध्यम हुई थी
जीने की आशा धूमिल हुई थी
तेरे नाम का जो सहारा न मिलता
ये जीवन हमारा दुबारा न खिलता

2. रिश्तो की चौखट पे ठोकर है खाई
अपने परायो की समझ ही न आई
सच्चा जो तेरा रिश्ता न मिलता
ये जीवन हमारा दुबारा न खिलता

3. किसमत की मौजो ने कश्ती डुबोई
जब सब लुटा तो तेरी याद आई

अगर मेरी कश्ती को सहारा न मिलता
ये जीवन हमारा दुबारा न खिलता।

274

हरि ओम हरि ओम बोलिये पलको के पट फिर खोलिये
ये है उपदेश गुरूदेव का सांसों की ये पूंजी यूँ न रोलिये

1. उसके मन मन्दिर में हरि हर पले रहते है
जो जागत सोते बस यही प्रेम से कहते है।

2. हरि नाम का रस पीकर हो शुरू प्रभात तेरी
हरि कृपा की छइया में बीत हर रात तेरी
हरि ओम .....

3 ये संस्कार हमने गुरू देव से पाया है
हरि नाम रटन सच्चा जग झूठी माया है
हरि ओम .....

275

हम तुम्हें प्यार गुरूवर करेगें–2
प्यार अब तक किया प्यार आगे भी करते रहेंगे

1. तुम ही ब्रह्मा गुरू जी हो मेरे
तुम ही विष्णु भी हो नाथ मेरे

तुम ही भोले हम तो पूजा तुम्हारी करगें

2. तुम ही माता पिता बन्धु मेरे
तुम ही सर्वस्य हो नाथ मेरे
नाथ तुम हो मेरे हम तो भगवान तुमको कहेंगे

3. तुमने दुख से हमें है बचाया
दुख में हंसना भी हमको सिखाया
तुमने जीवन दिया अब ये जीवन तुम्हें सौप देंगे।

4. खाली झोली थी हम लेके आये
पास कुछ था नहीं खाली आये
तुमने भर दी प्रभु झोली मेरी दानी तुमको ही हम तो कहेंगे

5. कौन हम है कहाँ से आये
किसके बन्धु सखा किसके जाये
ज्ञान तुमने दिया ज्ञानी तुमको ही हम तेा कहेंगे।

276

है प्रीत जहाँ की रीत सदा मैं गीत गुरू के गाता हूँ
ये गुरूवर की फुलवारी है मैं इनको शीश झुकाता हूँ
जय हो, जय हो जय हो, जय जय हो

1. सबसे पहले गुरू जी को नमन जिसने ये बाग लगाया है।

खुद महके फिर जग महकाया जिसने ये बाग सजाया है।
उन्होंने जीवन कुर्बान किया मैं लख लख शुकर मनाता हूँ
ये गुरूवर.....

2. सब बंदन करो प्यारे गुरू का जो रघुनन्दन कहलाते है
इतना ऊँचा आदर्श बना गर्दन खुद की झुक जाती है।
ऐसे गुरू जी का भक्त हूँ मैं ये सोच सोच इतराता हूँ
ये गुरू की.....

3. गुरू जी के आशीष से ये सींची सारी फुलवारी है।
गुरू जी भक्तों के मन में बसे अब उनके भरोसे गाड़ी है।
गुरू सतसंग में बैठे बैठे में नित नित खुसिया पाता हूँ
ये गुरूवर की.....

277

हे गुरू तुमको नमन तुमने दी मुझको शरण –और हुआ उपकार
आपके उपदेश से मन की ये दुविधा टली
और हुआ उपकार.....

भाग्य था मेरा बड़ा जो आपकी सेवा मिली
मेरे मन में ज्ञान की इक नई रौशनी जली
सतसंग में मन रम गया संतों का संग मिल गया

और हुआ उपकार.....
मेरी जो अरदास है आपने पूरी करी
सपना सारा सच हुआ आपने कृपा करी
मैं मनाऊ हर घड़ी भक्तों से जुड़ गई कड़ी
और हुआ उपकार.....

278

है प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं
मन कर ले प्रभु से प्यार और कोई प्यार नहीं

1. कहाँ घनश्याम ने उधो से वृन्दावन जरा जाना
वहाँ गोपियों को ज्ञान का कुछ तत्व समझाना
विरह की वेदना में वो सदा बेचैन रहती है
तड़प कर आह भरकर और रो रोकर यह कहती है

2. कहा उधो ने हंस कर मैं अभी जाता हूँ वृदावन
जरा देखूं कि कैसा है कि कठिन अनुराग का बन्धन
उलझकर वस्त्र में काटे लगे उधव को समझाने
तुम्हारा ज्ञान परदा फाड़े देंगे ये प्रेम दीवानों

3. अगर निर्गुण है हम तुम तो कौन कहता है खबर किसकी
अलख हम तुम है तो लखती नजर किस किस की

हो अद्वैत के कायल तो फिर क्यों द्वैत लेते हो
अरे खुद ब्रहम होकर ब्रहम का उपदेश देते हो

4. अभी तुम खुद नहीं समझे किसको योग कहते है
जो इस तौर योगी द्वैत में अद्वैत रहते है
उधर मोहन बने राधा वियोगिनी की जुदाई में
इधर राधा बनी श्याम मोहन की जुदाई में।

5. देखा जब प्रेम का अद्वैत उधो की खुली आँखे
पड़ी थी ज्ञान मद की धूल जिनमें वह धुली आँखे
हुआ रोमाच तन में बिंदू आंखों से निकल आये
गिरे श्री राधिका पग पर कहा गुरू मंत्र यह पाया
हे प्रेम जगत में सार और कोई सार नहीं

279

हमारे गुरू पूरण ज्ञानी मिले है वो कलयुग के लासानी मिले है

1. जीव भाव से मुक्त कराये आतम का दीदार कराये
हमारे गुरू आतम ज्ञानी मिले है

2. ममता है उनको जन-जन की जानत है वो सबके मन की
हमारे गुरू अंतर्यामी मिले है

3. निर्धन का वो ध्यान है रखते उनकी झोली स्वयं ही भरते

हमारे गुरू पूरणदानी मिले है

4. भक्तो का उन्हें ध्यान बहुत है उनकी चिंता उनको बहुत है
वही तो भक्तन हितकारी मिले है।

280

हजारों नाम है तेरे, मुझे तो ओउम प्यारा है।
जपूँ जब-जब अकेले में, तेरा ही नाम उचारा है।

1. नहीं तू दूर मेरे से, नहीं मैं दूर तेरे से
दो नयनाँ मूँदकर अपने मिले तेरा नजारा है।

2. क्षत्र छाया में तेरी ही बना अपना ठिकाना है।
बिठाकर गोद में अपनी, तू ही देता सहारा है।

3. तू ही माता पिता तू ही, गुरू भी तू है मेरा
तुझे ही याद कर कर के समय अपना गुजारा है।

4. मुझे मन्जूर है भगवन दिया सन्देश जो तुमने।
उसी सन्देश को मैने, स्वजीवन में उतारा है।

5. चमकते चाँद और सूरज, खड़ी चोटी हिमालय की।
जहाँ जाए नजर मेरी, तेरा ही सब पसारा है।

281

तर्ज-आपके दरबार में देखिये प्रभु हम आ गये

हर सुबह होती गुरू, सतगुरू तुम्हारे नाम से
दिन गुजरता शाम होती गुरू तुम्हारे नाम से

1. काम कोई न रूकेगा आये जो सतसंग में रोज
फल की न कामना सेवा कर निष्काम से
हर सुबह.....

2. देखे न अवगुण किसी के गुणों को देखा करे
गुठलियों से लेना क्या हमको तो मतलब आपसे
हर सुबह.....

3. हीरे मोती और रत्न की खान है प्यारा सतसंग
लूट लो जितना भी चाहो-2 नाम धन बिन दाम के
हर सुबह...

4. बात जो बस में नहीं है उसकी चिंता क्यों करें
छोड़कर तेरे हवाले सोते है आराम से
हर सुबह.....

5. मैं भी है मैखाना भी और साकी भी है रूबरू
मिल के सब अमृत पिये नैनों के सुन्दर जाम से
हर सुबह.....

282

होली खेल रहे नंदलाल, आज राधे की नगरी में-2

1. होली खेलन आये श्याम राधे की नगरी में-2
राधा रंग ली अपने रंग में, आज होली में

2. ललिता बोली विशाखा बोली अइयो होली पे-2
नारी बना के भेजे तोहे, श्याम होली पे.....

3. प्रेम रंग सब पे चढ़ायो श्याम ने होली पे-2
कोई बचो न श्याम रंग से आज होली में.

283

हम तुम्हरे थे गुरूजी तुम हमारे हो
हम तुम्हारे ही रहेगे ओ मेरे गुरूवर
हम तुम्हारे थे गुरू जी हम तुम्हारे है
हम तुम्हारे ही रहगेंगे ओ मेरे प्रीतम

1. तुम्हें छोड़ सुन नन्द दुलारे और न मीत हमारो
किसके द्वारा जाये पुकारू और न कोई हमारो
एक बार मेरी बाँह पकड़ लो ओ मेरे प्रीतम

2. तेरे कारण सब जग छोड़ा तुम संग नाता जोड़ा
एक बार प्रभु हंस कर कह दो तू मेरा मैं तरा

साँची प्रीत की रीत निभाओ ओ मेरे प्रीतम

3. दासी की विनती सुन लीजो ओर ब्रज राज दुलारे
आखिरी आस यहीं जीवन की पूरण करना प्यारे
एक बार हृदय से लगा लो ओ मेरे प्रीतम।

284

हम हाथ उठाकर कहते है
सतगुरू के प्यारे हो गये
कोई भला कहे कोई बुरा कहे
सतगुरू के प्यारे हो गये।

1. हम गली गली में जाते है
हम डगर डगर में जाते है
हम हाथ उठाकर कहते है
सतगुरू के प्यारे हो गये।

2. हम थे भी प्यारे गुरूवर के
हम है भी प्यारे सतगुरू के
हम रहेंगे प्यारे सतगुरू के
हम हाथ उठाकर कहते.....

3. हम आते हुए कहते है

हम जाते हुए कहते है
हम रहते हुए कहते है
हम हाथ उठाकर कहते है हम.....

4. हम खाते हुए कहते है
हम पीते हुए कहते है
हम नाच नाच कर कहते है
हम झूम-झूम कर कहते है
हम हाथ उठाकर कहते है हम.....

285

हम परदेशी फकीर कोई दिन याद करोगे

1. रमता जोगी बहता पानी
इनकी महिमा वेद न जानी
दसो दिशा जागीर, कोई दिन.....

2. सतसंग में सयन न रखावे
सतगुरू मिलन की राह बतावें
वे है गंगा के तीर, कोई दिन.....

3. प्रेम नगर उनका स्थाना
जहाँ पे सतगुरू हंस सुजाना

मेटे भव की पीर कोई दिन.....

4. सतगुरू हंस की महिमा भारी
निश दिन नाम जपे नर नारी
काटे यम जंजीर कोई दिन.....

5. मन रोकन की विधि बतावे
दिव्य ज्योति घट-घट दिखलावे
दे संशय को चीर, कोई दिन.....
माता पिता और भाई बहना
भूल चूक की माफी करना
ये है अधम शरीर कोई दिन.....

286

हजारो शुकराने है गुरू के
जिसने जीना सिखा दिया है।
मिलन गुरू का जब से हुआ है
ये दिल गुरू का ही हो चुका है।

1. नजर गुरू की जिस पर हो जाये
बन्दे से वो तो खुदा हो जाये
ये सर हमेशा झुका रहेगा गुरू से

सब कुछ ही मिल चुका है।

2. गुरू के जीवन को आगे रखकर
हम अपना जीवन सफल बनाये
खुद अपने जीवन को देखकर
गुरू के ज्ञान पे यकीं हुआ है।

3. माया को जब कोई माँग ही समझे
उसी का जीवन सफल हो जाये।
हर श्वास अपनी ये सच में जाये
अब तो दिल की यही इच्छा है।

287

अच्छे कर्मो की रीश कोई कोई करता है
खुद अपनी ही तफतीश कोई कोई करता है

1. सुख में वो अकड़ता है दुख में पैर पकड़ता है।
हर हाल में जय जगदीश कोई कोई करता है
अच्छे कर्मो की .....

2. देख तरक्की भूले है माया में ही फूले है
सब तेरी बख्शीश कोई कोई कहता है

अच्छे कर्मो की ...

3. जग उजियारा हो जाये गुरू हमारा हो जाये
प्रेम तुम्हारा हो जाये भक्त तुम्हारा हो जाये
ये दुआ झुकाकर शीश कोई कोई करता है।

288

अगर दिल गुरू से लगाया न होता
दुनिया ने अपना बनाया न होता

1. न जाने पड़े रहते कब तक भंवर में
जो सतगुरू का प्याला पिलाया न होता

2. इस दुनिया के दुख को हर लो हे नाथ
करूणा कर करूणा सागर कहाया न होता

3. ये सेवक कहे अब मिला सतगुरू प्यारे
जो भक्ति का रंग चढ़ाया न होता

289

तर्ज आ लौट के आजा मेरे

आ दरस दिखा दे गुरूदेव तुझे तेरे लाल बुलाते है
तुझे रो रो पुकारे मेरे नैन तुझे तेरे लाल बुलाते है

1. आँखों के आँसू सूख चुके है अब तो दरश दिखा दे

कब से खड़े है दर पर तेरे मन की प्यास तू बुझा दे
तेरी लाला निराली गुरू देव तुझे.....

2. बीच भवर में नैय्या पड़ी है आकर तू पार लगा दे
तेरे सिवा मेरा कोई नहीं है आकर तू पार लगा दे
क्यों देर लगाते गुरूदेव तुझे.....

3. डूब रहा है सुख का सूरज गम की बदरिया छाई
उजड़ गई बगिया अब मन की कली मुरझाई
करे विनती ये बालक आज तुझे

4. वैसे तो तुम हो मेरे मन में आँखे नहीं मानती है
इक पल गुरू से अब ये बिछुड़ कर रहना नहीं चाहती है
बरबस बरसाये नीर तुझे.....

290

आनन्द खजाना मैं तो गुरू जी से माँग लाई

1. श्रद्धा भी मांग लाई भक्ति भी मांग लाई
जीवन भर की सेवा मै तो गुरू जी से माँग लाई

2. गीता भी मांग लाई ग्रन्थ भी माँग लाई
वेदन को सार मैं तो गुरू जी से माँग लाई

3. सब कुछ मैं लेके आई कुछ भी न देके आई

जीवन भर का साथ मैं तो गुरू जी से माँग लाई

4. ज्ञान भी मांग लाई प्रेम भी माँग लाई

अखण्ड वैराग्य मैं तो गुरू जी से माँग लाई

291

इतनी पिला दे सतगुय मुझे होश में न आना

नजरो से तू पिला दे भर दे मेरा पैमाना

1. हम होश खो चुके है बन के तेरे दीवाने

दुनिया का गम नहीं है चाहे छोड़ दे जमाना

2. मेरी जिन्दगी भी तू है मेरी बन्दगी भी तू है

मेरी जिन्दगी के मालिक मेरा तू ही आशियाना

3. दुनिया में तो है लाखों तुझ सा कोई नहीं है

तेरे दर पे आ गई हूँ मैं छोड़ के जमाना

4. बीती जितनी जो बीती उसका तो गम नहीं है

रहती है जिन्दगी बाकी चरणों में हो ठिकाना

292

इस लायक मैं नहीं था गुरूवर हो ऽऽऽ–2

तूने खूब दिया है ये तो प्रेम है तेरा ऽऽ–2

1. हंसता गाता खुशी मनाता ओ ऽऽऽ–2

ये संसार दिया है ये तो प्रेम है तेरा

इस लायक.....

2. खाली हाथ न आए जिस ओर से हाथ बढ़ाऊँ

जितना मुश्किल लागे ऽऽ तेरी कृपा से सहज पा जाऊँ

3. मै पैदल ही आया था गाड़ी में मुझे बिठाया

सर पे छत भी न थी तूने बंगला बनवाय

4. जिसका कोई मोल नहीं ऽऽऽ

वो उपहार दिया है

ये तो प्रेम तेरा

293

इश्क इबादत हो गया तेरा

जब से थामा दामन तेरा

1. मुस्लिम या हिन्दू मिलता है।

हर सूरत में तू मिलता है

तुझसा लगता है हर चेहरा

2. प्यार की कोई हद नहीं है

बेहद की सरहद नहीं है

दिल से दिल तक इसका डेरा

3. लाख किताबे पढ़ ले कोई
ऊँचे पर्वत चढ़ ले कोई
मुर्शीद बिना न मिटे अंधेरा

4. बेहद से जौ जोड़-नाता
वो ही प्रेमी मंजिल पाता
रब के अन्दर कर बसेरा

294

ऐसी पिलाई साकी कुर्बान हो चुके हम
अब तक रहे जो बाकी अरमान खो चुके हम

1. पहली नजर में ऐसा जाम है पिलाया
सारी अकल हुनर खो नादान हो चुके हम
ऐसी.....

2. तेरे मुकाबले का नहीं हुस्न है कसी में
जलती हुई शमा पर परवान हो चुके हम
ऐसी.....

3. रहती हवास भी दिल में भर-भर के जाम पीये
इनकार तुम न करना इकरार कर चुके हम
ऐसी.....

कौन यहाँ ऐसा है जिसको यह हर बार मिला

295

ऐसी पिला दे साकी बन जाये तू हमारा
ख्वाहिशे यही मुझको मैं भी बनूँ तुम्हारा

1. नजरो से मय का प्याला ऐसा पिला खुदाया
नजरो में बस रहे तेरा ही बस नजारा

2. है खेल नजर का घटता है क्या तुम्हारा
कर दो काम तो हम दम भूलूँ जहाँ में सारा

3. बैठे है ता कयामत दर पे लगा के नारा
बस एक तू हमारा बस एक तू हमारा

296

कर दो दूर प्रभु मेरे मन में अंधेरा है
जब से तेरी लगन लगी हुआ मन में सवेरा है

1. इतना बतला दो प्रभु मेरी मंजिल है कहाँ
भेज दो हमको वहाँ जहाँ प्रेमियों का डेरा है

2. तेरा दर्शन पाये बिना हम तो हटेंगे नहीं
डाल दिया हमने प्रभु तेरे चरणों में डेरा है।

3. जब से तेरी झलक मिली मेरे मन की कलियां खिली

काट देओ पाप प्रभु यह दास हीं तेरा है।

4. गुरू तुमसे बिछड़े हुई कई युग बीत गये
अब प्रभु आन मिलो बस आसरा तेरा है।

297

कुछ न बिगड़ेगा तेरा सतगुरू शरण जाने के बाद
हर खुशी मिल जायेगीं चरणों में झुक जाने के बाद

1. जब तलक है भेद मन में कछ नहीं बन पायेगा
रंग लायेगीं ये भक्ति भेद मिट जाने के अबाद

2. प्रेम के मंजिल के राहीं कष्ट पाते है जरूर
बीज फलता है सदा मिट्टी में मिल जाने के बाद

3. देखकर काली निशा को ऐ भंवर मत हो उदास
बन्द कलिया फिर खिलेगीं रात ढल जाने के बाद

4. फूल से जाकर ये पूछो कैसीं छायीं है बहार
कब तलक काँटो पे सोया डाल पर आने के बाद

298

गुरू का नाम हमारा जीवन हो
गुरूनाम हमारा हीं धन हो
गुरू नाम हमारा जप तप हो

गुरू नाम हमारा तीरथ हो

1. जग की सब दौलत व्यर्थ सुनो
गुरू नाम की दौलत के आगे
गुरू नाम हमारी दौलत हो
गुरूनाम हमारी अमानत हो

2. जग के सुख वैभव व्यर्थ सभी
गुरू नाम के सुख के आगे
गुरू नाम के सुख का अनुभव हो
गुरू नाम के वैभव का सुख हो

3. जग के सब नाते झूठे है
गुरू नाम के नाते के आगे
गुरू नाम हमारा नाता हो
गुरू हमारा नाता हो

4. जग के प्रपंच तज डालेगे
गुरू नाम लाल धन के आगे
गुरू नाम हृदय में हरदम हो
गुरू नाम जुबा पर हमदम हो

299

गुरू कर कृपा दो ऐसी तुमसे प्यार हो जाये
जहाँ की कोई ताकल जुदा तुमसे न कर पाये

1. तुम्हारा नाम लू हरदम तुम्हारा जाप हो हरदम
तुम्हारा नाम जपने की फकत आदत सी हो जाये

2. तुम्हारे द्वार पर आऊँ यही प्रभु कामना मेरी
हमें इस दर पे आने की प्रभु आदत सी हो जाये

3. तुम्हारे गीत ही गाऊँ भुला कर जग के गम सारे
गमो में गीत गान की हमें आदत सी हो जाये

4. जहाँ के सुख सभी फीके तुम्हारे नाम के आगे
तुम्हारे नाम के आगे न सुख कोई हमें भाये

5. जीयूँ में चाहे बरसों तक या मर जाऊँ अभी इस पल
तुम्हारा नाम एक पल भी न मन मेरा में बिसराये

300

गुरू प्रेम का प्याला भक्तों पर चढ़ गया
झूम उठे है भक्त देखो सारे सारे
गुरू पर्व पे आए गुरू प्रेम को पाएं
झू उठे है.....

हाँए मैं डूबी गुरू के प्रेम में ऽऽऽ
मैं तो हैप्पी हैप्पी हो गई

1. गुरू का साथ न छोडू पीछे पीछे दौडू
पीछा न छोडू घूमू दाए बाएं
गुरूवर मुझे सिखाएं ज्ञान का पाठ पढाएं
सही मार्ग दशाएं देखा दाएं बाए
गुरू संग मेरा जीवन फिक्सड हो गया
मैं तो हैप्पी हैप्पी हो गया।

2. गुरू की गली में जाके वेट करते
दर्श पाने को बड़ा वेट करते
देखूँ जो हटा के गुरू खिड़की का पर्दा
पल में महक जाएं जीवन मेरा ऽ ऽ ऽ ऽ
गुरू संग मेरा जीवन जुड़ ही गया
में तो हैप्पी हैप्पी-2 हो गया।

301

गुरू तेरी लाला कभी समझ न पाऊँ मैं
तेरे चरणों में सदा शीश झुकाऊ मैं

1. पानी से भी गुरू तूने दीप जलाएं है।

नीम के पत्ते तूने मीठे बनाऐं
तेरी महिमा का कैसे गुणगान गाऊँ मैं
तेरे नाम वाली सदा ज्योत जलाऊँ मैं

2. बन के दयाल गुरू घर घर बाटा तूने
लेके विष दुनिया से अमृत बाटा तूने
दीन दुखियों का दुख अपना माना तूने
सारा संसार गुरू अपना ही माना तूने
तुझसा दयालू कहीं ढूढ न पाऊँ मैं
तेरी करूणा के गीत सबको सुनाऊ मैं

3. गुरू तेरा जीवन भी कितना महान है
चरणों में तेरे सारा झुकता जहान है।
किसके है भाव कैसे तुमने पहचाना
गुरू तेरी भक्ति पे हम भक्त कुर्बान है।
तुझसे बिछड़ के न कभी रह पाऊँ मैं
तेरा बस –3 हो जाऊ मैं–2

302

चली जा रही है अनमोल श्वांसे
जो कुछ बची है उन्हीं को सम्भालो

1. लिया जन्म तुमने बड़े कष्ट सहकर
पुकारा प्रभु को उलटे लटककर
उसी भक्त वत्सल के अब गीत गाओ

2. बचपन बिताया रूदन और हंसी में
पिया दूध मा का ललक कर खुशी से
बचपन बिताया तो यौवन सम्भालो

3. मिला तन रतन सा इसे चन्द्र कहते
हमारा हमारा हीं कह कह के मरते
मिला पंच तत्व से उसी में मिला लो

303

जगत में चिन्ता मिटी उन्हीं की
जो तेरे चरणो मे आ चुके है
वहीं हमेशा हरे भरे है
जो तेरे चरणों में आ चुके है

1. न पाया तुमको वजीर बनकर
न पाया तुमको फकीर बनकर
उन्हीं को दर्शन दुए है तेरे
जो तेरे चरणों.....

2. न पाया तुमको किसी ने बल से
न पाया तुमको किसी ने छल से
वही परमपद को पा गये है।
जो तेरे चरणों में आ चुके है।

3. किसी में जग में करी भलाई
किसी ने जग में करी बुराई
वही सुमार्ग पर चल पड़े है।
जो तेरे चरणों में आ चुके है।

4. प्रभु जी विनती सुनो हमारी
बनाओ बिगड़ी दशा हमारी
निराश्रितो के हो आसरा तुम
हम तेरे चरणो में आ चुके है।

304

जिसने तुम्हारी याद को दिल मे बसा लिया
सोये हुएनसीब को उसने जगा दिया

1. धन्ने के दिल मे जब तेरे मिलने की धुन लगी
पत्थर में आके आपने दर्शन दिखा दिया

2. मीरा ने तूरे नाम पे विष को था जब पिया

पीते ही उसको आपने अमृत बना दिया

3. गर आये लाख मुश्किलें इंशा के सामने
रहमत तेरी न उनको ही आंसाँ बना दिया

4. भूला था बेखुदी में मैं तेरे नाम को
तेरी ही एक झलक ने मुझे अपना बना लिया।

305

जो अर्जी लगे गुरूद्वार बिगड़ी क्यों न बने
जब बैठा मेरा भगवान तो बिगड़ी क्यों न बने

1. दुख में भी सुख में साथ हो मेरे
गताये क्या तुमको सब जानो प्रभु मेरे
मेरी सुन लो प्रभु अरदास बिगड़ी.....

2. बिगड़ी न बने तो जल्दी आना
कहीं न जाना मेरे गुरूदार आना
वो तो सुन लेगे तेरी फरियाद बिगड़ी.....

3. इतनी जल्दी कोई न सुनेगा
मेरा गुरू पल में जादू करेगा
वो करता भक्तो से बड़ा प्यार बिगड़ी....

306

जिसने जानीं गुरू की माया–2 दौड़ दौड़ के सत्संग में आया–2

गुरू का देखा कमाल कि गुरू का जबाब नहीं–2

भक्तों ने उड़ाया गुलाल कि गुरू का जबाब नहीं

गुरू है हमारी शान के कि गुरू का जबाब नहीं

1. भक्त जन सब मिल के पुकारे गुरू ही सबके काज सवारे

मिटते है सब जंजाल की गुरू का जबाब नहीं

भक्तों ने उड़ाया गुलाल.....

2. तीनो लोक के गुरू है दाता सतगुरू हमारे भाग्य विधाता

रखते है सबका ख्याल कि गुरू का जवाब नहीं

गुरू का देखा कमाल.....

3. गुरू वाणी का मंत्र निराला जो भी पीले सतसंग काप्याला

सबको करे खुशहाल कि गुरू का जवाब नहीं

भक्तों ने .....

4. भक्तों की आँखों के गुरू है तारे

भक्तों का मेला गुरू के द्वारे

प्रेम रस की हुई बरसात के गुरू का जवाब नहीं

भक्तो.....

307

जिनका गुरू जी के चरणों से सम्बन्ध हो गया–2

उनके घर मे आनन्द ही आनन्द , आनन्द ही –2 रह गया

1. गुरू की शक्ति को जो भी प्रणाम करते है–2

गुरू की भक्ति में मन को है जो भी रंगते

गुरू की कृपा से –2 तन मन प्रसन्न हो गया–2

उनके घर मे आनन्द हो .....

2. जो भी श्रद्धा से आता गुरू के दरबार में

कभी ठोकरें न खाये इस संसार में

उसका रास्ता –2 बुराई का भई बन्द हो गया,

हा बन्द हो गया

उनके घर मे आनन्द हो .....

308

तुम मीरा बनो तो तुम शबरी बनो तो

गुरू आयेगें राम श्याम बनके

1. गीत भक्ति के गुरू जी से मांगना

प्रेम डोरी से गुरू जी को बांधना

तुम सुदामा बनो तो तुम केवट बनो तो

2. चाहे दुख मे रखे चाहे सुख मे
नाम गुरू जी का हो सदा मुख मे
सूरदास बनो तो तुलसीदास बनो तो

3. भाव सेवा का सदा मन मे रखना
राह गुरू जो चलायें वही चलना
तुम अर्जुन बनो तो हनुमान बनो तो

309

तूने मूर्ति कहा मै मूर्ति वान था
तूने पत्थर कहा मै भी पाषाण था
यह तो तेरे विश्वास की बात है
धन्न जाट बुलाया मै झट आ गया

1. सच तो यह है तूने बुलाया ही नही
बिन बुलाये कभी मै आया नही
तूने प्रेम से मुझको खिलाया नही
मै तो विदुरानी के छिलके तक खा गया

2. प्यार तो प्यार है सीधी सी बात है
प्रेम पूँछता है कि क्या जात है
चाहे हिन्दू हो कोई चाहे मुसलमान हो

मुझको रसखान सलवार पहना गया

3. यार की मर्जी के आगे यार का दम भर के देख
तर्क से मिलता नही अर्जी करके ही तू देख
बे इरादा मरने से क्या फायदा बा इरादा मरकर देख
सारे तमाशा करके देख चुका अब यह तमाशा करके देख

310

दुख दूर कर हमारा संसार के रचैयया
जल्दी से दो सहारा मझधार मे है नैयया

1. तेरे बिना न कोई रक्षक यहाँ हमारा
ढूंढा जहान सारा तुम सा नही खैय्या

2. संसार खूब देखा आँखें पसार करके
साथी नही हमारे माँ , बाप और भैया

3. सुख के सभी साथी दुनिया के यार सारे
तेरा ही नाम प्यारा दुख दर्द से बचैया

4. दुनिया मे फंस के हमको हासिल हुआ न कुछ भी
तेरे बिना हमारा कोई नही सुनैया

311

दिल मे बैठा राम रमैया तुझको नजर न आये

पाथर मुर्ति आप बनाये उसको शीश झुकाए

1. सुख की खातिर जोड़ी माया सुख तो हाथ न आया
जिस कारण सुख उपजे मन मे वो ठाकुर बिसराया
तुझे कैसे कोई समझाये तुझको नजर न .....

2. जग की वस्तुथिर नहीं कोई पल-पल मिटती जाए
घट-घट मे जलती जीवन ज्योती वो सब में मुस्काएं
क्यों उनसे नैन चुराए तुझको नजर .....3.

पत्थर की तूने नाव बनाई कैसे पार लगेगा
अब से अपना भाग्य जगा दे जीवन सफल बना दे
वो पल मे पार लगाए तुझको नजर .....

4. कैसे मन से करता है तू उस जग का व्यवहारा
इक चित होकर कभी न सोचा कौन है करने वाला
क्यो वृथा गर्व जताए तुझको नजर .....

5. पत्थर को तूने राम है माना जीवित राम न जाने
रमता राम सब घट भीतर उसको नही पहचाना
क्यों भेद भाव न मिटाए तुझको नजर .....

6. सतगुरू शरण पड़े बिन कोई भेद न उसका पाया
कण-कण मे कर आत्मा दर्शन रमा सभी हरिराया

तू आनन्द मे हीं समाए तुझको नजर .....

312

धूल मिल जाये गुरू तेरे चरनन की
और क्या चाहिये और क्या चाहिये
आँखें प्यासी रहे दर्शन की
और क्या चाहिये और क्या चाहिये

1. सुना जब से गुरू तेरा ऐसा वचन
हुआ मनवा मगन लागी ऐसी लगन-2
रही सुधि बुधि नाही अब तन मन की और क्या चाहिये...

2. मेरी अँखियों का सचमुच का तारा है तू
मेरे जीने का असली सहारा है तू-2
डोर तुमसे बंधी रहे जीवन की और क्या चाहिये.....

3. मन के मंदिर मे तुझको बिठाऊँ सदा
तुझपे श्रद्धा सुमन को चढ़ाऊ सदा
बन चंदन धूल तेरे चरनन की और क्या चाहिये.....

4. तूने मुझको जो ज्ञान रतन धन दिया
खुशियों से झोली तूने मेरी भर दी
नही दरकार सोना रतन धन की और क्या चाहिये.....

5. दूर होना कभी न गवारा करूँ
रूप निर्मल तेरा बस निहारा करूँ
प्यास बुझने न पाये इन अखियन की और क्या चाहिये .

313

नये साल की खुशियां पाने आये है–2
हो गुरूवर तेरे दर दिवाने आये है

1. पिछले बरस तुमने हमसे एक वादा किया था
आज गुरू जी –2
चेहरे पे मुस्काने देंगे ले लेगे आँखो का पानी–2
तुझको उसकी याद दिलाने आये है–2
नये साल की .....

2. तेरी कृपा की गंगा से एक सागर हमको मिल जाय–2
सूखे हुए दिलो की बगिया तेरी कृपा से खिल जाए
जन्म–जन्म की प्यास बुझाने आए है–2
नये साल की .....

3. ये सारे भक्त है गुरूवर तेरे चरणों के पुजारी –2
खाली झोली भर दे सबकी माँग रहे है दया तुम्हारी

हम बहने फरियाद सुनाने आई है–2
ओ गुरूवर तेरे दर पर दीवाने आए है

314

नाम लिया जाये शुभ काम किया जाय
जो भी किया जाये निष्काम किया जाय

1. करके अहसान जो भी जताते वो
तो देख प्रभु को नहीं पाते
कण–कण मे वो हीं समाया वो तो ये हीं समझ नहीं पाते
उसको सब है खबर रखता सब पर नजर
छुप के किया जाय खुले आम किया जाय

2. करके शुभ काम जो भूल जाता
वो हीं उसके काम है आता
दान देकर न कुछ भी चाहता
सौ गुनह उसको देता है दाता
दीन बन्धु हे वो करूणा सिन्धु है वो
क्यो न सुबह शाम उसका नाम लिया जाय

3. मन ये कहता है मैने दिया है बोल तूने कहाँ से दिया है
दानी कहते सुना है प्रभु को जिसने

सब कुछ तुझको दिया है

यह कर्ज है तेरा अब फर्ज है तेरा

जिसने दिया क्यो न उसका नाम लिया जाय

315

न कजरे की धार न मोतियों के हार र

न कोई किया श्रंगार गुरूजी तुम कितने सुन्दर हो–2

मन मे ज्ञान भरा तन मे ज्ञान भरा

जीवन मे ज्ञान भरा गुरूजी तुम कितने सुन्दर हो

1. सारी दुनिया हरजाई तेरे ज्ञान मे है सच्चाई

इसी लिए छोड़ के दुनिया तेरे ज्ञान मे मै हूँ आई

उड़े खुशबू जब चले तू बोले तो बजे सितार

2. तेरा अंग सच्चा सोना मुस्कान सच्चे मोती

तू घूप की है छाया तू रूप की है ज्योति

तेरी सूरत जैसे मूरत –2 मै देखू बार–बार

3. तेरे ज्ञान मे जो भी आये वो लाख मोती पाये

इसलिये ओ मेरे गुरूवर हम ज्ञान मे तेरे आये

सुन लो विनती ओ गुरू जी कर दो मेरा उद्धार

316

बात समझ मे आई अब हमारी

झूठी है सारी दुनिया दारी

और न लो अब परीक्षा हमारी

आये शरण अब हम तुम्हारी

1. मै मेरा का भरम अब है टूटा

समय ने किया रिश्ता ये झूठा

मोह माया मे मति गई मारी

2. जिनपे भरोसा करके समझा था अपना

टूटा भरम सारा मिथ्या था सपना

मतलब की थी सबकी यारी

3. चंचल मन ने बहुत नचाया

धन ही कमाने का लक्ष्य बनाया

चैन गया उड़ी नींद बैचारी

4. अंतिम आशा भरोसा तिहारा

थक गया हूँ चहूँ ओर अंधेरा निराशा

दृष्टि दया की करो मंगल कारी

317

बड़ा दुख पाया गुरू चरणों को छोड़ के
रो–रो के बुलाये बेटा आओ गुरू दौड़ के

1. भूल तो मेरी गुरू माफ कर देओ न
हालत बुरी है मेरी दया कर देओ न
और न सताओ अपने मुखड़े को मोड़ कर
रो रो .....

2. मुझे न पता थ गुरू ऐसा दुख पाऊँगा
तुमको भुला कर दर दर ठोकरे मै खाऊँगा
चरणो मे बैठा तेरे गुरू कर जोड़ के
रो रो .....

3. साथी भी छूटे सारे धोखा मै खाया हूँ
तुमको भुला के गुरू चैन न पाया हूँ
आँखे खुली अब मेरी सबको टटोल के
रो रो .....

4. गुरू और शिष्य का रिश्ता अनोखा
बाकी तो जग है सारा धोखा ही धोखा
प्याली पिला दे गुरू हरि ओम घोल के

रो रो .....

318

बरसे कितना सुन्दर रस बरसा के देख ले
क्या रस है हरि गुण गाने मे कोई गाके देख ले

1. नारद शुक सनकादि आस प्रहलाद ने गाया
शंकर ने हरि नाम हंस मन मानस मे तैराया
जाय न उसके पास कभी उस माया पति की माया
जिसने आत्म समर्पण कर हरि पथ पर पैर बढ़ाया
पत्र पुष्प फल जल सप्रेम चढ़ा के देख ले
भव भय छूटे हरि पथ पर पैर बढ़ा के देख ले

2. गाकर देखा वाल्मीकि ने आदि कवि कहलाये
पार हुए भवस्वयंम और कितनों को पार लगाये
नाम प्रभाव बज श्री हरि का कोटिक पाप नशाये
हुआ लुटेरा संत हदय जस अजहूँ जग गाये
राम नेह सुखकर है नेह लगा के देख ले
प्रभु का खुला द्वार सबके हित लाके देखले

3. नेह लगाई बालक ध्रुव ने निश्चल पदवी पाई
है सुखकर प्रभु का प्यार जगत मे साबित कर दिखलाई

राँका बाँका तुलसी मीरा धन्नी सदना कसाई
सब पाये ब्रहमानन्द प्रभु से जिसने प्रीत लगाई
इसी राह से चाह मिटे अजमा के देख ले
शांति नहीं संतोष बिना कोई पाके देख ले

4. बिन संतोष न काम मिटे और काम अछत सुख नाहि
राम भजन के बिना कभी सह काम न मन से जाहि
बिनु जाने नही विश्वास बिना विश्वास न भक्ति हठाई
भक्ति बिना भगवन्त मिले न करि विचार मन माहि
जल बिन चले न नइया कोई चला के देख ले
बिनु गुरू मिले न ज्ञान ग्रन्थ उलट कर देख ले

5. लेकिन वो अनन्य मन से श्री हरि से नेह लगावे
ताके घर को योग क्षेम हरि आकर स्वयंम निभावे
इसी लिये आओ भैया हम नित्य हरि गुण गाये
दौड़ पड़े भगवन गरूण तज ऐसी टेर लगायें
आरंत टेर सुने प्रभु टेर लगा के देख ले
कितना मीठा प्रभु भक्ति फल खा के देख ले

6. रामायण गीता मे गाया बिल्कुल नापा जोखा

जानबूढ कर माया के हाथों मत खाओ धोखा
नारायण पर नारायण का रंग चढ़ा है चोखा
दुनिया के सारे रंगो से है ये रंग अनोखा
क्या सुख है इस पागलपन मे पगला के देख ले
मोहन उर मे बसे प्रेम का रंग चढ़ा के देख ले

319

भजले हरि को एक दिन तो है जाना
जीवन को यदि सफल बनाना

1. किसका गुमान करे कुछ भी न तेरा
दो दिन का है ये रैन बसेरा
खाली हाथ आया और खाली हाथ जाना

2. पाँच तत्व की तेरी बनी ये काया
काया मे तेरी हरि है समाया
उसे ढूढने को नहीं है दूर जाना

3. यह धन दौलत माल खजाना
जिसपे हुआ तू इतना दीवाना
आज है तेरा कल नहीं है ठिकाना

4. हरि नाम की एक ज्योति जगाले

जो कुछ किया है उसे तू भुला दे
दास कहे अगर मुक्ति जो है पाना

320

मेरे गुरूवर हजारो नमन आपको
मेरे मालिक हजारो नमन आपको

1. आप जैसा दयालू मिलेगा कहाँ
लाख ढूढ़े कोई हाथ मे ले शमा
ढूढ़ डाले भले हीं जमीं आसमां
ऐसा रहबर मिलेगा न इनसान को

2. एक पग आपकी ओर जो भी बड़ा
आपका स्नेह अभिराम उसको मिला
स्वंम बढ़कर सम्भाला उसे आपने
मिटा कर उसके सम्पूर्ण अज्ञान को

3. राम आ मुक्ति का मार्ग बतला गया
कृष्ण भी ज्ञान गीता का सिखला गया
आपने हीं बतलाई सहज साधना
पथ खोला सुगम विश्व कल्याण के

4. व्यक्त शब्दों मे होती नहीं भावना

आज बस कर रहीं हूँ यहीं कामना
हाथ हो मेरे सिर पर सदा आपका
मै भीं छूतीं रहूँ आपके पाव को

321

मेरा रूठे न सतगुरू प्यारा
चाहे सारा जग रूठे–3

1. मै तेरीं हूँ तू है मेरा
हो जाये तुझसे प्रेम घनेरा
तेरे बिन सब है अंधेरा
चाहे सारा जग रूठे

2. मुझमे अपना प्रेम बढ़ा दे
मन मंदिर मे ज्योति जगा दे
तेरे प्रेम ने है सबको तारा
चाहे सारा जग रूठे

3. तेरे बिना न मै जीना चाहूँ
चरणों मे तेरे रहना चाहूँ
तेरे साथ मुझे मरना गवारा
चाहे सारा जग रूठे

4. प्यार से जीना सिखा दे मुझको
प्यार से मरना सिखा दे मुझको
तेरे नाल मै प्यार बढ़ावा
चाहे सारा जग रूठे

322

मैने झोली फैला दी है सतगुरू
अब खजाना तू प्यार का लुटा दे

1. आया बनके मै प्रेम पुजारी
आया बनके मै दर का भिखारी
इतना मुझको तो दे दो सतगुरू
मेरी मांगने की आदत छुड़ा दो

2. मुझको इतनी शरम आरही है
जो जुबाँ से न कही जा रही है
हो सके तो दया कर दो सतगुरू
अपनी सेवा मुझको लगा लो

3. ऐसे कब तक चलेगा गुजारा
थम लो आके दामन हमारा
सबकी बिगड़ी बनाते हो सतगुरू

आज मेरी भी बिगड़ी बना दो

323

मेरे सतगुरू ने ऐसा करम कर दिया
मेरी रंग रंग मे यारो नशा हो गया

1. ख्वाब मे भी न देखा कभी मयकदा
मय हुआ भी न यारो नशा होगया
एक साकी की नजरो का देखा नशा

2. जिसको बचना हो नजरो से बचके रहो
वर्ना बोलोगे यारो नशा हो गया
खुद को कर दे नजर तब तो मिलती नजर
जान लो राज यारो नशा हो गया

324

मन की मुरादे माँगो रे भक्तो गुरूवर हुए है दयाल
कि फिर से गुरू पूर्णिमा आ गई-2
ज्योति जला लो गुरू के गुझा गा लो कट जायेंगे जंजाल
कि फिर से .....

1. ज्योति स्वरूप गुरू बडे दयावान सदा उपकार करते
खुशियों का फैलाते उजयाला दुखों का अंधकार हरते

मन मे लगन ले आजाशरण –2 फिर चिंता न कोई मलाल
कि फिर से गुरू .....

2. आशा की डोर बंधी लेके विश्वास
आती भक्तों की टोलिया–2
होती है पूरी मन की मुरादे भेजे भर भर के झोलिया–2
द्वार निराला दरवाजा न ताला –2 ये करते सबको निहाल
कि फिर से गुरू.....

3. गुरू पूर्णिमा मे भक्तो जन मिलके गुरू को रिझाओ–2
पांव धुलाओ चुनरी उटाओ माथे तिलक लगाओ
हलवा पूड़ी का भोग लगाओ हो जाओगे खुशहाल
कि फिर से गुरू .....

325

ये तो सच है कि भगवान है है मगर वो भी अनजान है
धरती पे रूप गुरूदेव का उस विधाता की पहचान है

1. जन्म न दे तो क्या कष्टो को तो हरे
अपने भक्तो मे हीं प्राण जिनके बसे ओ
गुरू के रूप मे हे प्रभु पाया हम सबने वरदान है

धरती पे .....

2. हंसी मुख पे रहे आँखो में तेज है
प्रेम की गंगा हरदम प्रवाहित रहे ओ
कितने उपकार है क्या कहे ये बताना न आसान है
धरती पे .....

3. तत्व ज्ञान देकर भक्ति मन मे भरे
प्रभु हरदम साकार दिखाया करे ओ
कितने उपकार हे क्या कहे ये बताना न आसान है
धरती पे .....

326

लुटाये रहे गुरू जी राम नाम धनवाँ
लूटे में नाहीं बा कौनो बन्धनवा

1. लूट रहे माई बापू लड़का लुगाई
सतसंगी बहिने लूटे गँऊवा जबाई
भौजी के लूटत देखली भइया के सगवा

2. कलकत्ता कानपुर दिल्ली बरेली
लखनऊ शहरवा के भक्त अलबेली
मतलब हमार लूटै सारा जहनवा

3. समय के रहनुमा धरतिया पर आय के
सखिया बनावत हरि रामधन लुटाये के
रहे बा मकसद बा इहे गियानवा

4. मनई के रूपवा में लई के अवतार हो
आई के धरतिया पे करता उपकार हो
सफल बनाये सबकरा ये जनमवाँ

327

लुटा लिया भण्डार सतगुरू प्यारे ने
कर दिया माला माल सतगुरू प्यारे ने

1. जैसी जो भावना लाया वैसा हीं फल वो पाया
न हीं खाली उसे लौटाया वो मन हीं मन हर्षाया
अरे कर दिया उसको निहाल सतगूरू प्यारे ने .....

2. जो लगन लगाये सच्ची है उसकी नाव न अटकी
बेड़े को पार लगाये न हीं देर करे वो पल की
अरे मिटा दिया जंजाल सतगुरू प्यारे ने

3. चरणों की करे जो सेवा वो पाये मिश्री मेवा
जिसने है माँगा बेटा वो चाँद सा टुकड़ा पाया

अरे कर दिया सबको निहाल सतगुरू प्यारे ने

4. जिसने श्रंगार सजाया वो गुरू का दशैन पाया
वो मन हीं मन हर्षाया नैनो मे रूप समाया
अरे कर दिया जनम सुधार सतगूरू प्यारे ने .....

328

सब खुशियाँ आती है जब गुरू जी आते है
ले ले के चरण धूली गुरू मुख मुस्काते है

1. ओने से गुरूवर के शुभ मंगल होता है
गंगा की तरह पावन मन निर्मल होता है
वे अपने भक्तो को सब सुख दे जाते है

2. तन मन धन के सारे दुख दूर करे दाता
अरदारे भक्तो की मंजूर करे दाता
विश्वास जो करते है वो सब कुछ पाते है

3. गुरूवर के आने से ये आंगन महक उठा
गुरू ने दिया दर्शन मन पंक्षी चहक उठा
सारे भक्त गुरू जी के फूले न समाते है

329

सतगूरू तेरे हो गये हम प्यार मे तेरे खो गये हम

जिन्दगी थी जो अब तक उदास आ गया मुस्कराना

1. हम थे भटके राही पा गये मंजिल को
डूब जाते जग मे पा गये साहिल को
आपके वचनों मे हम पा गये ठिकाना

2. ढो रहे है अब तक भार इस जीवन का
मिल गया है अब तो द्वार सतगुरू जी का
बदल दिया है जीवन गुरू आपका शुकराना

3. जीते जी मर के दुनिया मे रहना सिखाया
सच की शह बता कर प्रभु से हमको मिलाया
भूल कर अब तो गुरू कों न भुलाना

330

सतगुरू सतसंग देता है सतसंग जीवन देता है
जीना उसका जीना है जो गुरू का सतसंग करता है

1. गुरू की बात जो रखना हो तो
गुरू के वचनों पे चलता चल
ज्ञान मिले या भजन मिले
तू नित नित सतसंग करता चल
जो ज्ञान गुरू का लेता है वो हर पल खुश ही रहता है

2. आती है जब याद गुरू की मन पागल हो जाता है
गुरू ने त्याग दिया जीवन पर दिल ये मान न पाता है
गुरू तो हर पल भक्तों के हदय के अंदर रहता है
जीना.....

331

सतगुरू ही सार है जीवन का आधार है
जिसने पाया आतम ज्ञान उसका बेड़ा पार हे

1. इस दुनिया मे खोज के देखा माया के सब बंदे है
स्वारथ के सब साथी देखे तबियत के भी सब बंदे है
अपनी संगति न साथी है पुत्र न रिश्तेदार है

2. झूठे कपट कर माया जोड़ी महल बनाया रहने को
धन दौलत भी खूब कमाया अपना –अपना कहने को
चलता मुट्ठी मार है न कोई ठेकेदार है

3. भोग विषय और खाना पीना पशुओं मे भी होता है
शोर अधिक है पास मे तेरे पाप बीज क्यो बोता है
चाहे तो उद्धार है सतगुरू खेवनहार है

332

सतगुरू खेल रहे है होली अपने गुरू भक्तन के संग–2

1. दुनिया खेल रही हे होली कर कर के हुड़दंग–2
गुरू हमारे होली खेले कर कर के सतसंग
ज्ञान गुलाब मले मुख ऊपर प्रेम का छोड़ के रंग
2. भाव भक्ति की भाँग पिलाकर गावै ताल तरंग
कर्म की कर मे ले पिचकारी मारी विवेक की सरंग
जिसके दिल पर लगे निशाना वह रह जाये दंग
3. शिव के संग पार्वती खेले कृष्ण राधिका संग
सीता संग रघुवर खेले प्रेमी पावे उमंग
लोक और परलोक मे आकर नित्य मिले सतसंग

333

सुख भरण प्रभु नारायण है
दुख हरण प्रभु नारायण है
त्रिलोक पति दाता सुख धाम
स्वीकारो मेरे प्रणाम.....
प्रभु स्वीकारो मेरे प्रणाम

1. मन वाणी मे वो शक्ति कहाँ
जो महिमा तुम्हारी गान करे–2

आगम अगोचर अविकारी प्रभु
निर्लेप हो हर शक्ति से परे–2
हम और तो कुछ भी जाने न
केवल गाते है पावन नाम.... स्वीकारो...

2. आदि मध्य और अंत तुम हीं
और तुम्हीं आत्म अधारे हो–2
हम भक्तों के तुम प्राण प्रभु
इस जीवन के रखवारे हो–2
तुम में जीवे तुम में जन्मे
और अंत करे तुममें विश्राम.... स्वीकरो

3. चरण कमल का ध्यान धरूँ
और प्राण करें सुमिरन तेरा–2
हे दीनानाथ दीनाश्रय प्रभु
भव बन्धन काटो हरि मेरा
शरणागत के श्याम प्रभु
हे नाथ मुझे तुम लेना धाम..... स्वीकारो

334

सारी दुनिया छोड़ के आयो तेरे द्वार माँ–2

आया तेरे द्वारा माँ कर मेरा उद्धार माँ
जग की पालन हार माँ मेरी और निहार माँ

1. मन मेरो चाहे माता करूँ तेरी नौकरी दिल मेरा
चाहे माता करूँ तेरी नौकरी
तेरे चरणों में लागे रात दिन हाजरी
हो रख लो सेवादार माँ रहेगा दावेदार माँ
न कर सोच विचार माँ ना देना माँ

2. जीवन की डोर कर दी तेरे हवाले
मैं हूँ कंठपुतली जैसी मर्जी ऽऽ नचा ले ऽऽऽ
ओ अटका हूँ मझधार माँ आ बन जा पतवार माँ
कर दे बेड़ा पार माँ तू सच्ची सरकार माँ

3. मन मंदिर सूना है माँ कर ले बसेरा
गंदा हूँ मंदा हूँ पर हूँ मैं सेवक तेरा
हो दोनों हाथ पसार माँ सेवक करे पुकार माँ
सब पेकर उपकार माँ, किस्मत दे सवार माँ

335

तर्ज– ये माना मेरी जा मोहब्बत खुदा है

हमको जो यारों गुरूवर न मिलते

जीने का यारों मजा ही न आता
भागों में यारो जीवन खपाते
भक्ति का यारो मजा ही न आता

1. कितने दुखी थे कितने पापी
हम क्या सुनाएं कहानी हमारी
नजर जो बदली गुरू ने हमारी
नजरे बदलने का मजा आ गया

2. भंवर में थी कश्ती तूफा उठ रहे थे
बीच भंवर में डूब रहे थे
गुरू ने संभाली नईया हमारी
किनारे पे आने का मजा आ गया है।

3. राहे न मिलती मंजिल न दिखती
जीने का यारो युक्ति न मिलती
भरने में पेट अपना जीवन बिताते
सेवा का यारों मजा ही न आता

4. गुरूवर है विनती सुनना हमारी
हमको भी देना भक्ति प्यारी
हम भक्तों को इतना ही पाना

चरणों में आने का मजा आ गया है।

336

हरि ओम हरि ओम कहिये

नहीं लगते इसमें रूपइये

1. गुरू जी ने दो नैन दिये है।
   दर्शन करते रहिये, नहीं लगते इसमें.....
2. गुरू जी ने दो कान दिये है
   वाणी सुनते रहिये, नहीं लगते इसमें .....
3. गुरूजी ने एक मुख दिया है
   सबसे प्रेम से बोलिये, नहीं लगते इसमें.....
4. गुरूजी ने दो हाथ दिये है
   सेवा करते रहिए, नहीं लगते इसें....
5. गुरू जी ने दो पैर दिये है
   सतसंग जाते रहिये नहीं लगते इसमें.....
6. गुरू जी ने ये नरतन दिया है
   सबसे मेल से रहिये नहीं लगते इसमें.....

(भाव)

बचपन से जिस घर में मेरा जन्म हुआ उन्हीं संस्कारों से बोलती और सुनती आई एको ओंकार सतिनाम करता पुरूष निरभय निरवैर अकाल मूरत अजूनी साहिब भंग गुरू प्रसादि! बादि सच जुगादि सच है भी सच होसी भी सोच। इन्हीं ऊपर की पंक्तियों ने मेरी भावनाओं को जीने का नया रूप सच अजूँनी

प्रस्तुत है

मेरी हर बसर में अपना रूप दिखाने वाले,
'गुले गुलजार' , 'गुले गुलजार' मेरे,
दिल करे बसा लूँ मुझे हर सांस की तार में।

(1)

इक बिलखिलाती कली को अज्ञात राहों से खींचकर,
अपने असीम प्यार के बंधन में न जानें कब जकड़ा,
मुझे मुस्कराती कली बनाने वाले
'गुले गुलजार' मेरे, 'गुले गुलजार' मेरे।

(2)

तेरे निज ज्ञान से शक्ति ले पिंजरे का पंछी छूटा,
आनन्द भरपूर होकर खुले आकाश में उड़नें लगा,
हृदय में आकाश सी विशालता भरने वाले
गुले गुलजार मेरे, गुले गुलजार मेरे

(3)

इन्द्रियों के जाल से छुड़ा वह आशियाना दिखाया,
जिसकी हरियाली में मेरी दिव्यता दिखी,
जीवन की वीरानगी भगाने वाले गुले गुलजार मेरे गुले गुलजार मेरे।

(4)

जब मैं गुम थी संकल्पों विकल्पों की दुनियों में
तूनें सकारात्मक विचार रूपी जल में वह दर्पण दिखाया।
कीचड़ रूपी जीवन में कमल खिलाने वाले
गुले गुलजार मेरे गुले गुलजार खोरे

(5)

ऊठत सुखीया बैठत सुखीया भौ नहीं लागे दृष्टकार
डगमगाते पैरों में दृढ़ता रूपी घुघरूँ बांध दिये
ऐसा आत्मविश्वास जगाने वाले गुले गुलज़ार मेरे गुले गुलजार मेरे

(6)

ममतामयी माँ की छाया में वचनों का रहस्य जानां
जानकर, वचन मानों–वचन मानों गुनगुनाने लगी,
अपने वचनों ठंडक पहुँचाने वाले गुले गुलजार मेरे गुले गुलजार मेरे।

(7)

हर एकांत की दर्द में अपनी बांहों में थामा,
दृढ़ विश्वास की ढाल बन अपनी पहचान दी,
अपनी व्यापकता प्रगट करने वाले गुले गुलजार मेरे गुले गुलजार मेरे।